

शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी हजरत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरा रजवी जियाई رحمۃ اللہ علیہ के इस्लाही, मुआशरती, समाजी, तिब्बी और अख्लाकी अक्वाले जर्नी (Quotes) का हसीन मज्मूआ

अमीरे अहले सुन्नत की 786 नसीहतें

(सफ़्हात 102)

- मुफ़्तयाने किराम के तअस्सुरात
- मुल्को मिल्लत की बेहतरी के बारे में 4 नसीहतें
- अच्छी सिद्दहत रखने के बारे में 41 नसीहतें
- हर एक के लिये 52 नसीहतें

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)



शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी
ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के इस्लाही, मुआशरती, समाजी, तिब्बी और
अख़्लाकी अक्वाले ज़री (Quotes) का हसीन मज्मूआ

अमीरे अहले सुन्नत की 786 नसीहतें

(सफ़हात 102)

मुअल्लिफ़ : अबू मुहम्मद ताहिर अत्तारी मदनी

पेशकश

अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बा हफ़तावार रिसाला मुतालआ)

नाशिर

मक्तबतुल मदीना

याद दाश्त

(दौराने मुतालाआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** इल्म में तरक्की होगी)

उन्वान	सफ़हा

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
किताब पढ़ने की 10 नियतें	1	ग़ौस पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ کے बारे में 4 नसीहतें	25
पहले इसे पढ़ लीजिये	2	आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के बारे में	
मुफ़्तये अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के तअस्सुरात	5	3 नसीहतें	26
मुफ़्ती फुज़ैल रज़ा क़ादिरि अत्तारी		मीलाद शरीफ़ के बारे में 14 नसीहतें	26
رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के तअस्सुरात	10	मस्जिद के बारे में 8 नसीहतें	28
निगराने शूरा हाजी इमरान अत्तारी के तअस्सुरात	11	इमाम व मुअज़्ज़िन के बारे में 6 नसीहतें	28
हाजी शाहिद अत्तारी के तअस्सुरात	12	वुजू के बारे में 4 नसीहतें	29
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	13	नमाज़ के बारे में 22 नसीहतें	30
बुजुग़ानि दीन के फ़रामीन की अहम्मियत	14	ख़ौफ़े खुदा के बारे में 15 नसीहतें	32
अच्छी नियत के बारे में 4 नसीहतें	15	इख़्लास के बारे में 6 नसीहतें	34
अल्लाह व रसूल के बारे में 15 नसीहतें	15	सब्रो शुक्र के बारे में 25 नसीहतें	34
दुरूदे पाक के बारे में 3 नसीहतें	17	कारोबार के बारे में 5 नसीहतें	37
इस्लाम और शरीअत के बारे में		माल और मालदारों के बारे में 6 नसीहतें	38
26 नसीहतें	17	ज़ालिम व जुल्म के बारे में 5 नसीहतें	38
सहाबए किराम व बुजुग़ानि दीन के		नेकी के बारे में 28 नसीहतें	39
बारे में 12 नसीहतें	19	गुनाहों के बारे में 26 नसीहतें	42
सुन्नतों के बारे में 20 नसीहतें	21	हुस्ने ज़न के बारे में 5 नसीहतें	44
सादाते किराम के बारे में 4 नसीहतें	23	आंखों की हिफ़ाज़त के बारे में	
मक्के मदीने के बारे में 8 नसीहतें	23	4 नसीहतें	45
तरीक़त के बारे में 6 नसीहतें	24	गुफ़्तगू के बारे में 26 नसीहतें	46

मिलन सारी व खुश अख़्लाकी के बारे में 33 नसीहतें	48	रूहानी इलाज के बारे में 8 नसीहतें	76
अपनी इस्लाह के बारे में 24 नसीहतें	52	इलाज व मुआलजे के बारे में 23 नसीहतें	76
दूसरों की इस्लाह के बारे में 9 नसीहतें	54	तिब्बी नुस्खे और टोटके के बारे में 10 नसीहतें	79
उर्दू ज़बान के बारे में 2 नसीहतें	55	खाने पीने और अच्छी सिद्दहत रखने के बारे में 41 नसीहतें	81
मुतालाए और इल्मे दीन के बारे में 23 नसीहतें	55	मेहमान नवाज़ी और दा'वत के बारे में 7 नसीहतें	85
शख़्ख़ियत निखारने के बारे में 15 नसीहतें	57	दा'वते इस्लामी के चैनल के बारे में 3 नसीहतें	86
उलमाए किराम के बारे में 18 नसीहतें	59	मुबल्लिगीन और ना'त ख़्वानों के बारे में 12 नसीहतें	86
तुलबा और असातिज़ए किराम के लिये 11 नसीहतें	61	इन्टरनेट, मोबाइल वगैरा के बारे में 12 नसीहतें	88
हुफ़्फ़ाज़े किराम के बारे में 4 नसीहतें	62	अवामी ग़लत फ़हमियों के बारे में 2 नसीहतें	89
माहे रमज़ान के बारे में 6 नसीहतें	62	सफ़र के बारे में 3 नसीहतें	90
अच्छी सोहबत व दोस्तों के बारे में 12 नसीहतें	63	हर एक के लिये 52 नसीहतें	90
मियां बीवी के लिये 5 नसीहतें	64	दीनी काम करने वाले के बारे में 20 नसीहतें	95
वालिदैन के लिये 42 नसीहतें	65	72 नेक आ'माल के बारे में 6 नसीहतें	97
औलाद के लिये 11 नसीहतें	70	मदनी काफ़िले के बारे में 4 नसीहतें	98
सास बहू के लिये 3 नसीहतें	71	हफ़्तावार इज्तिमाअ के बारे में 8 नसीहतें	99
क़ब्रों आख़िरत के बारे में 20 नसीहतें	71	कारक़र्दगी के बारे में 3 नसीहतें	100
जानवरों के बारे में 4 नसीहतें	73	मदनी मश्वरे के बारे में 5 नसीहतें	100
ईद और क़ुरबानी के बारे में 11 नसीहतें	74		
मुल्को मिल्लत और मुआशरे की बेहतरी के लिए 4 नसीहतें	75		

نَحْنُ دَاوُدُ وَنُصَلِّ وَنُسَلِّمُ عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ

“अमीरे अहले सुन्नत” के दस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 10 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : **“نَبِيَّةُ الْمُؤْمِنِينَ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ : صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** उस के अमल से बेहतर है।” (मजूम क़ैर, 6/185, حديث: 5942)

दो मदनी फूल : **﴿1﴾** आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है। **﴿2﴾** जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ हर बार हम्द व **﴿2﴾** सलात से आगाज़ करूंगा (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई अरबी इबारात पढ़ लेने से दोनों निय्यतों पर अमल हो जाएगा) **﴿3﴾** जहां जहां **अल्लाह** पाक का ज़ाती या सिफ़ाती नामे पाक आएगा वहां “पाक” या “करीम” वगैरा कलिमाते सना पढ़ूंगा और **﴿4﴾** जहां जहां सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कोई भी ज़ाती या सिफ़ाती नामे मुबारक आएगा वहां “صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” पढ़ूंगा **﴿5﴾** अगर कोई बात समझ न आई तो उलमा ए किराम से पूछ लूंगा **﴿6﴾** दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरगीब दिलाऊंगा **﴿7﴾** अच्छी निय्यतों के साथ किताब पढ़ने पर जो सवाब हासिल होगा वोह सारी उम्मत को ईसाल करूंगा **﴿8﴾** इस हदीसे पाक “تَهَادُوا تَحَابُّوا” या'नी एक दूसरे को तोहफ़ा दो आपस में महब्बत बढ़ेगी (موطألام مالك، 2/407، رقم: 1731) पर अमल की निय्यत से (एक या हस्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगा। **﴿9﴾** जिन को दूंगा हत्तल इम्कान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने दिन (मसलन 26 दिन) के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये। **﴿10﴾** किताबत वगैरा में शर्ई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा। (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वगैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना खास मुफ़ीद नहीं होता)

पहले इसे पढ़िये

अल्लाह पाक के नेक बन्दों, औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ के ख़ूब सूरत किरदार और इल्मो हिक्मत भरी हसीन गुफ़्तार दिलों को अपनी तरफ़ खींचने की सलाहियत रखती है। यह नुफ़ूसे कुदसिय्या (या'नी नेक बन्दे) जहां अपने किरदार व अफ़आल से लोगों को गुमराही व बेदीनी से निकाल कर राहे हक़ दिखाते और सुन्नतों का पैकर बनाते हैं वहीं इन के अक़वाल व मल्फूज़ात (या'नी इर्शादात) की लज़ज़त व चाशनी दिलों में घर कर जाती है। अल्लाह पाक के नेक बन्दे, औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ चूँकि अपने आप को लाया'नी (बे फ़ाएदा) अफ़आल व अक़वाल से बचाते, कुरआनो हदीस और जि़क्रो दुरूद से अपनी ज़बान को तर रखते हैं, इन की गुफ़्तगू कुरआनो हदीस और बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ की ता'लीमात का निचोड़ (या'नी खुलासा) होती है। इस वजह से इन हज़रत की गुफ़्तगू पुर असर और पुर मज़ होती है जो दिलों पर गहरा असर करती है। अल्लाह पाक की इन नेक बन्दों पर ख़ास रहमत है कि कोई इन की सोहबत की बरकत से बुलन्द दरजात पर पहुंच जाता है तो कोई इन के कलाम से मुतअस्सिर हो कर आख़िरत की तय्यारी में मसरूफ़ हो जाता है। बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ के कीमती इर्शादात व फ़रामीन से जिन्दगी गुज़ारने के तौर तरीक़े और आदाब मा'लूम होते, नेकियों का शौक़ बढ़ता और गुनाहों से नफ़्त पैदा होती है। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ !** अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी जि़याई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का शुमार भी अल्लाह पाक के उन नेक बन्दों में होता है, मेरा हुस्ने ज़न है कि अल्लाह पाक ने आप को मक़ामे विलायत से नवाज़ा है। आप की नेकी की दा'वत की बरकत से दुन्या भर में जो मदनी इन्क़िलाब आया है वोह अक़ले सलीम रखने वाले पर मख़फ़ी (या'नी छुपा हुआ) नहीं। हज़ारों नौजवान आप

के सुन्नतों भरे बयानात सुन कर गुनाहों की दलदल से निकल कर राहे सुन्नत पर चल पड़े। आप की तहरीरात व तस्नीफ़ात (या'नी कुतुबो रसाइल) ने लाखों इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की जिन्दगियां बदल कर रख दीं, तक़रीबन 42 साल के अन्दर इस हद तक काम्याबी हासिल होना बहुत बड़ी ने'मत से कम नहीं। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ !** कई शराबी, जुवारी, चोर, डाकू, डान्सर, कोमेडियन, बद मआश, हराम रोज़ी कमाने वाले और बे पर्दा रहने वालियां गुनाहों की वादी से निकल कर सुन्नते मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपनाते वाले बन गए। नीज़ येह दा'वते इस्लामी के मदनी मक्सद **“मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है”** के दाई (या'नी दा'वत देने वाले) बन कर नेकी की दा'वत आ़म करने लगे।

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के मदनी मुज़ाकरों, बयानात और दीगर मदनी हल्कों में होने वाली इल्मो हिक्मत भरी गुफ़्तगू के अनमोल मोतियों को एक लड़ी में पिरोने की कोशिश के हसीन मक्सद के तहत चन्द साल क़ब्ल अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे **“हफ़तावार रिसाला मुतालाआ”** में अमीरे अहले सुन्नत के इर्शादात की एक सीरीज़ शुरूअ की गई, ख़्वाहिश थी कि दीगर बुजुगाने दीन **رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم** के अक्वाले ज़र्री की तरह वलिय्ये कामिल अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के इल्मो हिक्मत भरे इर्शादात भी अ़वाम व ख़्वास को दस्त याब हों, चुनान्वे यके बा'द दीगरे (या'नी एक के बा'द एक) तरतीब वार छे रसाइल मुख़्तलिफ़ अवकात में मन्ज़रे आ़म पर आए। अब उस ख़्वाहिश की तक़मील का वक़्त हुवा चाहता है, उन छे अक्सात में मज़ीद चन्द इर्शादाते अमीरे अहले सुन्नत का इज़ाफ़ा कर के उन का मज्मूआ बनाम **“अमीरे अहले सुन्नत की 786 नसीहतें”** अमीरे अहले सुन्नत के 74वें यौमे विलादत (Birth Day) की खुशी के मौक़अ पर 26 रमज़ानुल मुबारक 1445 हिजरी को मन्ज़रे आ़म पर लाया जा रहा है। इस्लामी जिन्दगी गुज़ारने के इन अक्वाले ज़र्री (या'नी सुनहरी

बातों) को इस्लामी, इस्लाही, मुआशरती, तिब्बी, अख़लाकी और समाजी मौजूआत के तहत “इल्यास” के 102 हुरूफ़े अबजद की निस्बत से 102 सफ़हात में पेश किया गया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ! शो'बा हफ़तावार रिसाला मुतालआ के मुख़लिफ़ इस्लामी भाइयों सय्यिद करीमुद्दीन कादिरि मदनी, इमरान अहमद मदनी, बिलाल सईद मदनी, महमूद अली मदनी और ग्राफ़िक्स डीज़ाइनर अरसलान अजमेरी अत्तारी ने इस किताब की तय्यारी में मदद की। इस किताब में जो भी ख़ूबियां हैं वोह अल्लाह पाक की रहमत, उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इनायत, औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ के फ़ैज़ और मेरे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ की बरकात हैं और भूलचूक में होने वाली ख़ामियों में हमारा दख़ल है। अल्लाह करीम इस किताब को हम सब के लिये सदक़ए ज़ारिया और बे हि़साब मग़ि़रत का ज़रीआ बनाए और आशिक़ाने रसूल को इस से फ़ैज़याब होने की सआदत बख़्शे और इन सुनहरे उसूलों पर अमल कर के अपनी ज़िन्दगी को नेकियों में गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्लाह पाक दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल अल मदीनतुल इल्मिय्या और शो'बा हफ़तावार रिसाला मुतालआ को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और इख़्लास व इस्तिक़ामत से अपनी रहमत के साए में ख़ूब ख़िदमते दीन की सआदत नसीब करे।

أَمِينٌ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तालिबे ग़मे मदीना व बकीअ व बे हि़साब मग़ि़रत

अबू मुहम्मद ताहिर अत्तारी मदनी عَفَى عَنْهُ

(शो'बा : हफ़तावार रिसाला मुतालआ)

2 रमज़ानुल मुबारक 1445, 13 मार्च 2024

मुफ़्तये अहले सुन्नत, मुफ़्ती मुहम्मद कासिम अत्तारी कादिरी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के तअस्सुरात

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

नसीहत का अम मा'ना "ख़ैर ख़्वाही" है ख़्वाह कौल की सूरात में हो या अमल की सूरात में। वा'ज, इसी कौली नसीहत की एक सूरात है जिस से मुराद वोह चीज़ है जो इन्सान को पसन्दीदा चीज़ की तरफ़ बुलाए और ख़तरे से बचाए, दिल में नरमी पैदा करे, अच्छे अमल की तरफ़ रागिब करे और बुरे अमल के अन्जाम से डराए।

जिस्मानी सिहहत की ख़राबी में जैसे दवा की ज़रूरत होती है, यूंही दीनी, अख़्लाकी, रूहानी और मुआशरती जिन्दगी की ख़राबी से नजात या हिफ़ाज़त के लिये नसीहत की हाज़त होती है। नसीहतें "या'नी ख़ैर ख़्वाही पर मुश्तमिल बातें" जिन्दगी में बेहतरी लाने के लिये बहुत मुफ़ीद साबित होती हैं। नसीहत की तासीर के लिये नासेह के दिल में शफ़क़तो हमदर्दी का ज़ब्बा होना ज़रूरी है, फिर नसीहत की नौइय्यत और इस के अल्फ़ाज़ व अन्दाज़ पर तासीर का मदार होता है। नसीहत की हाज़त हर किसी को होती है और वोह बन्दा खुश नसीब है जिसे कोई नसीहत करने वाला मुयस्सर हो।

नसीहत ऐसा जीशान काम है कि खुद खुदाए हकीम व ख़बीर ने कुरआने करीम में मुतअद्द मक़ामात पर मुख़लिफ़ अन्दाज़ में बन्दों को नसीहतें फ़रमाई हैं। कुरआने मजीद खुदा का कलाम है जो किताबे हिदायत, सहीफ़ए मौइज़त और मज्मूअए नसीहत है। वैसे तो कुरआने मजीद का एक एक लफ़ज़ नूर से मा'मूर है लेकिन बतौर ख़ास इस में अहम नसीहतों पर मुश्तमिल कलिमाते तथ्यिबात तो इस क़दर ख़ूब सूरात हैं कि अक्ले इन्सानी इन नसाएह के हुस्ने बयान पर कुरबान हो जाती है। कुरआनी नसीहतों के

चन्द नमूने मुलाहज़ा हों। येह बि ऐनिही तरजमा नहीं बल्कि मफ़हूम का बयान है। ❀ हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है। ❀ जो कोई दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया वोह यकीनन काम्याब हो गया। ❀ दुन्या की जिन्दगी धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं। ❀ इन्सान को वोही कुछ मिलेगा जिस की उस ने कोशिश की होगी। ❀ नरमी के साथ गुफ़्तगू करना और दर गुज़र करना उस सदके से कहीं बेहतर है जिस के बा'द दिल आज़ारी हो। ❀ नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ नहीं है। ❀ क्या इन्सान के लिये वोह (सब कुछ) मुयस्सर है जिस की वोह तमन्ना करता है। ❀ दुन्या का साज़ो सामान मा'मूली सी चीज़ है जब कि आख़िरत बहुत अच्छी है उस के लिये जो परहेज़ गार बन जाए। ❀ बेशक हर मुशिकल के साथ आसानी है, बेशक हर मुशिकल के बा'द आसानी है।

नसीहत, सुन्नते अम्बिया भी है, चुनान्चे कुरआने मजीद की आयात से वाज़ेह होता है कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَامُ अपनी क़ौमों को क़ौली व अमली नसीहत और ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते रहे और क़ौम के सफ़ीहाना रदे अमल के बा वुजूद कमाले खुल्क से उन्हें फ़रमाते रहे कि हम तो तुम्हारे नासेह या'नी ख़ैर ख़्वाह हैं। चुनान्चे नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम से फ़रमाया :
أُبَلِّغُكُمْ رَّبِّي وَأَنْصَحُكُمْ । तरजमा : मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचाता हूं और तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करता हूं। (62: الأعراف: 8) और हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ौम से फ़रमाया :
أُبَلِّغُكُمْ رَّبِّي وَأَنْصَحُكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ । तरजमा : मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचाता हूं और मैं तुम्हारे लिये क़ाबिले ए'तिमाद ख़ैर ख़्वाह हूं। (62: الأعراف: 8) और हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ौम से फ़रमाया :
لَقَدْ أَرْسَلْنَاكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُكُمْ وَلَكِنْ لَاتُحِبُّونَ التَّصْحِيحِينَ । तरजमा : ऐ मेरी क़ौम ! बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुंचा दिया और मैं ने तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की लेकिन तुम ख़ैर ख़्वाहों को पसन्द नहीं करते। (62: الأعراف: 8) और येही जुम्ले सय्यिदुना शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम से फ़रमाए। (62: الأعراف: 8)

मौइज़तो नसीहत का येही तरीका हज़ूर ख़ातमुन्नबिख्यीन, सख्यिदुल मुरसलीन, मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत है। अल्लाह तआला ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को हुक़्म फ़रमाया : فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا । तरजमा : पस तुम उन से चशम पोशी करते रहो और उन्हें समझाते रहो और उन के बारे में उन से पुर असर कलाम करते रहो । (प 5, النساء: 63)

सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नसीहतों के चन्द बेश कीमत नमूने मुलाहज़ा करें। फ़रमाया : “तुम जहां कहीं भी रहो अल्लाह से डरो ! ख़ता हो जाने के बा’द नेकी कर लो कि वोह बुराई को मिटा देती है और लोगों के साथ हुस्ने अख़्लाक से पेश आओ !” ❀ बे फ़ाएदा बात को तर्क कर देना आदमी के इस्लाम का हुस्न है। ❀ दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है। ❀ जिस से मश्वरा लिया जाए वोह अमानत दार है। ❀ तमाम आ’माल में से बेहतरीन अमल वोह है जो नफ़अ मन्द हो। ❀ बद तरीन अन्धा पन, दिल का अन्धा पन होता है। ❀ ऊपर वाला (या’नी देने वाला) हाथ, नीचे वाले हाथ से बेहतर होता है। ❀ वोह माल जो क़लील हो मगर ज़रूरत पूरी करे वोह उस कसीर माल से बेहतर है जो ग़ाफ़िल कर दे। ❀ बेहतरीन ग़नी होना, दिल का ग़नी होना है। ❀ बेहतरीन तोशए सफ़रे आख़िरत, तक्वा है। ❀ सआदत मन्द वोह है जो दूसरों से नसीहत हासिल कर ले। ❀ जो शख़्स मुआफ़ करता है उसे भी मुआफ़ कर दिया जाता है। ❀ उस शख़्स की हम नशीनी में कोई फ़ाएदा नहीं कि तू उस के बारे में ख़ैर की तमन्ना करे और वोह तुम्हें नुक्सान पहुंचाने का सोचे। ❀ जो अपनी क़द्रो हैसियत पहचानता है वोह हलाक नहीं होता।

अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के इलावा सालिहीन की नसीहतें भी क़ुरआनो हदीस और कुतुबे सीरत व सवानेह में मौजूद हैं। इस हवाले से मशहूर तरीन नाम हज़रते लुक्मान رَضِيَ اللهُ عَنْهُ का है। आप अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा बन्दे थे। क़ुरआने मजीद ने हज़रते लुक्मान رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की उन

नसीहतों का बयान फ़रमाया है जो उन्होंने ने अपने बेटे को समझाते हुए बयान फ़रमाई। उन नसीहतों का खुलासा कुछ इस तरह है कि ऐ मेरे बेटे! किसी शै या शख़्स को अल्लाह का शरीक न करार देना, बेशक शिर्क यकीनन बड़ा जुल्म है और छोटी से छोटी बुराई से भी बचना, क्यूं कि बुराई अगर राई के दाने जैसी छोटी सी भी होगी और वोह किसी चट्टान, आस्मान, ज़मीन, ग़ार में कहीं भी हो, उसे क़ियामत के दिन अल्लाह तअ़ाला बन्दे के सामने ले आएगा और नमाज़ काइम रखना, अच्छाई का हुक्म देना, बुराई से मन्अ करना और मुसीबत पर सब्र करना, बेशक येह बहुत हिम्मत वाले कामों में से है। यूंही मगरूराना और मुतकब्बिराना रवय्या इख़्तियार न करना, जैसे लोगों से टेढ़े मुंह बात न करना, चीख़ चिल्ला कर बोलने की बजाए मुनासिब आवाज़ में कलाम करना, क्यूं कि चीख़ने की आवाज़ बुरी आवाज़ है और सब से बुरी, गधे की आवाज़ है, जो चीख़ चीख़ कर रेंकता है। नीज़ अपने चलने में दरमियानी चाल से चलना, अकड़ कर न चलना, क्यूं कि अल्लाह तअ़ाला को अकड़ने वाला, तकब्बुर करने वाला बन्दा पसन्द नहीं।

(खुलासा अज़ सूए लुक़्मान)

उम्मते मुहम्मदिय्यह عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ में सहाबए किराम كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ और खुसूसन मौला अली शरे खुदा رِضْوَانُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की ईमान अफ़ोज़, दिल नशीन नसीहतें ब कसरत मिलती हैं। अइम्माए मुज्ताहिदीन में इमामे आ'ज़म, सय्यिदुना इमाम अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ की नसीहतों का मज्मूआ मौजूद है। इसी तरह मुरत्तब अन्दाज़ में इमाम हारिस बिन असद मुहासिबी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ की “रिसालतुल मुस्तार्शिदीन” इब्ने अताउल्लाह अल इस्कन्दरी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ की “अल हिकमुल अताइय्यह” और इमाम अब्दुल्लाह अन्सारी हरवी की किताब “मनाज़िलुस्साइरीन” वगैरहा नसीहतों पर मुश्तमिल किताबों ही की सूरतें हैं। यूंही इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ की नसीहतों पर मुश्तमिल किताब “अय्युहल वलद” निहायत मशहूर है। हुज़ूर

महबूबे सुब्हानी, कुल्बे रब्बानी, गौसुस्सकलैन, सय्यिदुना शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी قُدَسَ سِرُّهُ النَّوْزَانِي की क़ल्ब व रूह में इन्क़िलाब बरपा कर देने वाली नसीहतों के शानदार मज्मूए “अल फ़त्हुर्रब्बानी” और “फुतूहल ग़ैब” की तासीर का आलम तो यह है कि पथर दिलों को नर्म कर दे।

नसीहत आमोज़ बातों पर किताबें लिखना या बुजुर्गाने दीन की नसीहतें जम्अ करना सलफ़ सालिहीन से चला आ रहा है। हर दौर के उलमाए रब्बानिय्यीन ने इस पर क़लम उठाया और नसीहत भरी बातों को लिख कर अ़वाम के सामने रखा ताकि इसे पढ़ कर उन के कुलूब नेक आ'माल और अच्छाइयों की तरफ़ माइल हों। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! इसी सिल्लिसले की एक कड़ी यह किताब “अमीरे अहले सुन्नत की 786 नसीहतें” है जो सय्यिदी व मुर्शिदी, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी ज़ियाई عَالِيَهُ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ की उन नसीहतों पर मुश्तमिल है जो आप ने मुख़्तलिफ़ मजालिस में इर्शाद फ़रमाई। मुर्शिदे करीम का वुजूद, इल्मो अमल का पैकर, इख़्लास व अख़्लाक का मुजस्समा, जौके इबादत का हामिल, हुस्ने अमल का नमूना, इत्तिबाए सुन्नत की तस्वीर और इस्लाहे उम्मत के जज़्बे से सरशार है। आप का दिल शफ़क़तो महब्बत और ख़ैर ख़्वाही से लबरेज है। आप के क़ल्बे सलीम से बुलन्द और लिसाने फ़सीह से अदा होने वाले कलिमाते बलाग़त ने बिला मुबालगा लाखों लोगों के दिलों में इन्क़िलाब बरपा कर दिया है। इन कलिमाते हसना पर मुश्तमिल नसीहतों का मज्मूआ आप के हाथों में मौजूद है। मुतालआ करें, फ़ैज़ पाएं, दिलों में जगह दें और दूसरों तक पहुंचा कर सदक़ए जारिया का ज़रीआ बनें। **अल्लाह** तआला अमीरे अहले सुन्नत عَالِيَهُ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ को सिहहतो आफ़ियत की तवील ज़िन्दगी अता फ़रमाए और आप का फ़ैज़ान पूरी दुन्या में आम फ़रमाए। أَمِينُ بِحَاوِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मुहम्मद कासिम कादरी

14 मार्च 2024 ईसवी

मा'श्जात

हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती फुज़ैल रज़ा क़ादिरि अत्तारी رَضْوَانُ اللّٰهِ عَلَيْهِ के तअस्सुरात

चन्द जगहों से येह रिसाला देखा, हिक्मतो नसीहत के मदनी फूलों का गुलदस्ता है। अक्लमन्द के लिये तो इशारा काफ़ी होता है, गाफ़िलीन के लिये तम्बीहात की हाजत होती है, इस रिसाले में किब्ला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में ऐसी उम्दा नसीहतें की हैं जो अक्लमन्दों के लिये इशारा भी है और मुझ जैसे गाफ़िलों के लिये तम्बीह का पूरा सामान है। इतना ज़रूर कहूंगा कि पढ़ कर गुज़र जाने वाले अक्वाल नहीं हैं, जिन्दगी संवर सकती है, आख़िरत में नजात मिल सकती है, क़द्र करने वाले को जो अमल की सच्ची निय्यत करे, समझे और अमल की मशक़ करे तो इस में से चन्द बातें ही इस्लाह के लिये काफ़ी हैं। बुजुर्ग़ फ़रमाया करते हैं : पहले आटे में नमक बराबर इल्मे नाफ़ेअ हासिल कर के आटे की मिक्दार या'नी ख़ूब ज़ियादा अमल करते थे, अब आटे में नमक बराबर भी थोड़ा अमल करने वाले नहीं मिलते तो येह सरमाया है, ज़ख़ीरा है और तजरिबात का निचोड़ है, इस में इल्मे नाफ़ेअ की ख़ूब सुरत बातें और मश्वरे हैं। ज़रूरत अमल करने और **अल्लाह** पाक से तौफ़ीक़ त़लब करने की है। वोही मालिके हकीकी और मुस्तअाने हकीकी (हकीकी मददगार) है, रसूले मक्बूल, बीबी आमिना के फूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और इन की आले पाक व अस्हाबे किराम के सदके **अल्लाह** पाक फ़ज़लो करम फ़रमाए, तौफ़ीक़ दे, इज़ज़त की जिन्दगी और इज़ज़त की मौत दे। वोह पाक है पाक चीज़ें क़बूल फ़रमाता है, हमें सुथरी पाकीजा जिन्दगी अता फ़रमाए, ख़ातिमा बिलख़ैर ईमानो आफ़ियत के साथ अता फ़रमाए।

आजिज़ हकीर फ़कीर फुज़ैल रज़ा क़ादिरि अत्तारी

26 शा'बान शरीफ़ 1445, 7 मार्च 2024 (शबे जुमुआ)

निगराने शूरा हाजी इमरान अत्तारी رَبِّكَ عَلَيْهِ السَّلَامُ के तअस्सुरात

- ﴿1﴾ शरीअत आप के पीछे नहीं चलेगी, आप खुद शरीअत के पीछे चलिये ।
- ﴿2﴾ “ईद मुबारक” दुआ है, इस का मतलब है ईद आप के लिये बरकत वाली हो ।
- ﴿3﴾ इम्तिहान जितना सख्त होता है, सनद भी उतनी आ'ला मिलती है । इस तरह के “786 नसीहत भरे इर्शादात” जो दुन्या व आखिरत में बेहतरीन काम आ सकते हैं । येह नसीहत भरे इर्शादात शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के बयान किये हुए आप के सामने मौजूद हैं । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ की नसीहत भरी बातें इतनी पुर असर होती हैं कि हम देखते हैं कि लाखों लाख अशिकाने रसूल आप के नसीहत भरे मदनी फूल सुन कर अपनी ज़िन्दगियों में बेहतरीन तब्दीली लाने में काम्याब हुए हैं । बूढ़ा हो या जवान, छोटा हो या बड़ा, मर्द हो या औरत, प्रोफ़ेशनल हो या नोन प्रोफ़ेशनल, मुलाज़िम हो या सेठ, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! हर एक के लिये इस किताब में बेहतरीन नसीहतें मिलेंगी । मेरी सब से दरख्वास्त है इसे पढ़ें बल्कि तक्सीम करें, अपने घर में पढ़ने की तरगीब दिलाएं, अपने दफ़्तर में गिफ़्ट की सूरत में पेश करें, ऑफ़िस में अपनी टेबल पर रखें । लोगों की आमदो रफ़्त वाले मक़ामात, वेरिंग रूमज़ वग़ैरा में रखें । येह **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे, वलिय्ये कामिल के इर्शादात हैं, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ । येह नसीहतें तासीर का तीर बन कर दिल में पैवस्त होंगे और दिल की दुन्या बदल जाएगी । اِنْ شَاءَ اللّٰهُ ।

अबू रजब हाजी शाहिद अत्तारी رَجَبُ الْعَالِي के तअस्सुरात

يَهْدِيكُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ! الْحَمْدُ لِلَّهِ ! الْوَسْلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ،
 चीदा पढ़ा है, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمِ मुकम्मल पढ़ूंगा। जो पढ़ेगा, अल्लाह व रसूल
 عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महबूबत का दर्स मिलेगा, इस्लाम व शरीअत पर
 अमल करने का जज्बा मिलेगा, अल्लाह पाक चाहेगा तो सहाबए किराम
 عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ और बुजुगाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ की नसीहतों और सुन्नत पर अमल
 करने की सआदतें नसीब होंगी। مَا شَاءَ اللَّهُ ! अक्वाले अमीरे अहले सुन्नत
 जिक्रे मक्का व मदीना से मालामाल हैं। अल्लाह पाक
 चाहेगा तो ज़ाहीरो बातिन, शरीअतो तरीक़त की तरबियत, गौसो रज़ा की
 अक़ीदत, मीलाद मनाने वालों की तरबियत, मस्जिद के आदाब, इमाम व
 मुअज़्ज़िन की अहम्मियत, नमाज़ की इफ़ादियत, ख़ौफ़े खुदा, इख़्लास,
 सब्रो शुक्र, नेकी की दा'वत, गुनाहों का अन्जामे बद, गुफ़्तगू की एहतियातें,
 दीनो दुन्या की तरबियत, देखने, सुनने, बोलने के तअल्लुक़ से ख़ूब
 तरबियत होगी। إِنَّ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمِ अल्लाह पाक इस रिसाले को बग़ौर, खुलूस
 और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ पढ़ने की और फिर अमल करने और
 दूसरों तक पहुंचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अमीरे अहले सुन्नत
 دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का इक्बाल बुलन्द हो। अमीरे अहले सुन्नत के इल्मो अमल
 में, सिहहत, जान, इज्जतो आबरू में और और और मज़ीद बरकतें, बरकतें,
 बरकतें, बरकतें, हों और अल्लाह पाक इन का साया अफ़ियत के साथ
 हमारे सरों पर दराज़ फ़रमाए और हमें इन का मुतीअो फ़रमां बरदार रखे।

أَمِينٌ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

25 शा'बान शरीफ़ 1445, 7 मार्च 2024 (जुमे'रात)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّْنَ
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अमीरे अहले सुन्नत की 786 नसीहतें

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह पाक ! जो कोई 102 सफ़हात की किताब : “अमीरे अहले सुन्नत की 786 नसीहतें” पढ़ या सुन ले उसे दुन्या व आख़िरत की बरकतों से मालामाल फ़रमा, उस की अहले ख़ाना समेत बिला हि़साबो किताब मग़िफ़रत फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पडोस नसीब फ़रमा ।

أَمِينَ بِحَاجَةِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बेशक अल्लाह पाक ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक की आवाज़ें सुनने की ताक़त दी है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है, कहता है : “फुलां बिन फुलां ने आप पर इस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ा है ।” (مسند بزار، 4/255، حديث: 1425)

سُبْحٰنَ اللّٰهِ ! दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर बख़्त वर है कि उस का नाम मअ़ वलदिय्यत बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में पेश किया जाता है, यहां येह नुक्ता भी इन्तिहाई ईमान अफ़रोज़ है कि क़ब्रे मुनव्वर पर हाज़िर फ़िरिश्ते को इस क़दर ज़ियादा कुव्वते समाअत दी गई है कि वोह दुन्या के कोने कोने में एक ही वक़्त के अन्दर दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले लाखों मुसल्मानों की इन्तिहाई धीमी आवाज़ भी सुन लेता है । जब ख़ादिमे दरबार की कुव्वते समाअत (या'नी सुनने की ताक़त) का येह हाल है तो सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार, महबूबे परवर्दगार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की

क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने गुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फ़रियाद सुन कर बि इज़िल्लाह (या'नी अल्लाह की इजाज़त से) इन की इमदादें फ़रमाएंगे !

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद में कुरबां इस अदाए दस्त गीरी पर मेरे आका मदद को आ गए जब भी पुकारा या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمُ के फ़रामीन की अहम्मियत

हज़रते शैख़ अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मुरीद को शैख़ के सामने (अपना इल्म झाड़ने की बजाए) येह तसव्वुर करना चाहिये कि मैं किसी समुन्दर के कनारे बैठा हुवा अपने हिस्से के रिज़क़ का इन्तिज़ार कर रहा हूं लिहाज़ा वोह पूरी तवज्जोह से शैख़ की गुफ़्तगू सुने तो यकीनन उसे फ़ैज़ नसीब होगा ।

(الابريز، 2/137)

आरिफ़ बिल्लाह हज़रते इमाम अब्दुल वहहाब शा'रानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : ऐ बेटे ! हर उस बात को जो तू ने अपने मुर्शिद से सुनी, उस की ख़ूब हिफ़ाज़त कर अगर्चे उस बात को सुनने के वक़्त तू उस के फ़ाएदे को न समझे ।

(आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 64)

शैख़ हज़रत मुह्युद्दीन इब्ने अरबी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने मुर्शिद की महबूबत रखने वालों की एक ख़ूबी येह भी बयान फ़रमाई है कि वोह मुरीद महबूब की गुफ़्तगू और नाम मुबारक से राहत पाने वाला हो ।

(फुतूहाते मक्किय्या, बाब नम्बर 178)

हज़रते बाबा बुल्लहे शाह رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के वालिदे मोहतरम फ़रमाते हैं : बेटा ! बुजुर्गों की बारगाह में निहायत अदबो एहतिराम और अक़ीदत के साथ हाज़िर होना चाहिये, दिल को तकब्बुर और गुरूर की आलाइश से पाक करना चाहिये, पीरो मुर्शिद जो कुछ इर्शाद फ़रमाएं उसे ग़ौर से सुन कर अपने दिल में जगह देना और सामाने हयात समझते हुए उस पर अमल पैरा हो जाना ।

(सवानेहे हयात हज़रत बाबा बुल्लहे शाह, स. 48 ब तसर्फुफ़)

कितनी प्यारी मीठी मीठी गुफ्तगू अत्तार की और है किरदार कितना पारसा अत्तार का

(मनाक़िबे अत्तार, स. 27)

अच्छी निय्यत के बारे में 4 नसीहतें

﴿1﴾ मुसलमानों को अच्छा मशवरा देना या जाइज़ सिफ़रिश कर देना भी मुसलमान की हाजत (ज़रूरत) पूरी करने में शामिल है। अच्छी निय्यत की सूरत में कारे सवाब (सवाब का काम) भी है। (10 जुमादल ऊला 1437, 19 फ़रवरी 2016)

﴿2﴾ अच्छी निय्यत हो तो किसी के दीनी नुक़सान पर दिल जलाना कारे सवाब है। (5 रबीज़ल आख़िर 1436, 25 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿3﴾ हज़ारों अच्छे काम, सवाब की निय्यत न करने की वजह से महज़ मुबाह होते हैं (या'नी वोह कारे सवाब नहीं बनते)।

(15 जुमादल उख़्रा 1436, 4 एप्रिल 2015)

﴿4﴾ अच्छी निय्यत से मुआफ़ करना कारे सवाब है, मुआफ़ करने का एक दुन्यवी फ़ाएदा येह भी हो सकता है कि जिस को मुआफ़ किया जाए उस के दिल से मुआफ़ करने वाले का बुज़ो कीना (दुश्मनी) निकल जाए।

(21 मुहर्रम शरीफ़ 1436)

अल्लाह पाक और उस के आख़िरी नबी ﷺ के बारे में 15 नसीहतें

﴿1﴾ अल्लाह करीम के आख़िरी नबी ﷺ की उम्मत में पैदा होना “अनमोल ने'मत” है। (6 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 27 जूलाई 2020)

﴿2﴾ जो अल्लाह पाक और उस के आख़िरी नबी ﷺ की फ़रमां बरदारी में लगा रहता है, दुन्या उस की ख़िदमत में लगी रहती है।

(6 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 27 जूलाई 2020)

﴿3﴾ लज़्ज़ते इश्के रसूल ला ज़वाल दौलत है।

(16 रबीज़ल आख़िर 1436, 5 फ़रवरी 2015)

﴿4﴾ अपने दिल में इश्के रसूल का चराग़ जलाइये, दुन्या व आखिरत में काम्याबी होगी । (2 रबीउल आखिर 1436, 22 जनवरी 2015)

﴿5﴾ काम्याब होना चाहते हो तो दिलों में इश्के मुस्तफ़ा की शम्अ फ़रोज़ां कर लो । (11 रबीउल अब्वल 1436, 2 जनवरी 2015)

﴿6﴾ मुझे अरबों से महबूबत है क्यूं कि मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अरबी थे । (20 शा'बान शरीफ़ 1437, 28 मई 2016)

﴿7﴾ सब से आ'ला कुरसी "गुलामिये मुस्तफ़ा" की कुरसी है । (11 रबीउल अब्वल 1443)

﴿8﴾ गुलामिये मुस्तफ़ा में मिलने वाली हुकूमत जिस्मों पर नहीं बल्कि दिलों पर होती है । (19 ज़ी का'द शरीफ़ 1443, 19 जून 2022)

﴿9﴾ गुलामिये रसूल की कुरसी मिल जाए तो फिर किसी कुरसी (या'नी दुन्यावी ओहदे या मन्सब) की ज़रूरत नहीं । (27 ज़ी का'द शरीफ़ 1443, 28 जून 2022)

﴿10﴾ नबिय्ये आखिरुज्जमां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ, सहाबए किराम, अहले बैते अत्हार और औलियाए किराम رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की गुलामी में दर अस्ल आज़ादी है । (13 शव्वाल शरीफ़ 1435)

﴿11﴾ आप दरे मुस्तफ़ा के असीर (या'नी कैदी) बन जाएं तो बिगैर दौलत के अमीर हो जाएंगे और اِنْ شَاءَ اللهُ आप को सुकूने क़ल्ब की दौलत भी मिलेगी । (3 रबीउल आखिर 1436)

﴿12﴾ सरमायए इश्क़ पाने के लिये इश्के इलाही और इश्के रसूल पर मन्बी हिकायात व मज़ामीन पढ़ने चाहिएं । (4 ज़ी का'द शरीफ़ 1435)

﴿13﴾ गुनाहों की वजह से दिल भी मैला हो जाता है, तिलावते कुरआन करने, मौत को याद करने, अल्लाह पाक के ख़ौफ़ और इश्के मुस्तफ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) में रोने से दिल की सफ़ाई होती है ।

(20 रमज़ान शरीफ़ 1437, 26 जून 2016 बा'दे अस्स)

﴿14﴾ बारगाहे रिसालत में दो जहां की भलाइयों और मग़िफ़रत का सुवाल करना चाहिये । (13 रबीउल अब्वल 1437, 25 दिसम्बर 2015)

﴿15﴾ अल्लाह पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में जो अच्छा है, हक़ीक़त में वोही अच्छा है ।

(7 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 28 जूलाई 2020)

दुरूदे पाक के बारे में 3 नसीहतें

﴿1﴾ “दुरूदे तुनज्जीना” हाज़तों के पूरा होने के लिये मुज़रब है ।

(19 रबीउल आख़िर 1436, 8 फ़रवरी 2015)

﴿2﴾ दुरूद शरीफ़ आ'माल को पाक करने वाला है ।

(1 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 15 सितम्बर 2015)

﴿3﴾ अगर आप बारगाहे रिसालत में मुक़रब होना चाहते हैं तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इताअत, सुन्नतों पर ख़ूब अमल और दुरूद शरीफ़ की कसरत कीजिये, إِنَّ شَاءَ اللهُ इस की बरकत से नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कुर्ब मिल जाएगा ।

(2 मुह्रम शरीफ़ 1441)

इस्लाम और शरीअत के बारे में 26 नसीहतें

﴿1﴾ शरीअत आप के पीछे नहीं चलेगी, (आप) खुद शरीअत के पीछे चलिये ।

(10 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 31 जूलाई 2020)

﴿2﴾ मुसल्मान हर मुआमला शरीअत के मुताबिक़ करने का पाबन्द है ।

(6 शव्वाल शरीफ़ 1435)

﴿3﴾ इस्लाम अपने मुसल्मान भाइयों से हुस्ने ज़न रखने की ता'लीम देता है ।

(3 रबीउल आख़िर 1438)

﴿4﴾ हमें दुन्यावी भलाइयां हासिल करने के लिये भी वोही काम करना चाहिये जो ऐन शरीअत के मुताबिक़ हो ।

(4 मुह्रम शरीफ़ 1436)

﴿5﴾ जो शरीअत और तरीक़त को अलग अलग कहे हमें उस से अलग रहना है ।

(19 ज़ी का'द शरीफ़ 1443, 19 जून 2022)

«6» शादी में भी शरीअत के अहक़ाम ही की पाबन्दी की जाए। ग़ैर शरई रूसूमात में रिश्तेदारों की बात न मानी जाए, रिश्तेदार न जन्नत में दाख़िल कर सकते हैं न दोज़ख़ में डाल सकते हैं। (5 रबीउल आख़िर 1436, 25 जनवरी 2015 खुसूसी)

«7» हमें शरीअत पर अमल करने के लिये हुस्सास तबीअत बनानी होगी। (15 जुमादल उख़ा 1436, 4 एप्रिल 2015)

«8» शरीअत हमारा मे'यार है, शरीअत ने जिस को जाइज़ कहा वोह जाइज़ और जिसे ना जाइज़ कहा वोह ना जाइज़ है।

(10 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 24 सितम्बर 2015)

«9» दीने इस्लाम फ़ितना व फ़साद की हौसला शिकनी और प्यार, अम्न और भाईचारे की हौसला अफ़ज़ाई करता है। (5 मुहर्म्म शरीफ़ 1441)

«10» इस्लाम अम्न और राहत का पैग़ाम देता है।

(17 शव्वाल शरीफ़ 1435, 14 अगस्त 2014)

«11» मुसल्मान जहां भी हों, इस्लाम के उसूलों के पाबन्द हैं।

(5 रबीउल अब्वल 1436, 27 दिसम्बर 2014)

«12» अख़बार और मीडिया वालों को इस्लाम से नफ़रत दिलाने वाला कोई काम नहीं करना चाहिये। (19 रबीउल आख़िर 1436, 8 फ़रवरी 2015)

«13» इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने वाला या इस्लाम के ख़िलाफ़ बातें करने वाला शैतान है। (15 रमज़ान शरीफ़ 1436, 3 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

«14» इस्लाम कुरबानियों का मज्मूअ है, दीने इस्लाम पर अमल करने और इस की इशाअत (तब्लीग़) के लिये कुरबानी देना पड़ती है।

(25 रमज़ान शरीफ़ 1437, 30 जून 2016 बा'दे तरावीह)

«15» मुसल्मान अक्ल के नहीं दीने इस्लाम के पाबन्द हैं।

(10 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 31 जूलाई 2020)

«16» हम अक्ल के नहीं खुदा के बन्दे हैं। (10 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 31 जूलाई 2020)

﴿17﴾ वोही अक्लमन्द है जिस की समझ में “दीन” आ जाए ।

(10 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 31 जूलाई 2020)

﴿18﴾ वोही अक्लमन्द काम्याब है जिस ने अपनी अक्ल को **अल्लाह** व रसूल **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की इताअत में इस्ति'माल किया । (15 रमज़ान शरीफ़ 1437)

﴿19﴾ शर्ई मुआमलात में अपनी अट्कल (या'नी अन्दाजे) से किसी चीज़ के जाइज़ या ना जाइज़ होने का हुक्म नहीं लगाना चाहिये । (9 मुहर्रम शरीफ़ 1437)

﴿20﴾ किसी को अच्छे अक्लीदे और अच्छे आ'माल की तौफीक़ मिलना इस बात की अलामत है कि रब्बे करीम उस से महब्बत करता है ।

(5 रबीउल अव्वल 1438)

﴿21﴾ बन्दे की सब से बड़ी ख़ूबी ईमानदार (या'नी मुसल्मान) होना है ।

(24 ज़िल हज़ शरीफ़ 1443, 23 जूलाई 2022)

﴿22﴾ मुसल्मान का अन्दाज़ कहीं भी बद अख़लाकी वाला नहीं होना चाहिये ।

(6 मुहर्रम शरीफ़ 1444, 4 अगस्त 2022)

﴿23﴾ अपने अन्दर दीनी दर्द पैदा करने के लिये प्यारे आका **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की दीने इस्लाम के लिये कुरबानियों का मुतालआ कीजिये ।

(19 शव्वाल शरीफ़ 1440)

﴿24﴾ जिसे दीन के मुआमले में सताया जाए उसे चाहिये कि सरकार **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को याद कर लिया करे ।

(28 ज़ी का'द शरीफ़ 1443, 28 जून 2022)

﴿25﴾ दीन पर अमल करने से वोह इज़्ज़त मिलती है कि वुज़रा और सद्र भी रश्क करते होंगे ।

(12 रबीउल अव्वल 1436, 3 जनवरी 2015)

﴿26﴾ आप बूढ़े हों या जवान, हर उम्र में इस्लाम की खिदमत की कोशिश करें ।

(2 रमज़ान शरीफ़ 1436, 19 जून 2015 बा'दे ज़ोहर)

सहाबए किराम और बुजुर्गाने दीन के बारे में 12 नसीहतें

﴿1﴾ हज़रते बीबी आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا की शान, सितारों और मिट्टी के ज़रों (की ता'दाद) से ज़ियादा है। (16 सफ़र शरीफ़ 1436, 6 दिसम्बर 2014)

﴿2﴾ बुजुर्गों की खिदमत ज़रूर रंग लाती है।

(23 रमज़ान शरीफ़ 1437, 28 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿3﴾ बुजुर्गों से निस्बत रखने वाली हर शै "तबर्क" है।

(16 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 11 अक्टूबर 2014)

﴿4﴾ जो चीज़ बुजुर्गों से मन्सूब हो जाए उस का अदब करना कारे सवाब (सवाब का काम) है। (1 जुमादल ऊला 1436, 20 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿5﴾ औलियाए किराम رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِم का कुर्ब हर सूरत में मुफ़ीद है।

(6 रबीज़ल आख़िर 1437, 16 जनवरी 2016)

﴿6﴾ औलियाए किराम के मज़ारात व गुम्बद बनाने का मक्सद येह है कि लोग उन की तरफ़ रुजूअ करें, फ़ैज़ उठाएं और बरकत पाएं।

(10 रबीज़ल आख़िर 1437, 20 जनवरी 2016)

﴿7﴾ बुजुर्गाने दीन के मज़ारात पर फ़ैज़ हासिल करने के लिये जाना चाहिये और (दुन्या व आख़िरत की भलाई पाने के लिये) उन के नक्शे क़दम पर चलना चाहिये।

(3 मुहर्रम शरीफ़ 1441)

﴿8﴾ उर्स मनाने की रूह येह है कि जिन का उर्स मना रहे हैं उन की सीरत पर भी अमल करें।

(5 रबीज़ल आख़िर 1436, 25 जनवरी 2015)

﴿9﴾ बुजुर्गाने दीन का फ़ैज़ हासिल करना चाहते हैं तो इन की सीरत पर अमल करें, إِنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيم इतना फ़ैज़ मिलेगा कि दूसरों को तक्सीम करेंगे।

(8 रबीज़ल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015)

﴿10﴾ बुजुर्गाने दीन رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ के वाक़िआत सुन कर सिर्फ़ سُبْحَانَ اللهِ न कहा जाए बल्कि उन की सीरत पर अमल करने की कोशिश भी की जाए।

(5 जुमादल उख़्रा 1438)

﴿11﴾ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र बरकत वाला महीना है, इस में बड़े बड़े औलियाए किराम के आ'रास हैं। (15 सफ़र शरीफ़ 1437, 28 नवम्बर 2015)

﴿12﴾ बुजुर्गी का तअल्लुक इल्म व अक्ल से होता है, जवानी और बुढ़ापे से नहीं। (8 रजब शरीफ़ 1437)

सुन्नतों के बारे में 20 नसीहतें

﴿1﴾ सुन्नत में अज़मत है। (10 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 5 अक्टूबर 2014)

﴿2﴾ मिस्वाक को बे अदबी से बचाते हुए इस का एहतिराम कीजिये कि येह सुन्नत अदा करने का आला है। (30 रबीउल अब्वल 1438)

﴿3﴾ मैं लड़कपन से मिस्वाक इस्ति'माल करता था, इसे हासिल करने के लिये कोशिश किया करता था। दा'वते इस्लामी के आगाज़ से पहले अपने कुरते में मिस्वाक के लिये जेब बनाता था। (26 सफ़र शरीफ़ 1438, 26 नवम्बर 2016)

﴿4﴾ तहबन्द या पाजामे की तरह जुब्बा भी टख़्नों के ऊपर होना चाहिये। (2 जुमादल उख़्रा 1437, 12 मार्च 2016)

﴿5﴾ दाढ़ी शरीफ़ की सुन्नत बद अख़्लाकियों और गालियों वगैरा कई तरह की बुराइयों से बचाती है। (10 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 31 जूलाई 2020)

﴿6﴾ दाढ़ी और इमामा ऐसी ने'मतें हैं जो इन्सान में मौजूद बुराइयां दूर करती हैं। (21 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 15 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿7﴾ इमामा शरीफ़ बांधने वाला इस की बरकत से गुनाहों से बाज़ रहता है और उस के किरदार में भी निखार आ जाता है। (21 सफ़र शरीफ़ 1436)

﴿8﴾ तमाम दा'वते इस्लामी वाले इमामा बांधने लगें तो मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाए। जो दा'वते इस्लामी वाले हो कर इमामा नहीं बांधते वोह दा'वते इस्लामी के नफ़अ में नुक़सान पहुंचाते हैं। (30 शबवाल शरीफ़ 1436, 15 अगस्त 2015)

﴿9﴾ अब्रू या'नी भंवों पर तेल लगाना सुन्नत है और इस से सर दर्द भी दूर होता है। (25 जुमादल उख़्रा 1438)

﴿10﴾ जिसे (अमल का) जज़्बा मिल जाए वोह दुन्या के किसी भी कोने में चला जाए सुन्नतें नहीं छोड़ता । (1 ज़िल हज़ शरीफ़ 1443, 1 जूलाई 2022)

﴿11﴾ मरीज़ की इयादत को जाइये कि सुन्नत है, मगर इतना ज़ियादा न रुकिये कि मरीज़ परेशान हो जाए । (11 रमज़ान शरीफ़ 1443, 13 एप्रिल 2022)

﴿12﴾ पुकारने के लिये पहले हमारे हां “मदीना” कहना राइज था ऐसा करना शर्अन ना जाइज़ नहीं लेकिन सुन्नत येह है कि नाम ले कर पुकारा जाए या कुन्यत से पुकारे या कहे “ऐ भाई” ।

(28 ज़ी का’द शरीफ़ 1436, 12 सितम्बर 2015)

﴿13﴾ जिस की इमामा शरीफ़ बांधने की निय्यत हो तो फ़ौरन इमामा बांध ले, ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं ।

(5 रमज़ान शरीफ़ 1436, 22 जून 2015 बा’दे इशा)

﴿14﴾ सब से बड़ा “मुतअस्सिर कुन” शख्स वोही है जो गुनाहों से बचता हो और उस का हर क़दम “सुन्नतों” के रास्ते पर पड़ता हो ।

(25 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿15﴾ जुल्फ़ें रखना सुन्नत है, बच्चों को भी जुल्फ़ें रखनी चाहिएं मगर मेरा मश्वरा है कि वोह सिर्फ़ आधे कान तक रखा करें, पूरे कान या कन्धों तक न रखें ।

(21 रमज़ान शरीफ़ 1437, 27 जून 2016 बा’दे अस्)

﴿16﴾ किसी के बुलाने पर जवाब में “लब्बैक” (मैं हाज़िर हूं) कहना प्यारा और नर्म जुम्ला है । इस के कहने से महब्बत बढ़ती है, येह सुन्नत भी है, इस निय्यत से कहेंगे तो सवाब मिलेगा ।

(16 रमज़ान शरीफ़ 1436, 4 जूलाई 2015 बा’दे अस्)

﴿17﴾ जो सफ़ाई सुथराई सुन्नते तन्ज़ीफ़ (सफ़ाई की सुन्नत) की निय्यत से हो तो कारे सवाब है । (15 रमज़ान शरीफ़ 1437, 20 जून 2016 बा’दे तरावीह)

﴿18﴾ सुन्नत और सवाब समझते हुए छोटे बच्चों को शफ़क़त भरा प्यार करना चाहिये । (3 रमज़ान शरीफ़ 1437, 9 जून 2016 बा'दे अस्)

﴿19﴾ “ईद मुबारक” सलाम करने के बा'द कहना चाहिये । और “ख़ैर मुबारक” कहने से पहले सलाम का जवाब दिया जाए ।

(11 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 26 सितम्बर 2015)

﴿20﴾ ईद मुबारक दुआ है, इस का मा'ना है कि आप के हक़ में ईद बरकत वाली हो ।

(11 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 26 सितम्बर 2015)

सादाते किराम के बारे में 4 नसीहतें

﴿1﴾ हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की निस्बत की वजह से मैं सादाते किराम से महबूबत करता हूँ ।

(20 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿2﴾ “जन्नत” सादाते किराम के क़दमों के सदके से मिलेगी ।

(20 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿3﴾ सय्यिद हमारे सर के ताज हैं । (5 रबीउल अब्वल 1437, 17 दिसम्बर 2015)

﴿4﴾ डॉक्टरों को चाहिये कि सादाते किराम और ग़रीबों की हमदर्दी के लिये माहाना बजट बनाएं और मुफ़्त इलाज व अदवियात की तरकीब करें और दुआएं लें ।

(10 रमज़ान शरीफ़ 1436, 27 जून 2015 बा'दे इशा)

मक्के मदीने के बारे में 8 नसीहतें

﴿1﴾ जिस चीज़ की निस्बत हरमैने तय्यिबैन (मक्का व मदीना) और बुजुर्गों से हो जाए, शरीअत के दाएरे में रहते हुए उस के लिये बेहतर से बेहतरान अल्फ़ाज़ इस्ति'माल कीजिये । (9 मुह्रम शरीफ़ 1436, 2 नवम्बर 2014)

﴿2﴾ येह आशिक़ाने रसूल का हिस्सा है कि जब मदीने जाते हैं तो रोते हैं कि हम हाज़िरी के काबिल नहीं और जब मदीने से वापस होते हैं तो भी रोते हैं कि मदीना छूट रहा है ।

(3 शा'बान शरीफ़ 1438)

﴿3﴾ अस्ल शादी (या'नी खुशी का मौक़अ) “मदीने की हाज़िरी” है ।

(21 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿4﴾ मदीने शरीफ़ में फ़ौत होना सआदत की बात है ।

(28 शा'बान शरीफ़ 1436, 15 जून 2015)

﴿5﴾ मदीना, नुजूले रहमत (की जगह), बरकतों का मम्बअ (मर्कज़) और प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पसन्दीदा शहर है ।

(5 रबीउल अब्वल 1437, 17 दिसम्बर 2015)

﴿6﴾ ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हुज़ूरए मुबारका, मिम्बर शरीफ़ का दरमियानी हिस्सा “रौज़तुल जन्नह (या'नी जन्नत की क्यारी)” है । आ़म बोलचाल में लोग इसे रियाजुल जन्नह कहते हैं, मगर अस्ल लफ़ज़ “रौज़तुल जन्नह” है ।

(9 रबीउल अब्वल 1437, 21 दिसम्बर 2015)

﴿7﴾ जो हज़ या उ़मे के लिये जा रहा हो उसे मुबारक बाद दी जाए और यह कहा जाए कि **अल्लाह** पाक आप की हाज़िरी क़बूल फ़रमाए, बे अदबों और बे अदबी से बचाए, मेरे लिये दुआ़ कीजियेगा, बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में मेरा सलाम, शैख़ैने करीमैन (हज़रते अबू बक्र और हज़रते उ़मर رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا) को सलाम, अहले बक़ीअ व अहले मताफ़ को सलाम अर्ज़ कीजियेगा वग़ैरा ।

(21 रमज़ान शरीफ़ 1437, 26 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿8﴾ आबे ज़मज़म का एक क़तरा, पानी से भरी देग़ में डाल दिया जाए तो बरकत के लिये काफ़ी है ।

(20 जुमादल ऊला 1438)

तरीकत के बारे में 6 नसीहतें

﴿1﴾ किसी भी जामेए शराइत पीर से दुन्यवी काम के लिये बैअत न की जाए बल्कि नफ़स व दिल की इस्लाह, नेक आ'माल की कसरत की तौफ़ीक़, ईमान की सलामती व दीन पर इस्तिक़ामत पाने के लिये (बैअत) की जाए ।

(22 सफ़र शरीफ़ 1439)

﴿2﴾ चिश्ती, कादिरी, सोहरवर्दी और नक़्शबन्दी सब एक दरिया की नहरें हैं, सब हमारे लिये काबिले एहतिराम हैं। (11 मुहर्म्म शरीफ़ 1437, 21 अक्टूबर 2015)

﴿3﴾ जिस मुरीद में दीनी खूबियां जितनी ज़ियादा होंगी पीर अपने उस मुरीद से ज़ियादा महबूबत करेगा। (18 ज़ी का'द शरीफ़ 1435, 13 सितम्बर 2014)

﴿4﴾ पीर की तवज्जोह हासिल करने के लिये पीर की इताअत की जाए।
(30 ज़ी का'द शरीफ़ 1435, 25 सितम्बर 2014)

﴿5﴾ **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** ! मैं वक़्तन फ़ वक़्तन अपने मुरीदीन व तालिबीन के लिये दुआएं करता रहता हूँ। (9 मुहर्म्म शरीफ़ 1444, 8 अगस्त 2022)

﴿6﴾ मेरे मुर्शिदे गिरामी कुत्बे मदीना, हज़रत मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी **رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ** ने मुझे मक्तूब (ख़त) रवाना फ़रमाया, जिस में बैअत करने की इजाज़त दी और तहरीर फ़रमाया : तुम्हारे सिल्लिसले में एक भी नेक बन्दा दाख़िल हो गया तो **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ الْكَرِيمُ** तुम्हारी बख़्शिश का बाइस होगा।
(11 रबीउल आख़िर 1437, 21 जनवरी 2016)

हुज़ुरे ग़ौस पाक शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी **رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ** के बारे में 4 नसीहतें

﴿1﴾ ग्यारहवीं वाले (ग़ौसे आ'ज़म) के दामन से वाबस्ता हो जाएं तो वोह बारहवीं वाले आका (**صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ**) तक पहुंचाएंगे।

(10 रबीउल आख़िर 1436, 30 जनवरी 2015)

﴿2﴾ जो ग़ौसे पाक (**رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ**) से जितनी ज़ियादा अक़ीदत रखेगा उसे उतना ज़ियादा फ़ैज़ान (या'नी दुन्या व आख़िरत में फ़ाएदा) हासिल होगा।

(5 रबीउल अब्वल 1437, 17 दिसम्बर 2015)

﴿3﴾ ग़ौसे पाक और आ'ला हज़रत (**رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمَا**) के ख़िलाफ़ कुछ सुनने के लिये इल्यास कादिरी के कान बहरे हैं। हम इन के पीछे पीछे चल रहे हैं और येह हमें जन्नत में ले जाएंगे। **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ** (6 रबीउल आख़िर 1437, 16 जनवरी 2016)

«4» ग्यारहवीं शरीफ़ के कई फ़ज़ाइल हैं, जिस से हो सके वोह इस का एहतिमाम ज़रूर करे। जिस घर में हर माह ग्यारहवीं शरीफ़ का एहतिमाम हो वोह इस की बरकात अपनी आंखों से देख लेगा।

(24 रमज़ान शरीफ़ 1437, 30 जून 2016 बा'दे अ़स्)

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के बारे में 3 नसीहतें

«1» आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बात हमारे लिये हर्फ़े आख़िर है। (3 रीबड़ल आख़िर 1436, 23 जनवरी 2015)

«2» इस दौर में मेरे पास सुन्नियत का मे'यार “आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ” हैं, जो येह फ़रमाएं उस पर आंखें बन्द हैं।

(5 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 26 जूलाई 2020)

«3» मस्लके आ'ला हज़रत ऐन शरीअत के मुताबिक़ अदब वाला है, हमें इस पर मज़बूती से चलना है। (2 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 16 सितम्बर 2015)

मीलाद शरीफ़ के बारे में 14 नसीहतें

«1» चरागां और बुजुर्गाने दीन की नियाज़, सुन्नियों का शिआर है।

(10 रबीड़ल अब्वल 1436, 1 जनवरी 2015)

«2» जुलूसे मीलाद में नियाज़ को लोगों की तरफ़ फेंकने के बजाए हाथों में दिया करें।

(5 रबीड़ल अब्वल 1436, 27 दिसम्बर 2014)

«3» जुलूसे मीलाद में इस तरह पुर वक़ार और मुअद्ब अन्दाज़ में शिर्कत करें कि गुमराह भी देखे तो हिदायत पा जाए। (5 रबीड़ल अब्वल 1436, 27 दिसम्बर 2014)

«4» जश्ने मीलाद की खुशी में चरागां ज़रूर कीजिये और अपने जिस्म को सुन्नतों और अख़्लाके हसना से आरास्ता करने से भी ग़फ़्लत न कीजिये।

(3 रबीड़ल अब्वल 1437, 15 दिसम्बर 2015)

«5» तंग गलियों में जुलूसे मीलाद निकालने के बजाए कुशादा जगह की तरकीब बनाई जाए ताकि गाड़ी चलाने और पैदल चलने वालों को तकलीफ़ न हो।

(5 रबीड़ल अब्वल 1437, 17 दिसम्बर 2015)

﴿6﴾ जश्ने मीलादे मुस्तफ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) में हुस्ने निय्यत और शरीअत की पासदारी (या'नी शरीअत पर अमल) ज़रूरी है ।

(8 रबीउल अव्वल 1437, 20 दिसम्बर 2015)

﴿7﴾ जश्ने विलादत पर झन्डा लहराने से खुशी का इज़हार होता है ।

(8 रबीउल अव्वल 1437, 20 दिसम्बर 2015)

﴿8﴾ हाजी मुस्ताफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के कहने पर मैं ने पहली मरतबा “मरहूबा या मुस्तफ़ा” का ना'रा 12 रबीउल अव्वल को लगाया, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ अब येह आम हो गया है ।

(12 रबीउल अव्वल 1437, 24 दिसम्बर 2015)

﴿9﴾ जश्ने विलादत मनाने से महब्बते रसूल में इज़ाफ़ा होता है ।

(12 रबीउल अव्वल 1437, 24 दिसम्बर 2015)

﴿10﴾ जुलूसे मीलाद में तफ़रीह नहीँ एहतिरामन शिकत करें ।

(13 रबीउल अव्वल 1437, 25 दिसम्बर 2015)

﴿11﴾ तमाम अशिकाने रसूल यकुम (पहली) रबीउल अव्वल को मदनी परचम और बैनर वगैरा लगाएं, ग्यारह रबीउल आख़िर में उतार कर महफूज़ कर लिया करें और अगले साल फिर लगाने की तरकीब किया करें ।

(15 रबीउल अव्वल 1437, 26 दिसम्बर 2015)

﴿12﴾ मेरी तरफ़ से इस्लामी बहनों को बारहवीं के मौक़अ पर सजावट देखने के लिये अपने घर से निकलने की इजाज़त नहीँ ।

(4 रबीउल अव्वल 1437, 16 दिसम्बर 2015)

﴿13﴾ नक्शे ना'लैन शरीफ़ के बेज (Badge) इमामे या कपड़ों पर लगाने का मक्सद ज़ीनत हासिल करना नहीँ बल्कि बरकत हासिल करना है ।

(11 रबीउल अव्वल 1439)

﴿14﴾ रबीउल अव्वल शरीफ़ में मीलादे मुस्तफ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की खुशी और अज़मते मुस्तफ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के इज़हार की निय्यत से चरागां करना कारे सवाब है ।

(7 रबीउल अव्वल 1437, 19 दिसम्बर 2015)

मस्जिद के बारे में 8 नसीहतें

﴿1﴾ मसाजिद अमन और नुजूले रहमत की जगहें हैं ।

(12 शा'बान शरीफ 1436, 30 मई 2015)

﴿2﴾ मस्जिद अल्लाह पाक की रहमत के नुजूल की जगह है, इस से दिल लगाइये और यहां वक्त गुज़ारिये । (4 मुहर्रम शरीफ 1437, 18 अक्टूबर 2015)

﴿3﴾ मस्जिदे महल्ला का बहुत असर होता है, मकान उस महल्ले में लेना चाहिये जहां मस्जिद ग्यारहवीं व बारहवीं मानने वालों की हो ।

(2 रबीउल आखिर 1437, 12 जनवरी 2016)

﴿4﴾ मस्जिद की सजावट लाइटों से नहीं, नमाज़ियों से है ।

(17 रबीउल आखिर 1436, 6 फरवरी 2015)

﴿5﴾ मसाजिद को आबाद करने का तरीका येह है कि जब भी नमाज़ पढ़ने जाएं किसी नए पर इन्फ़रादी कोशिश कर के साथ लेते जाएं । मस्जिद में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तरकीब बनाएं, मस्जिद में दिल लगाएं नीज़ वहां बैठ कर ज़िक्रो अज़कार किया करें । (11 रबीउल अब्वल 1436, 2 जनवरी 2015)

﴿6﴾ मसाजिद में बे आवाज़ (Sound Proof) जनरेटर लगाने की तरकीब बनाई जाए, वोह पेट्रोल पर चले या गैस पर, उस की बदबू मस्जिद में नहीं आनी चाहिये ।

(20 ज़ी का'द शरीफ 1436, 5 सितम्बर 2015)

﴿7﴾ मस्जिद इबादत की जगह है, इस में मोबाइल से खेलना महरूमि है ।

(20 रमज़ान शरीफ 1437, 25 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿8﴾ दा'वते इस्लामी के तहत जो मसाजिद ता'मीर होती हैं उन के जो नाम रखे जाते हैं उस में लफ़्जे "फ़ैज़ान" भी होता है मसलन फ़ैज़ाने मदीना, फ़ैज़ाने ज़मज़म वग़ैरा । जहां भी लफ़्जे "फ़ैज़ान" होगा तो मा'लूम हो जाए कि दा'वते इस्लामी वालों की मस्जिद है ।

(28 ज़ी का'द शरीफ 1436, 12 सितम्बर 2015)

इमाम व मुअज़्ज़िन के बारे में 6 नसीहतें

﴿1﴾ मसाजिद के इमाम साहिबान व मुअज़्ज़िनीन सफ़ेद पोश होते हैं और इन की तनख़्वाहें उमूमन कम होती हैं लिहाज़ा हर एक को अपनी हैसियत के मुताबिक़ इन की माली ख़िदमत करनी चाहिये, इस से **اِنَّ شَرَّ الْاَشْيَاءِ** इन का दिल खुश होगा। (इन्हें मुसल्ले, मिठाई के डिब्बे और इत्र वग़ैरा के ख़ूब सूरत पैकेट देने के बजाए “रक़म” पेश करनी चाहिये ताकि वोह ज़रूरतन दवा, राशन और लिबास वग़ैरा की तरकीब फ़रमा सकें।) (6 रबीउल अब्वल 1439)

﴿2﴾ इमाम मुआशरे के मुअज़्ज़िनीन हैं, इन का एहतिराम कीजिये, इन की ख़िदमत करें मगर मुसाफ़हे के दौरान रक़म न दिया करें बल्कि लिफ़ाफ़े में डाल कर तन्हाई में दें। (5 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 29 अक्टूबर 2014)

﴿3﴾ अगर इमामे मस्जिद मिलन सार व बा अख़्लाक़ हो तो वोह दीन की बहुत ख़िदमत कर सकता है। ऐसा इमामे मस्जिद महल्ले का बेताज बादशाह होता है। (11 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 4 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿4﴾ अगर इमाम व मुअज़्ज़िन मिलन सार हों तो लोग इन के इर्द गिर्द होंगे। (19 रबीउल अब्वल 1436, 10 जनवरी 2015)

﴿5﴾ इमाम व मुअज़्ज़िन को अपनी गुर्बत पर फ़ाक़ा करना लेना चाहिये मगर किसी मालदार के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहिये।

(19 रबीउल अब्वल 1436, 10 जनवरी 2015)

﴿6﴾ अइम्माए किराम दुआए सानी क़दरे धीमी आवाज़ में किया करें क्यूं कि कई लोग नमाज़ पढ़ रहे होते हैं। (27 शा'बान शरीफ़ 1437, 4 जून 2016)

वुजू के बारे में 4 नसीहतें

﴿1﴾ बा वुजू रहने से बलाएं दूर होती हैं।

(22 रमज़ान शरीफ़ 1437, 27 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿2﴾ जब भी वुजू करने लगें तो दिल में वुजू करने की निय्यत हाज़िर करते

हुए कहा करें : मैं हुक्मे इलाही बजा लाते हुए वुजू करूंगा ।

(16 जुमादल उख़ा 1437, 26 मार्च 2016)

﴿3﴾ बा वुजू रहने से चेहरे की ख़ूब सूरती में इज़ाफ़ा होता है, अल्लाह पाक हमें नेकियों का नूर अता करे ।

(26 रमज़ान शरीफ़ 1437, 1 जूलाई 2016 बा'दे तरावीह)

﴿4﴾ आज कल वुजू का दुरुस्त तरीका कम लोगों को मा'लूम होता है अव्वलन (पहली बात येह कि) फ़राइज़ पूरे अदा नहीं करते और अगर फ़राइज़ पूरे हो जाएं तो सुन्नतें छोड़ देते हैं । हमारा वुजू दुरुस्त होगा तो इस की बरकतें मिलेंगी । (22 रमज़ान शरीफ़ 1437, 27 जून 2016 बा'दे तरावीह)

नमाज़ के बारे में 22 नसीहतें

﴿1﴾ ओपरेशन करने और करवाने में ऐसा वक़्त रखना चाहिये जिस में कोई नमाज़ का वक़्त न आता हो । (19 रबीउल आख़िर 1436, 8 फ़रवरी 2015)

﴿2﴾ नमाज़ जल्दी जल्दी पढ़ने के बजाए तज्वीद व क़िराअत का लिहाज़ करते हुए ज़ाहिरी व बातिनी आदाब के साथ पढ़िये । (20 शव्वाल शरीफ़ 1440)

﴿3﴾ अज़ान के बा'द बस एक ही काम, नमाज़ नमाज़ बस नमाज़ ।

(20 शव्वाल शरीफ़ 1440)

﴿4﴾ जब अज़ान हो जाए तो सब कामकाज छोड़ कर नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाया करें । (26 शा'बान शरीफ़ 1436, 13 जून 2015)

﴿5﴾ नमाज़ से न बोलो कि मुझे काम है बल्कि काम से कहो मुझे नमाज़ पढ़नी है । (26 शा'बान शरीफ़ 1436, 13 जून 2015)

﴿6﴾ जिस को नमाज़ में लज़्ज़त आती है उस के लिये इस से बड़ी कोई ने'मत नहीं । (20 ज़ी का'द शरीफ़ 1441, 11 जूलाई 2020)

﴿7﴾ पांचों नमाज़ें पाबन्दी से पढ़ने की अ़ादत बनाने का अस्ल वज़ीफ़ा येह "एहसास" है कि नमाज़ मेरे रब ने मुझ पर फ़र्ज़ की है ।

(11 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 1 अगस्त 2020)

«8» कुरबानी की खालें इकट्ठी करने में “बा जमाअत नमाज़” नहीं छूटनी चाहिये । खाल जाती हो तो जाए, नमाज़ हरगिज़ न जाए ।

(11 ज़िल हज शरीफ़ 1441, 1 अगस्त 2020)

«9» बे नमाज़ी “नेक शख्स” नहीं है ।

(13 रजब शरीफ़ 1442, 25 फ़रवरी 2021)

«10» नमाज़ में लिबास उम्दा से उम्दा तरीन होना चाहिये ।

(7 जुमादल ऊला 1438)

«11» जिस तरह खाने की हिर्स (लालच) की जाती है इस से ज़ियादा नमाज़ व नेकियों की हिर्स कीजिये । (5 रबीउल आख़िर 1436, 25 जनवरी 2015)

«12» मेरा तजरिबा है कि फ़ी ज़माना मुसलमानों की ग़ालिब अक्सरियत को दुरुस्त नमाज़ पढ़ना नहीं आती, न मख़ारिज दुरुस्त हैं और न अरकान दुरुस्त अदा करते हैं । (1 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 25 अक्टूबर 2014)

«13» जान बूझ कर नमाज़ तर्क करने से दिल मैला होता है ।

(5 रबीउल अब्वल 1436, 27 दिसम्बर 2014)

«14» नमाज़ से पहले वोह तमाम चीज़ें जो खुशूअ से मानेअ (या'नी रुकावट) हों उन्हें दूर करें । (15 जुमादल ऊला 1436, 4 एप्रिल 2015)

«15» हवाई जहाज़ का सफ़र करना हो तो हत्तल इम्कान ऐसा वक़्त (Time) मुन्तख़ब कीजिये कि दौराने सफ़र कोई नमाज़ न पढ़नी पड़े क्यूं कि जहाज़ में नमाज़ पढ़ने में दुश्वारी होती है ।

(13 रमज़ान शरीफ़ 1436, 1 जूलाई 2015 बा'दे अ़स्)

«16» नमाज़ में सूरतें बदल बदल कर पढ़ने से भी खुशूअ हासिल होता है । (9 जुमादल उख़ा 1437, 19 मार्च 2016)

«17» नमाज़ तमाम कामों से ज़ियादा अहम है ।

(11 रबीउल अब्वल 1437, 23 दिसम्बर 2015)

«18» हर एक रोज़ाना एक नमाज़ी बनाए तो सारे मुसलमान नमाज़ी बन जाएं । (11 रबीउल आख़िर 1437, 21 जनवरी 2016)

«19» ट्रान्सपोर्ट के मालिकान ड्राइवर हज़रात को ताकीद करें कि जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो गाड़ियां रोक कर खुद भी नमाज़ पढ़ें और मुसाफ़ि़रों को भी नमाज़ पढ़ने का कहें । (25 जुमादल ऊला 1437, 5 मार्च 2016)

«20» अल्लाह करे ऐसा हो जाए कि ड्राइवर हज़रात मुसाफ़ि़रों को कहना शुरू कर दें : “आइये ! नमाज़ पढ़ लीजिये ।”

(25 जुमादल ऊला 1437, 5 मार्च 2016)

«21» मुझे बचपन से नमाज़ बा जमाअत पढ़ने का ज़ब्बा था ।

(7 सफ़र शरीफ़ 1436, 29 नवम्बर 2014)

«22» महज़ सुस्ती की बिना पर बे जमाअत नमाज़ पढ़ना मेरी डिक्शनरी में नहीं । (5 रमज़ान शरीफ़ 1436, 22 जून 2015 बा'दे इशा)

ख़ौफ़े ख़ुदा के बारे में 15 नसीहतें

«1» अगर वाकेई येह सोच बन जाए कि “अल्लाह देख रहा है” तो गुनाहों से बचने में मदद मिलेगी । (19 रमज़ान शरीफ़ 1437, 25 जून 2016 बा'दे अस्)

«2» अपने घर में दो चार जगह “अल्लाह देख रहा है” लिख कर लगा दें, इस की बरकतें खुद देख लेंगे । (29 जुमादल उख़्रा 1436, 18 एप्रिल 2015)

«3» इस तसव्वुर को अपने दिलो दिमाग़ में जमाइये कि अल्लाह मुझे देख रहा है । (25 रबीउल आख़िर 1436, 16 फ़रवरी 2015)

«4» ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्के मुस्तफ़ा में रोना भी अल्लाह पाक की एक ने'मत है, जिसे ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्के मुस्तफ़ा में रोना न आए उसे (रियाकारी से बचते हुए) रोने की ब तकल्लुफ़ कोशिश करनी चाहिये ।

(1 रबीउल अब्वल 1439)

﴿5﴾ ख़ौफ़े ख़ुदा की एक अहम अलामत यह है कि बन्दा **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानियों से बचे । (25 ज़िल हज शरीफ़ 1435, 20 अक्टूबर 2014)

﴿6﴾ नफ़िसयाती ख़ौफ़ नहीं होना चाहिये बल्कि अपने अन्दर हकीकी ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा कीजिये । (15 रमज़ान शरीफ़ 1436, 3 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿7﴾ ख़ौफ़े ख़ुदा के हुसूल के लिये ख़ाइफ़ीन (**अल्लाह** पाक से डरने वालों) की सोहबत बहुत ज़रूरी है । (20 रमज़ान शरीफ़ 1436, 7 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿8﴾ अपने अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने के लिये अपने आप को बेबस समझें और **अल्लाह** की ग़ालिब कुदरत को याद कीजिये । **अल्लाह** पाक की खुफ़्या तदबीर और बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से डरते रहिये ।

(25 रमज़ान शरीफ़ 1436, 12 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿9﴾ ख़ौफ़े ख़ुदा की बातें सन्जीदा और ग़म भरे अन्दाज़ में करना ही मुफ़ीद है । (3 रबीउल अब्वल 1437, 15 दिसम्बर 2015)

﴿10﴾ ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्के मुस्तफ़ा हमारा सरमाया है ।

(9 जुमादल ऊला 1437, 18 फ़रवरी 2016)

﴿11﴾ हर मन्सब वाला यह ज़ेहन बनाए कि यह मन्सब मुझे **अल्लाह** पाक ने दिया है और वोह कभी भी मुझ से ले सकता है । इसी तरह **अल्लाह** पाक की खुफ़्या तदबीर से डरता रहे ।

(19 रमज़ान शरीफ़ 1437, 24 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿12﴾ ख़ौफ़े ख़ुदा में बहने वाले आंसू दिल की सख़्ती की वजह से खुश्क हो जाते हैं और दिल गुनाहों की कसरत की वजह से सख़्त होता है ।

(10 जुमादल ऊला 1437)

﴿13﴾ अपनी शोहरत की वजह से बारहा मैं **अल्लाह** की खुफ़्या तदबीर से डरता हूँ ।

(6 मुहर्रम शरीफ़ 1441)

﴿14﴾ **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ !** दुन्या में तो हम मोमिन हैं, अगर ईमान की हालत में मरें तो यह बहुत बड़ी सआदत है । (27 शा'बान शरीफ़ 1436, 14 जून 2015)

«15» मेरी आदत है कि मैं बे हिसाब मग़ि़रत की दुआ करता करवाता हूँ, क्यूं कि मैं अपने अन्दर हिसाब की ताब नहीं पाता ।

(5 रमज़ान शरीफ़ 1436, 22 जून 2015 बा'दे इशा)

इख़लास के बारे में 6 नसीहतें

«1» क़बूलियत के लिये इख़लास शर्त है ।

(2 जुमादल उख़ा 1437, 12 मार्च 2016)

«2» जो अपने “इख़लास” पर मुत्मइन हो जाए उसे इख़लास की ज़ियादा ज़रूरत है ।

(5 शा'बान शरीफ़ 1436, 23 मई 2015)

«3» क़बूलियत का दारो मदार कसरतो क़िल्लत पर नहीं, बल्कि इख़लास पर है ।

(5 रबीउल अब्वल 1439)

«4» (नेक अमल की) क़बूलियत का दारो मदार क़िल्लतो कसरत (या'नी कमी और ज़ियादती) पर नहीं, “इख़लास” पर है । (10 रमज़ान शरीफ़ 1442)

«5» रियाकारी से बचते हुए इख़लास के साथ नेक आ'माल करने की आदत बनाइये कि मुख़्लस शख़्स हज़ार (1000) पर्दों में छुप कर भी नेक काम करे, **अल्लाह** पाक उसे लोगों में मशहूर फ़रमा देता है ।

(25 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435)

«6» आजिज़ी के अल्फ़ाज़ बोलने में कहीं रियाकारी न हो जाए लिहाज़ा जब तक दिली कैफ़ियत न हो तो ज़बान से अपने आप को “हक़ीर, फ़क़ीर” नहीं कहना चाहिये ।

(24 रबीउल आख़िर 1439)

सब्रो शुक्र के बारे में 25 नसीहतें

«1» **अल्लाह** पाक ने जैसा बनाया है, उस पर राज़ी रहना चाहिये, अलबत्ता हुस्न के लिये सफ़ेद रंग होना ज़रूरी नहीं ।

(7 रमज़ान शरीफ़ 1437, 13 जून 2016 बा'दे अ़स्)

«2» अगर मुसल्मान ज़ाहिरी नमूदो नुमाइश के अख़्राजात ख़त्म कर के

ए'तिदाल से जिन्दगी गुज़ारें तो खुशहाली आ जाएगी, إِنَّ شَأْنَهُ لِلَّهِ ।

(25 रमज़ान शरीफ़, 1436)

﴿3﴾ बड़ी उम्र के लोगों को चाहिये कि अपने अमराज़ का ज़िक्र बिला ज़रूरत न किया करें । (13 शा'बान शरीफ़ 1437, 21 मई 2016)

﴿4﴾ मुसीबत पर सब्र करने की एक सूत यह है कि किसी से उस मुसीबत का बिला मस्लहत इज़हार न किया जाए । (10 मुह्र्रम शरीफ़ 1436)

﴿5﴾ मुसीबत में (मिलने वाले सवाब की खुशी में) मुस्कुराना "कमाल" है । (3 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 24 जूलाई 2020)

﴿6﴾ कोई किसी भी ना गवार अन्दाज़ में सुवाल करे, हमें सब्रो तहम्मूल से इस का अहूसन (अच्छे) अन्दाज़ में जवाब देना चाहिये ।

(8 रबीउल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015)

﴿7﴾ खुददारी और सब्रो क़नाअत से वकार बुलन्द होता है ।

(3 रबीउल आख़िर 1437)

﴿8﴾ ज़ख़्म, बीमारी, घबराहट, नींद उचट जाना (नींद न आना), तंगदस्ती और हर तरह के जानी या माली नुक़सानों और परेशानियों पर सब्र करते हुए बिला वज्ह दूसरों पर ज़ाहिर करने से बच कर मग़िफ़रत की बिशारत के हक़दार बनिये । (5 रमज़ान शरीफ़ 1437, 11 जून 2016 बा'दे अ़स्)

﴿9﴾ जो मसाइबो आलाम (या'नी मुसीबतों और ग़मों) पर सब्र करने में काम्याब हो जाता है वोह अल्लाह पाक की रहमतों के साए में आ जाता है । (खुदकुशी का इलाज, स. 20)

﴿10﴾ जितना हो सके मुसीबत को छुपाना चाहिये ।

(24 रमज़ान शरीफ़ 1436, 11 जूलाई बा'दे इशा)

﴿11﴾ मुसल्मान को हर तक्लीफ़ पर अज़्र मिलता है ।

(18 रमज़ान शरीफ़ 1443, 20 एप्रिल 2022)

«12» किसी का “महल” देख कर अपनी “झोंपड़ी” जलाने के बजाए फुटपाथ पर पड़े बे घर को देखिये। (3 सफ़र शरीफ़ 1444, 31 अगस्त 2022 ब तग़्युर)

«13» इम्तिहान जितना सख़्त होता है, सनद भी उतनी ही आ’ला मिलती है। (10 मुह्रम शरीफ़ 1441)

«14» जो हमारे हाथ में है उसे तो कोई छीन सकता है मगर जो मुक़द्दर में है वोह कोई नहीं छीन सकता। (11 रबीउल अब्वल 1436, 2 जनवरी 2015)

«15» बन्दा इतने मेहरबान रब की ना फ़रमानी कैसे करे ? जो ला ता’दाद ने’मतों से नवाज़ता है। (4 रबीउल आख़िर 1436, 24 जनवरी 2015)

«16» ईमान का ज़ाएअ़ होना सब से बड़ी मुसीबत है।

(5 रबीउल अब्वल 1437, 17 दिसम्बर 2015)

«17» अपने अन्दर कुव्वते बरदाश्त पैदा करने की कोशिश कीजिये कि जब भी आप के मिज़ाज के ख़िलाफ़ कोई बात हो तो आप अपने गुस्से को कन्ट्रोल करते हुए सब्र करने में काम्याब हो जाएं। (12 रबीउल अब्वल 1438)

«18» हमें हर आज़्माइश पर सब्र और हर ने’मत पर शुक्र अदा करना है।

(6 रबीउल अब्वल 1437, 18 दिसम्बर 2015)

«19» कोई शख़्स हमारी बुराई करे तो उस से नाराज़ होने, किसी के सामने **مَعَادَ اللَّهِ** उस की बुराई करने के बजाए सब्र करें बल्कि उसे तोहफ़ा दें। इस से नफ़रतें दूर और महबूबतें बढ़ेंगी। (14 रमज़ान शरीफ़ 1437, 19 जून 2016 बा’दे तरावीह)

«20» ज़हीन पर अपनी ज़हानत का शुक्र अदा करना ज़रूरी है क्यूं कि ज़हानत कुदरती अतिरिया (या’नी **अल्लाह** पाक की तरफ़ से तोहफ़ा) है।

(28 जी का’द शरीफ़ 1443, 28 जून 2022)

«21» कोई एहसान करे या हमारा कोई काम कर दे या राहत पहुंचाए तो उस का शुक्रिया अदा करने के लिये ज़बान से “शुक्रिया” के अल्फ़ज़ कहे, (बेहतर है कि) **جَزَاكَ اللَّهُ حَيْرًا** कह दे। (16 रमज़ान शरीफ़ 1437, 22 जून 2016 बा’दे अ़स्)

﴿22﴾ बन्दे की आज्माइश उस वक़्त होती है जब गुस्सा दिलाया जाए। जब मिज़ाज के खिलाफ़ कोई बात आ जाए तो बरदाश्त कर जाएं तो हम अच्छे, वरना अच्छे नहीं। (27 रबीउल आख़िर 1437, 6 फ़रवरी 2016)

﴿23﴾ कोई शख्स हमारी बुराई करे तो उस से नाराज़ होने या किसी के सामने **مَعَاذَ اللَّهِ** उस की बुराई बयान करने के बजाए सब्र करें बल्कि उसे तोहफ़ा ख़ाना कर दें, **بِإِذْنِ اللَّهِ** अच्छे नताइज सामने आएंगे। (14 रमज़ान शरीफ़ 1437)

﴿24﴾ गुरूरो तकब्बुर गुस्से में शिद्दत पैदा करता और हिल्मो बुर्दबारी से रोकता है। (19 रबीउल आख़िर 1437)

﴿25﴾ हस्बे ज़रूरत रोज़ी पर क़नाअत करना सीखें।

(4 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 30 अगस्त 2014)

कारोबार के बारे में 5 नसीहतें

﴿1﴾ रिज़्के हलाल के हुसूल के लिये वोह कारोबार कीजिये जिस में दीन की ख़िदमत भी कर सकें। (3 मुह्रम शरीफ़ 1436, 27 अक्टूबर 2014)

﴿2﴾ दुकानों वगैरा के नाम मुतबर्क न रखे जाएं क्यूं कि इन की तौहीन हो सकती है मसलन गौसिया टेलर्ज़ वगैरा बल्कि दुन्यावी नाम रखे जाएं।

(5 मुह्रम शरीफ़ 1436, 29 अक्टूबर 2014)

﴿3﴾ सुब्ह के ख़ास फ़ज़ाइल हैं, तुलूए सुब्ह (सुब्हे सादिक़ या'नी फ़ज़्र की नमाज़ का वक़्त शुरू हो) ता तुलूए आफ़ताब **अल्लाह** रिज़्क तक़सीम फ़रमाता है।

(17 रबीउल आख़िर 1436, 6 फ़रवरी 2015)

﴿4﴾ हेयर ड्रेसर (Hair Dresser) अपनी दुकान पर येह तहरीर लगा दें : “यहां न दाढ़ी मूंडी जाती है और न ही एक मुठ्ठी से घटाई जाती है कि उलमाए किराम फ़रमाते हैं : “दाढ़ी मुंडाना और एक मुठ्ठी से घटाना दोनों गुनाह हैं और इस की उजरत लेना जाइज़ नहीं।”

(10 मुह्रम शरीफ़ 1437, 21 अक्टूबर 2015)

﴿5﴾ डॉक्टर और दुकानदार नमाज़ के वक़्त अपनी दुकान वगैरा पर एक बोर्ड आवेजां कर के नमाज़े बा जमाअत अदा किया करें। उस बोर्ड पर नुमायां लिखा हो “वक्फ़ए नमाज़” और उस के नीचे येह तहरीर हो “मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है”। (16 रबीउल आख़िर 1436, 5 फ़रवरी 2015)

माल और मालदारों के बारे में 6 नसीहतें

﴿1﴾ माल के बजाए मौला की महब्बत मिल जाए तो क्या बात है।

(13 रबीउल अब्वल 1437, 25 दिसम्बर 2015)

﴿2﴾ मालदारों के पास उमूमन इल्मे दीन कम होता है, शायद इसी लिये वोह ग़रीबों को हक़ीर जानने में मुब्तला हो जाते हैं। (23 रबीउल आख़िर 1438)

﴿3﴾ जिस के पास माल ज़ियादा होता है लोग उसे मालदार (Rich) समझते हैं मगर हक़ीक़त में मालदार वोह क़नाअत पसन्द शख़्स है कि जितना अल्लाह पाक ने उसे दिया वोह उस पर राज़ी रहे। (10 रबीउल आख़िर 1440)

﴿4﴾ येह बहुत मुश्किल है कि बन्दे के पास माल हो और दिल में उस की महब्बत न हो, लिहाज़ा येह न कहा जाए कि मेरे दिल में माल की महब्बत नहीं, अगर येह सच है तो रिया में पड़ने का ख़ौफ़ है और अगर येह दुरुस्त न हो (या'नी दिल में माल की महब्बत हो) तो झूट हो जाएगा।

(29 सफ़र शरीफ़ 1439)

﴿5﴾ दुन्या में जिसे दौलत मिल जाए उसे (मुत्लक़न या'नी हर ए'तिबार से) खुश किस्मत कहना दुरुस्त नहीं, दौलत तो इम्तिहान है।

(13 रबीउल आख़िर 1437, 23 जनवरी 2016)

﴿6﴾ दुन्या वोह बुरी है जिस से आख़िरत को नुक़सान पहुंचे।

(19 रबीउल आख़िर 1437, 29 जनवरी 2016)

ज़ालिम व ज़ुल्म के बारे में 5 नसीहतें

﴿1﴾ ज़ालिम और ज़ुल्म की उम्र कम होती है। (11 मुह्रम शरीफ़ 1441)

﴿2﴾ अगर मज़्लूम से मुआफ़ी मांगना आज मुश्किल लगता है तो आख़िरत का मुआमला मुश्किल तरीन है ।
(11 मुह्रम शरीफ़ 1441)

﴿3﴾ जुल्म, आख़िरत का अंधेरा है ।

(8 रबीउल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿4﴾ (उख़वी ए'तिबार से) हमेशा “मज़्लूम” की जीत होती है ।

(7 मुह्रम शरीफ़ 1444, 5 अगस्त 2022)

﴿5﴾ जब ओहदा व मन्सब मिलता है तो बन्दा बसा अवकात जुल्म में मुब्तला हो जाता है ।

नेकी के बारे में 28 नसीहतें

﴿1﴾ बा'ज अवकात छोटी नेकी बड़ी नेकियों तक पहुंचा देती है ।

(7 ज़िल हज शरीफ़ 1441, 28 जूलाई 2020)

﴿2﴾ हर “नेक” अल्लाह पाक का वली नहीं होता जब कि अल्लाह पाक का हर “वली” ज़रूर “नेक” होता है ।

(4 रजब शरीफ़ 1442, 18 फ़रवरी 2021)

﴿3﴾ अपनी नेकियां छुपाना “बेहतरीन काम” है ।

(15 रजब शरीफ़ 1442, 27 फ़रवरी 2021)

﴿4﴾ अपनी इस्लाह की कोशिश जारी रखिये क्यूं कि जो खुद नेक हो वोह दूसरों के बारे में भी नेक गुमान (या'नी अच्छे ख़यालात) रखता है जब कि जो खुद बुरा हो उसे दूसरे भी बुरे ही दिखाई देते हैं ।

(शैतान के बा'ज हथियार, स. 35)

﴿5﴾ माल का लुटेरा चोर है और इस से बचने के कई ज़रीए हैं क्यूं कि वोह नज़र आता है जब कि नेकियों का लुटेरा शैतान है और येह नज़र नहीं आता लिहाज़ा इस से नेकियां बचाने के लिये ज़ियादा कोशिश करने की ज़रूरत है ।

(1 मुह्रम शरीफ़ 1436)

﴿6﴾ दुन्यावी मालो दौलत कम होने पर अफ़सोस करने के बजाए नेकियां कम होने पर अफ़सोस कीजिये । (29 रमज़ान शरीफ़ 1437)

﴿7﴾ नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत पाने के लिये इब्तिदाअन नफ़्स को ज़ब्रन नेकियों की तरफ़ ग़ामज़न करना पड़ता है ।

(29 जुमादल उख़ा 1436, 18 एप्रिल 2015)

﴿8﴾ “एक मक़बूल नेकी दुन्या की सारी दौलत और बादशाहत से बेहतर है ।” (23 रमज़ान शरीफ़ 1443, 25 एप्रिल 2022)

﴿9﴾ साहिबे माल बनने की बजाए साहिबे नेक आ'माल बनने की कोशिश कीजिये । (6 शव्वाल शरीफ़ 1443 खुसूसी)

﴿10﴾ जितना ज़ियादा नेकी करने में शैतान वस्वसे डाले उतनी ही ज़ियादा हिम्मत से नेकी करनी चाहिये ।

(18 ज़ी का'द शरीफ़ 1435, 13 सितम्बर 2014)

﴿11﴾ अपने नेक आ'माल पर मुत्मइन नहीं होना चाहिये बल्कि **अल्लाह** पाक की खुफ़्या तदबीर से डरते रहना चाहिये ।

(30 ज़ी का'द शरीफ़ 1435, 25 सितम्बर 2014)

﴿12﴾ अपनी नेकियों पर ए'तिमाद न करें बल्कि **अल्लाह** की रहमत पर नज़र रखें । (23 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 18 अक्टूबर 2014)

﴿13﴾ मुसल्लसल नेकी की दा'वत देते रहें, शर्मों झिजक ख़त्म होती जाएगी । (7 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 31 अक्टूबर 2014 खुसूसी)

﴿14﴾ जो नेकी करना चाहता है उस को सन्जीदा (Serious) होना ज़रूरी है, सिर्फ़ “चाहना” काफ़ी नहीं । (29 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 22 नवम्बर 2014)

﴿15﴾ अस्ल नेक वोही है जो **अल्लाह** पाक के हां भी नेक हो, महुज़ शोहरत होना काफ़ी नहीं । (21 सफ़र शरीफ़ 1436, 13 दिसम्बर 2014)

«16» नेक काम करने के लिये नफ़स को मारें और ब तकल्लुफ़ नेक काम करने की कोशिश करें ।
(27 शा'बान शरीफ़ 1436, 14 जून 2015)

«17» नेकी के फ़ज़ाइल पर नज़र करने और उम्र की कमी में ग़ौर करने से नेकियों में मुस्तक़िल मिज़ाजी हासिल होगी ।

(14 रमज़ान शरीफ़ 1436, 2 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

«18» जिसे तरह तरह की ने'मतें हासिल हों तो वोह येह सोचे कि मेरी नेकियों का बदला कहीं दुन्या में ही न दे दिया जाए और आख़िरत में मुझे उन से कुछ फ़ाएदा न हो । (19 रमज़ान शरीफ़ 1437, 24 जून 2016 बा'दे तरावीह)

«19» नेकियों पर इस्तक़ामत हासिल करने का तरीक़ा येह है कि **अल्लाह** पाक से इस्तक़ामत की दुआ़ करे, नेकियों में दिल न भी लगे तो लगाने की कोशिश करे, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمُ** दिल लग ही जाएगा । नेकियों के फ़ज़ाइल पढ़ता रहे ।
(24 रमज़ान शरीफ़ 1437, 29 जून 2016 बा'दे तरावीह)

«20» मुसलमान को राहत पहुंचाना कारे सवाब है ।

(13 रबीउल आख़िर 1437, 23 जनवरी 2016)

«21» हमारी हज़ारों इबादतें **अल्लाह** पाक की किसी एक ने'मत के हज़ारवें हिस्से के शुक्र का हक़ अदा नहीं कर सकतीं ।

(25 सफ़र शरीफ़ 1442, 12 अक्टूबर 2020)

«22» चेहरे का हुस्न (नूर) “**अल्लाह** पाक की इबादत” से होता है ।

(15 रजब शरीफ़ 1442, 27 फ़रवरी 2021)

«23» इबादत में दिल तंग होना अच्छी बात नहीं ।

(6 रमज़ान शरीफ़ 1436, 23 जून 2015 बा'दे इशा)

«24» दुन्यवी मसरूफ़ियत इस तरह नहीं होनी चाहिये कि **अल्लाह** पाक की इबादत और दीगर फ़राइज़ में कोताही हो ।

(6 रमज़ान शरीफ़ 1436, 24 जून 2015 बा'दे अ़स्र)

﴿25﴾ इबादत में दिल का लगाना, दिली सुकून हासिल होना, सुरूर आना रूहानियत है। (1 रबीउल अव्वल 1437, 13 दिसम्बर 2015)

﴿26﴾ जवानी में ख़ूब इबादत करनी चाहिये, बुढ़ापे में मेहनत वाली इबादत मुश्किल होती है और जवानी वाली हिम्मत तो ताक़त नहीं होती।

(15 रमज़ान शरीफ़ 1437, 20 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿27﴾ इबादत पर कुव्वत हासिल करने के लिये कम खाइये।

(18 जुमादल ऊला 1437, 27 फ़रवरी 2016)

﴿28﴾ तहज्जुद पढ़ने वाले के चेहरे पर नूर होता है।

(16 रबीउल आख़िर 1436, 5 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

गुनाहों के बारे में 26 नसीहतें

﴿1﴾ अफ़सोस ! गुनाह और बुरे काम को बुरा समझने का रुज़्हान भी कम होता जा रहा है। (7 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 28 जूलाई 2020)

﴿2﴾ गुनाह करने वाले का गुनाह क़ाबिले नफ़रत है मगर वोह खुद क़ाबिले हमदर्दी है और उसे समझाने की ज़रूरत है। (1 रबीउल आख़िर 1438)

﴿3﴾ अल्लाह पाक की ना फ़रमानी से हर सूरत में बचना चाहिये कि गुनाह छोटा हो या बड़ा जहन्नम में झोंक सकता है। (16 रमज़ान शरीफ़ 1437)

﴿4﴾ हर वोह बात जिस से गुनाहों का दरवाज़ा खुले उस से इज्तिनाब करना (या'नी बचना) ज़रूरी है। (8 मुह्रम शरीफ़ 1436)

﴿5﴾ गुनाह करना तो दूर की बात है, गुनाह के क़रीब भी नहीं जाना चाहिये। (8 शव्वाल शरीफ़ 1441, 30 मई 2020)

﴿6﴾ गुनाह करना नहीं चाहिये और (गुनाहों पर) रोना तर्क करना (या'नी छोड़ना) भी नहीं चाहिये। (3 रमज़ान शरीफ़ 1442)

﴿7﴾ मेरे नज़्दीक मेरे लिये वोह “दिन” अफ़ज़ल है जिस में कोई गुनाह न हो। (29 रमज़ान शरीफ़ 1442 बा'दे अ़स्)

- «8» गुनाह से बचने के लिये गुनाह के अस्बाब को ख़त्म करना होगा ।
(6 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 30 अक्टूबर 2014 खुसूसी)
- «9» गुनाहों के अज़ाबात से वाकिफ़ियत होगी तो उन से बचने का ज़ेहन बनेगा ।
(4 रबीउल आख़िर 1436, 24 जनवरी 2015)
- «10» बिला इजाज़ते शर्इ दिल आज़ार अन्दाज़ से घूर कर देखना भी गुनाह है ।
(4 रबीउल आख़िर 1436, 24 जनवरी 2015)
- «11» किसी भी गुनाह से सुकून नहीं मिलता ।
(8 रबीउल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015 खुसूसी)
- «12» गुनाह ईमान लेवा हो सकता है और (इस से) ईमान ज़ाएअ होने का ख़तरा बढ़ जाता है ।
(10 रबीउल आख़िर 1436, 30 जनवरी 2015)
- «13» जिस्मानी बीमारियों से गुनाहों की बीमारियां ज़ियादा ख़तरनाक हैं ।
(15 जुमादल उख़्रा 1444, 7 जनवरी 2023)
- «14» एक गुनाहे सगीरा भी जहन्नम में जाने का सबब बन सकता है ।
(1 जुमादल उख़्रा 1436, 20 फ़रवरी 2015)
- «15» ज़ाहिरी गुनाहों के साथ बातिनी गुनाहों की मा'लूमात हासिल करना ज़रूरी है ।
(10 जुमादल ऊला 1437, 19 फ़रवरी 2016)
- «16» इस बात को हमेशा पेशे नज़र रखें कि नेकियों के बैलेन्स (Balance) में कमी नहीं आनी चाहिये और गुनाहों के बेलेन्स में इज़ाफ़ा नहीं होना चाहिये ।
(9 जुमादल उख़्रा 1437, 19 मार्च 2016)
- «17» हुब्बे मद्ह या'नी अपनी ता'रीफ़ चाहने का ज़ब्बा अच्छा नहीं । येह बातिनी बीमारी है और इस की वजह से बन्दा कई गुनाहों में मुब्तला हो सकता है ।
(7 रमज़ान शरीफ़ 1437, 13 जून 2016 बा'दे अ़स्)

﴿18﴾ गुनाह हो जाए तो डरें कि अल्लाह पाक नाराज़ न हो जाए और नेकी की सआदत पाएं तो भी डरें कि न जाने क़बूल हुई है या नहीं ।

(12 रमज़ान शरीफ़ 1437, 17 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿19﴾ हर गुनहगार को अल्लाह पाक की रहमत की उम्मीद रखनी है और हर नेकोकार को अल्लाह पाक की बे नियाज़ी से डरते रहना है ।

(19 रमज़ान शरीफ़ 1437, 25 जून 2016 बा'दे अ़स्)

﴿20﴾ बुराइयों से बचने का शुऊर बुराई से बचने का ज़रीआ है ।

(4 मुह्रम शरीफ़ 1436, 28 अक्टूबर 2014)

﴿21﴾ अल्लाह पाक को नाराज़ करने वाले काम कर के भला खुशी मनाई जा सकती है ? (यकीनन नहीं) (19 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿22﴾ अल्लाह पाक की ना फ़रमानी करना मुसलमान का नहीं, शैतान का काम है । (7 मुह्रम शरीफ़ 1436, 31 अक्टूबर 2014)

﴿23﴾ हराम माल में बरकत नहीं होती, किसी न किसी तरह हाथ से निकल जाता है । (8 रबीज़ल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿24﴾ अल्लाह पाक की किसी ना फ़रमानी को छोटा समझना, उसे बड़ा कर देता है । (16 रमज़ान शरीफ़ 1437, 21 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿25﴾ बा'ज़ अवक़ात एक गुनाह "कई गुनाह" करवाता है ।

(5 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 21 जून 2016 जूलाई 2020)

﴿26﴾ हर गुनाह छोटा हो या बड़ा, जहन्नम में झोंक (डाल) सकता है ।

(16 रमज़ान शरीफ़ 1437, 21 जून 2016 बा'दे तरावीह)

हुस्ने ज़न (या'नी अच्छे गुमान) के बारे में 5 नसीहतें

﴿1﴾ अल्लाह पाक से हुस्ने ज़न (अच्छा गुमान) रखना चाहिये कि वोह करीम है और मुज़ से करम वाला ही मुआमला फ़रमाएगा, अपने करम से

मुझे रुस्वा नहीं करेगा और मेरी बख्शिश फ़रमा देगा ।

(15 रबीउल अब्वल 1437, 26 दिसम्बर 2015)

﴿2﴾ जिस के बारे में येह हुस्ने ज़न हो कि इस की दुआ क़बूल होती है तो उस से बे हिसाब मग़िफ़रत की दुआ करवानी चाहिये ।

(25 रमज़ान शरीफ़ 1436)

﴿3﴾ किसी मुसलमान को दूसरे मुसलमान से बद ज़न नहीं करना चाहिये ।

(11 मुह्रम शरीफ़ 1436, 4 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿4﴾ हुस्ने ज़न में कोई शर (या'नी बुराई) नहीं और बद गुमानी में कोई ख़ैर (या'नी भलाई) नहीं । (18 रमज़ान शरीफ़ 1432)

﴿5﴾ मुसलमानों पर बिला वजह शक करना छोड़ दें और हुस्ने ज़न (अच्छा गुमान) रखें कि मुसलमानों से हुस्ने ज़न रखना कारे सवाब है ।

(24 रमज़ान शरीफ़ 1437, 30 जून 2016 बा'दे अ़स्)

आंखों की हिफाजत के बारे में 4 नसीहतें

﴿1﴾ जिन मनाज़िर को देखने पर न सवाब हो न गुनाह उन्हें देखने का भी क़ियामत के दिन हिसाब होगा । (4 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 25 जूलाई 2020)

﴿2﴾ फ़ी ज़माना “आंखों का कुफ़ले मदीना” लगाना (या'नी गुनाहों और फुज़ूल देखने से बचाना) मुश्किल है ना मुम्किन नहीं, बिग़ैर ज़रूरत घर से न निकले, घर से बाहर निकलना पड़े तो निगाहें नीची रखे, बे इख़्तियार किसी ना महूरमा पर नज़र पड़ जाए तो फ़ौरन निगाह हटा ले । ऐसे मक़ामात पर कम से कम जाए जहां औरतें बे पर्दा हों मसलन बाज़ार वग़ैरा ।

(2 रमज़ान शरीफ़ 1437, 8 जून 2016 बा'दे अ़स्)

﴿3﴾ कम गो और नीची नज़र रखने वाले सुन्नतों के पैकर इस्लामी भाई मुझे अच्छे लगते हैं । (24 रबीउल आख़िर 1436, 13 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿4﴾ परेशान नज़री (बिगैर ज़रूरत इधर उधर देखते रहना) अच्छी बात नहीं, बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतों से इस से बचना कारे सवाब है ।

(1 रमज़ान शरीफ़ 1437, 7 जून 2016 बा'दे अस्)

गुफ्तगू के बारे में 26 नसीहतें

﴿1﴾ ऐसा सुवाल न किया करें जिस से सामने वाला किसी का ऐब खोल दे या ग़ीबत के गुनाह में जा पड़े । (13 ज़ी का'द शरीफ़ 1441, 4 जूलाई 2020)

﴿2﴾ तसव्वुफ़ की कोई किताब ख़ामोशी के फ़ज़ाइल से ख़ाली नहीं ।

(1 रमज़ान 1437, 7 जून 2016 बा'दे अस्)

﴿3﴾ दिल की सख़्ती का एक सबब ज़िक्रे इलाही के इलावा ज़ियादा कलाम (गुफ्तगू) करना भी है । (10 मुहर्रम शरीफ़, 1436)

﴿4﴾ जो आप से “तू” कह कर बात करता है, आप उस के साथ भी “आप”, “जी जनाब” से गुफ्तगू किया करें ।

(8 रबीउल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿5﴾ अ़ाम तौर पर हर एक को “ख़ामोश तबीअत इन्सान” अच्छ लगता है । (1 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 22 जूलाई 2020)

﴿6﴾ अपनी गुफ्तगू पर ग़ौरो फ़िक्र किया करें कि मैं ने क्या और क्यूं बोला ? (11 जुमादल ऊला 1436, 2 मार्च 2015 खुसूसी)

﴿7﴾ अगर हम कमा हक्कुहू फुज़ूल बातों से बचने में काम्याब हो जाएं तो येह अल्लाह पाक की (बड़ी) ने'मत है ।

(8 रबीउल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿8﴾ ज़ियादा बातें करना इन्सान के वकार को दाग़दार करता है ।

(30 ज़ी का'द शरीफ़ 1441, 21 जूलाई 2020)

﴿9﴾ जो बात दो होंटों में नहीं समाई वोह कहीं नहीं समाएगी ।

(6 रमज़ान शरीफ़ 1432)

- «10» हर उस बात और हरकत से बचिये जिस से किसी मुसलमान की दिल आज़ारी हो सकती हो । (10 मुहर्म्म शरीफ़ 1436, 2 नवम्बर 2014)
- «11» काश ! ऐसा हो जाए कि जब हम बोलना चाहें तो थोड़ा सा रुक जाएं, सोचें, फिर बोलें । (28 सफ़र शरीफ़ 1436, 20 दिसम्बर 2014)
- «12» ख़ामोश रहने में दुन्या व आख़िरत के फ़वाइद हैं । (7 सफ़र शरीफ़ 1436, 29 नवम्बर 2014)
- «13» मुख़ातब से उस के मक़ामो मर्तबे के मुताबिक़ अच्छे अल्फ़ाज़ से बात कीजिये । (16 सफ़र शरीफ़ 1436, 6 दिसम्बर 2014)
- «14» एक दिन के बच्चे से भी तू तड़ाक़ से बात न की जाए । (8 रबीउल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015 खुसूसी)
- «15» जब तक हम ने अल्फ़ाज़ न बोले, हमारे हैं, जब ज़बान से निकल गए तो दूसरों के हो गए, वोह जो चाहें करें । (3 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435)
- «16» कहां क्या बोलना है, इस का शुऊर होना चाहिये । (18 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 27 सितम्बर 2015)
- «17» मीठे बोल में ऐसे सेहूर (जादू) है कि सरकश (ना फ़रमान), मुतीअ़ (फ़रमां बरदार) हो जाए । (4 रबीउल आख़िर 1436, 24 जनवरी 2015)
- «18» अपने मुंह से अपने लिये बड़ाई के अल्फ़ाज़ न बोले जाएं । (23 रबीउल आख़िर 1436, 12 फ़रवरी 2015)
- «19» ऐसा बोलें कि सामने वाले को आप के मज़ीद बोलने की ख़्वाहिश हो । (11 जुमादल ऊला 1436, 2 मार्च 2015 खुसूसी)
- «20» सन्जीदगी (अपनाएं मगर) ऐसी भी न हो कि मुस्कुराने के मौक़अ़ पर भी मुंह बना रहे । (8 मुहर्म्म शरीफ़ 1441)
- «21» फ़ुज़ूल बातों से इस लिये भी बचें कि फ़ुज़ूल बात करते करते कहीं गुनाहों भरी गुफ़्तगू में न पड़ जाएं । (4 ज़ी का'द शरीफ़ 1435, 30 अगस्त 2014)

﴿22﴾ फुज़ूल से बचो ताकि गुनाह में न पड़ जाओ ।

(23 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 18 अक्टूबर 2014)

﴿23﴾ तीखे बोल में ऐसा ज़हर है कि औलाद ना फ़रमान हो जाए ।

(4 रबीउल आख़िर 1436, 24 जनवरी 2015)

﴿24﴾ फुज़ूल बातों से बचने का ज़ेहन होगा तो गुनाहों भरी बातों से भी बच सकेंगे । (5 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 26 जूलाई 2020)

﴿25﴾ ख़ामोशी वोह अच्छी है जो ग़फ़लत भरी न हो ।

(10 शव्वाल शरीफ़ 1436, 26 जूलाई 2015)

﴿26﴾ सहीह मा'नों में मोहतात फ़िद्दीन (दीनी तौर पर एहतियात करने वाला, जाइज़ ना जाइज़ का ख़याल रखने वाला) वोह है जो सवाब का हरीस (तलब गार) हो और बोलने से पहले सोचता हो । (18 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 27 सितम्बर 2015)

मिलन सारी और खुश अख़लाक़ी के बारे में 33 नसीहतें

﴿1﴾ तस्ख़ीरे कुलूब (या'नी दिलों को काबू करने) का बड़ा वज़ीफ़ा चेहरे पर “मुस्कुराहट” रखना है, मगर सुन्नत की निय्यत से मुस्कुराइये और नेकी की दा'वत (देने) की ख़ातिर लोगों को करीब कीजिये ।

(25 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿2﴾ मुस्कुराहट बहुत से मसाइल हल कर देती है ।

(16 सफ़र शरीफ़ 1442, 3 अक्टूबर 2020)

﴿3﴾ दिल “तल्वार” से नहीं “हुस्ने अख़लाक़” से जीते जा सकते हैं ।

(1 सफ़र शरीफ़ 1444, 29 अगस्त 2022)

﴿4﴾ बच्चा हो या बड़ा जिस को प्यार दोगे तो प्यार पाओगे ।

(3 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 24 जूलाई 2020)

﴿5﴾ आज कल बच्चों से शफ़क़त भरा प्यार करने का रुज़्हान कम है, येह अच्छी बात नहीं ।

(3 रमज़ान शरीफ़ 1437, 9 जून 2016 बा'दे अ़स्)

﴿6﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! मुझे फ़ितरी तौर पर बच्चों से प्यार है ।

(3 रमज़ान शरीफ़ 1437, 9 जून 2016 बा'दे अ़स्)

﴿7﴾ हमारे साथ कोई हुस्ने सुलूक करे या न करे, हमें हर एक के साथ हुस्ने सुलूक करना चाहिये ।

(12 रमज़ान शरीफ़ 1437)

﴿8﴾ आदमी तो आदमी अगर “जानवर” भी नर्म मिज़ाज हो तो अच्छा लगता है ।

(3 ज़िल हज शरीफ़ 1441, 24 जूलाई 2020)

﴿9﴾ अज़िज़ी व नरमी इख़्तियार कीजिये, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ आप सब की आंखों का तारा बन जाएंगे ।

(20 रबीउ़ल आख़िर 1437)

﴿10﴾ ग़लती तस्लीम करने से इज़्ज़त घटती नहीं, बढ़ती है ।

(4 रबीउ़ल आख़िर 1437, 14 जनवरी 2016)

﴿11﴾ बच्चों, बूढ़ों और मरीज़ों को प्यार दीजिये ।

(15 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿12﴾ हमारा किरदार ऐसा होना चाहिये जिसे देख कर लोग कहें इस को “Follow” करना चाहिये ।

(16 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿13﴾ हम अल्लाह पाक के अज़िज़ बन्दे हैं, हमें अज़िज़ी ही करनी है, दादागीरी (या'नी बद मअ़ाशी) नहीं । (19 ज़ी क़ा'द शरीफ़ 1443, 19 जून 2022)

﴿14﴾ मोहसिन (या'नी एहसान करने वाले) का एहसान सारी उ़म्र मानना चाहिये ।

(25 सफ़र शरीफ़ 1442, 12 अक्टूबर 2020)

﴿15﴾ इज़्ज़त दो, इज़्ज़त मिलेगी । (25 सफ़र शरीफ़ 1442, 12 अक्टूबर 2020)

﴿16﴾ अज़िज़ी व इन्किसार के ज़रीए ही किसी शख़्स के “दिल” में दाख़िल हुवा जा सकता है ।

(4 रजब शरीफ़ 1442, 18 फ़रवरी 2021)

﴿17﴾ आप की एक मुस्कराहट किसी की नस्लों को संवार सकती है और

आप की एक बेरुख़ी किसी की नस्लों को राहे रास्त से कोसों दूर कर सकती है । (11 मुहर्रम शरीफ़ 1436)

«18» अगर हम अपनी जात से किसी को खुश नहीं कर सकते तो किसी का दिल भी न दुखाएं । (28 शा'बान शरीफ़ 1436, 15 जून 2015)

«19» जो डांट डपट करते हैं, लोग उन से जान छुड़ाते और दूर भागते हैं और जो महब्वत देते हैं, लोग उन को ढूंडते और उन के करीब होते हैं । (1 रबीउल अब्वल 1439)

«20» हमें मुसलमानों के लिये नर्म, नर्म, नर्म होना चाहिये । (3 रबीउल अब्वल 1437, 15 दिसम्बर 2015)

«21» मोमिन नर्म तबीअत और नर्म ज़बान वाला होता है । (4 रबीउल अब्वल 1436, 26 दिसम्बर 2014)

«22» नर्म मिजाज और मिलन सार से लोग महब्वत करते हैं । (4 रबीउल अब्वल 1436, 26 दिसम्बर 2014/25 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 20 अक्टूबर 2014)

«23» बड़े बहन भाई बेजा रो'ब डालें तो भी छोटे बहन भाइयों को उन की इज़्ज़त करनी चाहिये अलबत्ता बड़ों को चाहिये कि वोह छोटों से प्यार करें, नरमी से पेश आएँ और शफ़क़त भरा सुलूक करें । (9 रमज़ान शरीफ़ 1437)

«24» जो काम नरमी से होता है वोह गरमी से नहीं होता । (24 रबीउल आख़िर 1436, 13 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

«25» आप चाहे जितने बड़े निगरान हों मगर अपने मा तहूत से नरमी व महब्वत से काम लें । (24 रबीउल आख़िर 1436, 13 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

«26» सन्जीदगी अपनाइये मगर याद रखिये मुस्कुराना सन्जीदगी के ख़िलाफ़ नहीं । (1 जुमादल ऊला 1436, 20 फ़रवरी 2015)

﴿27﴾ लोग ऐसे शख़्स से दूर भागते हैं जो * ज़बान दराज़ हो * बद अख़्लाक़ हो * कपड़े साफ़ न रखता हो * लेनदेन के मुआमलात दुरुस्त न हों मसलन उधार वापस न करता हो * उस के जिस्म या कपड़ों से बदबू आती हो वग़ैरा वग़ैरा । (23 शब्वाल शरीफ़ 1436, 18 अगस्त 2015)

﴿28﴾ सन्जीदा और बा अख़्लाक़ शख़्स की बात हर कोई मानता है ।

(11 जुमादल ऊला 1436, 2 मार्च 2015 खुसूसी)

﴿29﴾ मिलन सार (खुश अख़्लाक़) बन जाइये, अगर फ़ितूरतन (By nature) मिलन सार न हों तो तकल्लुफ़न (ज़बर दस्ती) मिलन सारी कीजिये ।

(7 रबीउल आख़िर 1437, 17 जनवरी 2016)

﴿30﴾ अल्लाह पाक हमें कोई मन्सब दे तो हमारा मिज़ाज अज़ीज़ी वाला होना चाहिये ताकि हम अपने मा तहूत से भी नरमी से पेश आएँ, जब हम किसी वजह से अपने मा तहूत से सख़्त रवय्या इख़्तियार करने लगें तो सोचें कि क्या हमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने सहाबए किराम رَضُوا اللهُ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ से इस तरह बरताव करते थे ? यूँ हमारे अख़्लाक़ बेहतर हो जाएंगे । (19 रमज़ान शरीफ़ 1437, 24 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿31﴾ सब के साथ शफ़क़त और हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आएंगे तो लोग आप से महबूबत करेंगे । महबूबत दो, महबूबत लो, नफ़रत करोगे तो नफ़रत मिलेगी । (17 रबीउल आख़िर 1438)

﴿32﴾ जो हर एक को अहम्मियत दे, उसे महबूबत दे और उस की हैसियत के मुताबिक़ इज़ज़त दे तो वोह शख़्स हर दिल अज़ीज़ (सब का पसन्दीदा) होगा । (7 रमज़ान शरीफ़ 1437, 13 जून 2016 बा'दे अस्)

﴿33﴾ मुस्कुराना सुन्नत है, मुस्कुराने वालों के लोग क़रीब आते हैं, हर वक़्त रोनी सूरत बनाए रखने वालों से लोग दूर भागते हैं । (25 रमज़ान शरीफ़ 1436)

अपनी इस्लाह के बारे में 24 नसीहतें

- ﴿1﴾ जो मुझे मेरी ग़लती बताए वोह मेरा मोहसिन है। (हम सब का येह ज़ेहन होना चाहिये।) (19 शव्वाल शरीफ़ 1440)
- ﴿2﴾ जो हमें समझाए वोह हमारा “मोहसिन” है।
(19 रबीउल अब्वल 1444, 15 अक्तूबर 2022)
- ﴿3﴾ समझाने वाले पर गुस्सा नहीं करना चाहिये वरना आप अपने ऊपर इस्लाह का दरवाज़ा बन्द कर देंगे। (23 रबीउल आख़िर 1436, 12 फ़रवरी 2015)
- ﴿4﴾ वोह बड़ा बद नसीब है जिस पर इस्लाह करने वालों का दरवाज़ा बन्द हो।
(7 रबीउल आख़िर 1436, 27 जनवरी 2015)
- ﴿5﴾ काश! हम चेहरा चमकाने के बजाए अपना दिल चमकाने की कोशिश में मशगूल हो जाएं।
(11 मुहर्रम 1437, 21 अक्तूबर 2015)
- ﴿6﴾ जिसे कोई समझाने वाला नहीं वोह बड़ा “बद नसीब” है।
(19 रबीउल अब्वल 1444, 15 अक्तूबर 2022)
- ﴿7﴾ तन्कीद बरदाश्त करने वाला “बड़ा आदमी” है।
(9 रबीउल आख़िर 1444, 4 नवम्बर 2022)
- ﴿8﴾ “बोलना” आसान है मगर “कर के दिखाना” मुश्किल है।
(2 मुहर्रम शरीफ़ 1444, 2 अगस्त 2022)
- ﴿9﴾ बातिन को उजला करने के लिये सच्ची तौबा कर लीजिये।
(5 रबीउल अब्वल 1436, 27 दिसम्बर 2014)
- ﴿10﴾ हर एक को चाहिये कि दूसरों से चीज़ें मांगने से बचे, अगर येह (न मांगने वाली) आदत पुख़्ता हो जाए तो ٱَشْرَءُ ٱَللّٰهِ कई दुन्यावी फ़वाइद भी हासिल होंगे।
(20 रबीउल अब्वल 1437, 31 दिसम्बर 2015)
- ﴿11﴾ जन्नत में ले जाने वाले कामों में से एक काम “मुसल्मान को अपने शर से बचाना है।”
(3 रबीउल अब्वल 1439)

«12» ऐ काश ! हम मरने से पहले अपने नफ़्स को ज़ेर करने (मारने) में काम्याब हो जाएं। (20 रमज़ान शरीफ़ 1437, 25 जून 2016 बा'दे तरावीह)

«13» हो सकता है छोटी नज़र आने वाली नेकी ही जन्नत में ले जाए और छोटा नज़र आने वाला एक गुनाह ही जहन्नम में पहुंचा दे।

(9 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 30 जूलाई 2020)

«14» हकीकी मालदार वोह है जो साहिबे हुस्ने आ'माल (नेकियां करने वाला) है। (8 रमज़ान शरीफ़ 1437, 14 जून 2016 बा'दे अ़स्)

«15» जब नेकियां कमाने का ज़ेहन बन जाए और ज़ब्बा मिले तो फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल भी अदा करना आसान हो जाता है।

(27 शा'बान शरीफ़ 1437, 4 जून 2016)

«16» हमारे हर काम का महूवर (मक्सद) रिज़ाए इलाही होना चाहिये।

(1 मुहर्रम शरीफ़, 1436, 25 अक्टूबर 2014)

«17» हमारी ज़िन्दगी का मक्सद अल्लाह व रसूल को मनाना है मगर हम लोगों को मनाने में ख़्वार (ज़लील) हो रहे हैं।

(1 मुहर्रम शरीफ़, 1436, 25 अक्टूबर 2014)

«18» रोज़ाना एहतिसाब करना चाहिये कि ज़िन्दगी का एक कीमती दिन गुज़र गया। (9 रबीउल अव्वल 1436, 31 दिसम्बर 2014)

«19» अल्लाह पाक की रिज़ा सब से बड़ी ने'मत है, अल्लाह पाक जिस से राज़ी होगा उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।

(23 रमज़ान शरीफ़ 1437, 29 जून 2016 बा'दे अ़स्)

«20» नफ़्स को काबू करने का तरीक़ा येह है कि नफ़्स जो कहे उस की मुख़ालफ़त की जाए। (1 रमज़ान शरीफ़ 1437, 6 जून 2016 रात)

﴿21﴾ मुसलमान का लम्हा लम्हा कीमती है, इसे जाएअ होने से बचाइये ।

(3 रमज़ान शरीफ़ 1437, 9 जून 2016 बा'दे अस्)

﴿22﴾ अपनी जान बचाने के लिये दूसरे को नहीं फंसाना चाहिये ।

(20 ज़िल हज शरीफ़ 1441, 11 जूलाई 2020)

﴿23﴾ वक्त वोह अनमोल हीरा है जो एक बार जाएअ होने के बा'द दोबारा नहीं मिल सकता जब कि दौलत जाएअ हो जाए तो फिर मिल सकती है ।

(5 रबीउल आख़िर 1438)

﴿24﴾ वोह सीना अच्छा नहीं जिस में कीना भरा हो । (7 जुमादल उख़ा 1441)

दूसरों की इस्लाह के बारे में 9 नसीहतें

﴿1﴾ अगर आप किसी को समझाना चाहते हैं तो हकीमाना अन्दाज़ अपनाइये कि इस्लाह फ़क़त इसी तरह हो सकती है वरना जारिहाना अन्दाज़ ज़िद पैदा करता है ।

(15 रजब शरीफ़ 1442, 27 फ़रवरी 2021)

﴿2﴾ किसी को समझाना भी एक फ़न है, अगर समझाना आता है तो इन्फ़िरादी तौर पर समझाइये कि येह ज़ियादा फ़ाएदे मन्द है ।

(27 रबीउल आख़िर 1437, 6 फ़रवरी 2016)

﴿3﴾ जहां ज़रूरत हो वहां बेशक अलल ए'लान इस्लाह की जाए मगर आज कल बा'ज नादान लोग इस्लाह के नाम पर सोशल मीडिया के ज़रीए मुसलमान के ऐब लाखों लोगों तक पहुंचा देते हैं जिस से उस मुसलमान की इज़्ज़त महफूज़ नहीं रहती ।

(5 मुह्रम शरीफ़ 1441)

﴿4﴾ अगर आप ने किसी की इस्लाह की कोशिश की और वोह सुन्नतों का आमिल बन गया तो गोया आप ने उस की आने वाली नस्लों की इस्लाह कर दी ।

(4 रबीउल आख़िर 1436, 24 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿5﴾ नेकी की दा'वत नरमी, अ़जिज़ी और लजाजत वाले अन्दाज़ से होनी चाहिये ।

(14 रमज़ान शरीफ़ 1437, 19 जून 2016 बा'दे तरावीह)

«6» हर एक को उस की नफ़िसय्यात के मुताबिक़ नेकी की दा'वत दी जाए । (28 सफ़र शरीफ़ 1436, 20 दिसम्बर 2014)

«7» किरदार की नेकी की दा'वत गुफ़्तार की नेकी की दा'वत से ज़ियादा मुतअस्सिर कुन है । (12 जुमादल ऊला 1436, 3 मार्च 2015 खुसूसी)

«8» दीन का जितना काम करना है जवानी में कर लें, उमूमन बुढ़ापे में हिम्मत साथ नहीं देती । (13 रमज़ान शरीफ़ 1436, 30 जून 2015 बा'दे इशा)

«9» किसी की "जान" बचाना अगर्चे अच्छा काम है मगर किसी का "ईमान" बचाना इस से ज़ियादा अहम है । (26 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

उर्दू ज़बान के बारे में 2 नसीहतें

«1» उर्दू ज़बान सीखनी चाहिये क्यूं कि हमारा बहुत सा दीनी लिट्रेचर उर्दू में है । (3 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 24 जूलाई 2020)

«2» मुझे उर्दू से महबबत है, क्यूं कि कन्जुल ईमान, तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, फ़तावा रज़विय्या, बहारे शरीअत वगैरा उर्दू में हैं ।

(1 रबीउल अब्वल 1437, 13 दिसम्बर 2015)

इस्लामी कुतुब के मुतालए और इल्मे दीन के बारे में 23 नसीहतें

«1» हुसूले इल्मे दीन बहुत अहम इबादत है ।

(17 रबीउल अब्वल 1436, 8 जनवरी 2015)

«2» इल्मे दीन का अनमोल ख़ज़ाना मुतालए के ज़रीए भी हाथ आता है ।

(9 रबीउल अब्वल 1438)

«3» जो इल्मे दीन से शग़फ़ रखते हैं, मुझे उन पर बहुत प्यार आता है ।

(4 रबीउल आख़िर 1436)

«4» मुन्जियात व मोहलिकात (मुन्जियात या'नी नजात दिलाने वाले आ'माल, मोहलिकात या'नी हलाकत में डालने वाले आ'माल) का इल्म सीखेंगे तो शैतान का भरपूर मुक़ाबला हो सकेगा । (6 शबवाल शरीफ़ 1435)

﴿5﴾ इल्मे दीन हासिल करना, इस पर अमल करना और इस की इशाअत करना सब सदका है। (16 रमज़ान शरीफ़ 1436, 3 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿6﴾ इल्मे दीन हासिल करना अवरादो वजाइफ़ पढ़ने से अफ़ज़ल है।

(7 जुमादल ऊला 1436, 26 फ़रवरी 2015)

﴿7﴾ मेरे नज़्दीक पढ़ा लिखा वोह है जो कम अज़ कम देख कर कुरआने करीम दुरुस्त पढ़ लेता हो। (3 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 24 जूलाई 2020)

﴿8﴾ कुतुब तस्नीफ़ करना आसान काम नहीं, जो इस का अहल हो उसी को येह काम करना चाहिये। (1 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 26 सितम्बर 2014)

﴿9﴾ हर लिखने वाले को अल्लाह पाक से डरना चाहिये कि वोह क्या लिख रहा है। (12 रमज़ान शरीफ़ 1436, 29 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿10﴾ मुतालआ इल्मे दीन की जान है।

(8 जुमादल ऊला 1436, 27 फ़रवरी 2015)

﴿11﴾ हमारे बुजुर्ग सादा कागज़ का अदब कर गए, काश ! हमी भी अपनी कलम, कुतुब का अदब करें। (10 मुह्रम शरीफ़ 1441)

﴿12﴾ आपस में (दीनी) किताबें तक़सीम करने का रवाज डालें।

(20 रबीउल आख़िर 1437, 30 जनवरी 2016)

﴿13﴾ दीनी किताबें सस्ती बेची जाएं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा लोग इस्तिफ़ादा करें, येह दीनी मुरव्वत (अख़्लाक) का तकाज़ा है।

(16 मुह्रम शरीफ़ 1436, 9 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿14﴾ मुझे मज़हबी किताबों की कीमत को “हदिय्या” कहना पसन्द है।

(13 रबीउल अब्वल 1437, 25 दिसम्बर 2015)

﴿15﴾ किताबों और माहनामों के सरे वरक़ (Title Page) पर आयाते कुरआनी न लिखी जाएं, क्यूं कि किसी बे वुजू ने क़स्दन उसे हाथ लगाया तो वोह गुनहगार होगा। (24 रमज़ान शरीफ़ 1437, 30 जून 2016 बा'दे अ़स्)

«16» अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ हर घर में ड्रॉइंग रूम वगैरा में किताबों की अल्मारी की तरकीब बनाई जाए और उस का नाम “मदनी लायब्रेरी” रखा जाए ।
(2 रबीउल अब्वल 1437, 14 दिसम्बर 2015)

«17» तमाम आशिक़ाने रसूल इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में मदनी इल्लिजा (Request) है कि अपने घर, कारोबार की जगह, दफ़ातिर, क्लीनिक, शोरूम, वेइर्टिंग रूम या अपने ड्रॉइंग रूम (बैठक) वगैरा में जहां भी बन पड़े “मदनी लायब्रेरी” काइम कीजिये ।
(2 रबीउल अब्वल 1437, 14 दिसम्बर 2015)

«18» बहारे शरीअत की तीनों जिल्दें हर घर में होनी चाहिएं ।
(20 रबीउल अब्वल 1437, 31 दिसम्बर 2015)

«19» तफ़्सीरे “सिरातुल जिानान” इल्म का बहुत बड़ा ख़ज़ाना है ।
(19 रबीउल आख़िर 1437, 29 जनवरी 2016)

«20» इन्तिज़ार गाहों (Waiting Areas) में भी मक्तबतुल मदीना के रसाइल और किताबें रखवाई जाएं और दा'वते इस्लामी का चैनल चलवाएं ।
(25 जुमादल ऊला 1437, 5 मार्च 2016)

«21» चलते फिरते या लैट कर या फिर हर उस अन्दाज़ में जिस से आंखों पर जोर पड़ता हो मुतालआ करने से बचना चाहिये कि इस से नज़र कमज़ोर होने का अन्देशा है ।
(4 रबीउल अब्वल 1439)

«22» अपने घर में कन्जुल ईमान ज़रूर रखिये ।
(8 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 22 सितम्बर 2015)

«23» किसी ने कोई किताब अमानत के तौर पर दी हो तो उस की इजाज़त के बिगैर खोल कर न देखें । (3 रमज़ान शरीफ़ 1436, 20 जून 2015 बा'दे अस्स)

अपनी शख़्मय्यत निखारने के बारे में 15 नसीहतें

«1» कोई काम करना हो तो (उसे) सन्जीदा (Serious) लेना होगा, इन्सान

सन्जीदगी से कोई काम करे तो मन्ज़िल पा लेता है ।

(20 शब्वाल शरीफ़ 1435, 16 अगस्त 2014)

﴿2﴾ एक तरफ़ की बात सुन कर राय काइम नहीं करनी चाहिये ।

(17 रमज़ान शरीफ़ 1436, 4 जूलाई 2015 बा'दे तरावीह)

﴿3﴾ बेजा ज़ब्जातियत (इन्सान को) फंसा देती है ।

(18 रबीउल आख़िर 1436, 7 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿4﴾ कर्ज़ा टेन्शन लाता और नींद उड़ाता है ।

(20 जी का'द शरीफ़ 1441, 11 जूलाई 2020)

﴿5﴾ हरकत में बरकत है कि जो पानी चलता है वोह ताज़ा रहता है और जो रुका रहता है ख़राब हो जाता है ।

(9 रबीउल अब्वल 1438)

﴿6﴾ किसी को उसूल का पाबन्द बनाने का बेहतरीन तरीका येह है कि खुद उसूल के पाबन्द बन जाएं ।

(18 सफ़र शरीफ़ 1443, 26 सितम्बर 2021)

﴿7﴾ अपनी शख्सियत को निखारने की बजाए अपने नामए आ'माल को निखारने की फ़िक्र कीजिये ।

(18 सफ़र शरीफ़ 1443, 26 सितम्बर 2021)

﴿8﴾ अपनी ग़लती को मानने के लिये अना (मैं) को फ़ना करना होगा ।

(11 जुमादल ऊला 1436, 2 मार्च 2015 खुसूसी)

﴿9﴾ नफ़ासत पसन्दी का तकाज़ा येह है कि पियाला या गिलास वगैरा इस तरह उठाया जाए कि अंगूठा अन्दर बल्कि किनारे पर भी न आए । पेंदे की जानिब से उठाइये ।

(23 रमज़ान शरीफ़ 1436, 10 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿10﴾ कोशिश की जाए कि किसी का एहसान न लिया जाए, यूं खुददारी से वक़ार बुलन्द होता है ।

(3 रबीउल आख़िर 1437, 13 जनवरी 2016)

﴿11﴾ ऐसा काम या अन्दाज़ मत इख़्तियार कीजिये जिस से लोग दीन से दूर हों ।

(30 जी का'द शरीफ़ 1441, 21 जूलाई 2020)

﴿12﴾ किसी को राहत नहीं पहुंचा सकते तो तक्लीफ़ भी न दी जाए ।

(13 रबीउल आख़िर 1437, 23 जनवरी 2016)

﴿13﴾ मुआफ़ी मांगने से वेल्यू (Value) डाउन (Down) नहीं अप (Up) होती है ।
(23 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 18 अक्टूबर 2014)

﴿14﴾ टेन्शन हज़ार बीमारियों को जनम देता है ।
(29 शब्वाल शरीफ़ 1441, 20 जून 2020)

﴿15﴾ वक्त एक ने'मत है और ने'मत की कद्र उस के ज़वाल (या'नी ख़त्म होने) के बा'द होती है लिहाज़ा इस वक्त को कीमती बनाते हुए नेकियों में गुज़ारिये ।
(4 रजब शरीफ़ 1440)

उलमाए किराम के बारे में 18 नसीहतें

﴿1﴾ मुआशरे (Society) का सब से मुअज़्ज़ज़ (Respectable) और अक्लमन्द तबका उलमाए किराम का है । उलमाए किराम पर तन्कीद नहीं बल्कि इन का अदबो एहतिराम कीजिये ।
(2 मुहर्रम शरीफ़ 1441)

﴿2﴾ उलमाए अहले सुन्नत से मरबूत रह कर दीनी काम करना है, येह हमारे सर के ताज हैं ।
(4 जुमादल उला 1437, 13 फ़रवरी 2016)

﴿3﴾ अ़ल्लिमे दीन ब जाहिर सादा हो, मगर इल्म की वज्ह से आ़म लोगों से मुमताज़ और बेहतरीन शख़्सियत होता है ।
(12 रबीउल आख़िर 1437)

﴿4﴾ सहीहुल अ़कीदा सुन्नी व बा अ़मल अ़ल्लिमे दीन की सोहबत में रहने वाले शख़्स को इल्म व रूहानियत दोनों हासिल होते हैं ।
(21 सफ़र शरीफ़ 1436)

﴿5﴾ अपने मुंह से अपने आप को अ़ल्लामा या अ़ल्लिम कहलवाने की बजाए अ़जिज़ी करनी चाहिये ।
(19 शब्वाल शरीफ़ 1440)

﴿6﴾ अ़ल्लिम व मुफ़ती को भी एहयाउल उलूम घोल घोल कर पीनी चाहिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** फ़तावा में निखार आ जाएगा ।
(20 शब्वाल शरीफ़ 1440)

﴿7﴾ अहले इल्म येह ग़ौर करे कि क्या बे पढ़ा फ़र्द मुझे हकीर लगता है या नहीं ? और अल्लाह पाक से डरे कि कहीं सामने वाला अल्लाह पाक की बारगाह में मक्बूल न हो ।
(20 शब्वाल शरीफ़ 1440)

«8» अहले इल्म और अहले इल्म के सच्चे सोहबत याफ़ता (पैरौकार) खुदकुशी नहीं करते। (25 मुहर्म्म शरीफ़ 1437, नवम्बर 2015)

«9» आशिक़ाने रसूल उलमा के ख़िलाफ़ ज़बान दराज़ी (उलमा की गुस्ताख़ियां) करने से ईमान ख़तरे में पड़ सकता है।

(17 रमज़ान शरीफ़ 1437, 22 जून 2016 बा'दे तरावीह)

«10» अगर आलिम से ग़लती से ग़लत मस्अला बयान हो जाए तो इज़ाला करने (अपनी ग़लती तस्लीम करते हुए दुरुस्त मस्अला बताने) में शरमाना नहीं चाहिये। (ख़ौफ़े खुदा वाले उलमा ऐसे ही करते हैं।)

(3 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 24 जूलाई 2020)

«11» मेरी माली ख़िदमत करने का ज़ब्बा रखने वाले मेरे बदले अपने अल्लाके के सहीहुल अक़ीदा सुन्नी आलिमे दीन की ख़िदमत करें।

(5 मुहर्म्म शरीफ़ 1436)

«12» “सन्जीदगी” आलिम का ज़ेवर है। (15 रबीउल अब्वल 1444)

«13» मज़हबी लोगों को ज़ियादा मोहतात रहना चाहिये कि सफ़ेद कपड़े पर दाग़ दूर ही से नज़र आ जाता है। (4 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 25 जूलाई 2020)

«14» हर फ़र्द को आलिम बनने की कोशिश करनी चाहिये, आलिम होना बहुत बड़ी सआदत है। (18 रबीउल आख़िर 1436, 7 फ़रवरी 2015)

«15» मक्तबतुल मदीना (शो'बा अरबी कुतुब) से कम अज़ कम एक अरबी किताब ख़रीदें, पढ़ने की सलाहियत न हो तो किसी सुन्नी आलिम को तोहफ़ा दे दें। (22 सफ़र शरीफ़ 1437, 5 दिसम्बर 2015)

«16» जो आलिम और पीर घर घर जा कर मिज़ाज पुर्सी करते (ख़ैरियत पूछते), दुखदरद में हिस्सा लेते, हुस्ने अख़्लाक़ और नरमी से पेश आते हैं, वोह लोगों के दिलों में उतर जाते हैं। (27 रबीउल आख़िर 1437, 6 फ़रवरी 2016)

﴿17﴾ मौक़अ देख कर और इजाज़त ले कर अ़ालिम से मस्अला पूछा जाए, अ़ालिम साहिब मन्अ कर दें तो नाराज़ न हों ।

(7 रमज़ान शरीफ़ 1437, 13 जून 2016 बा'दे अ़स्)

﴿18﴾ मुफ़ती बहुत अ़क्लमन्द होता है ।

(6 रबीउल आख़िर 1436, 26 जनवरी 2015)

तलबा और असातिजए किराम के लिये 11 नसीहतें

﴿1﴾ दीनी त़लबाए किराम और इस्लामी मुतालाआ करने वालों को दीनी कुतुब मुम्किन हो तो अपनी जेब ही से ख़रीदनी चाहिए, **بَرَكَاتٍ مِّنْ شَأْنِ اللَّهِ** बरकतों में इज़ाफ़ा होगा ।

(6 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 27 जूलाई 2020)

﴿2﴾ त़लबा मुल्क का अहम “सरमाया” होते हैं और येह मुल्क की “तक्दीर” बदल सकते हैं ।

(10 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿3﴾ अगर त़लबा के अख़्लाक़ दुरुस्त हो जाएं और इन में सहीह मा'नों में सन्जीदगी आ जाए तो येह दीन की बहुत ख़िदमत कर सकते हैं ।

(15 मुह्रम शरीफ़ 1436, 8 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿4﴾ उस्ताद को अपने त़लबा की नफ़िसय्यात परख़ना आना चाहिये ।

(11 जुमादल ऊला 1436, 2 मार्च 2015 खुसूसी)

﴿5﴾ उस्ताद की काबिलियत इस में है कि वोह कुन्द ज़ेहन त़ालिबे इल्म को पढ़ा कर इम्तिहान में काम्याब कर दे । (3 ज़िल हज़ शरीफ़ 1443, 2 जून 2022)

﴿6﴾ मैं त़लबाए किराम को इल्मे दीन हासिल करने का हरीस होने के साथ साथ मदनी कामों⁽¹⁾ का हरीस भी देखना चाहता हूं । (11 रबीउल 1438)

﴿7﴾ उस्ताद और किताबों का ज़ियादा से ज़ियादा एहतिराम किया जाए, **بَرَكَاتٍ مِّنْ شَأْنِ اللَّهِ** इल्म की रूह हासिल होगी । (11 मुह्रम शरीफ़ 1436, 4 नवम्बर 2014)

1 ... दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह में अब मदनी काम को दीनी काम कहा जाता है ।

«8» क़लम, इल्म सीखने का आला है, इस का अदब किया जाए ।

(20 रजब शरीफ़ 1436, 9 मई 2015)

«9» बिला ज़रूरत अपना निगरान, उस्ताज़ या अ़लिम होना न बताया जाए ।

(23 रबीउल आख़िर 1436, 12 फ़रवरी 2015)

«10» सिर्फ़ दर्सें निज़ामी के निसाब से अ़लिमे दीन बनना मुश्किल है, इस के लिये मज़ीद इस्लामी कुतुब का मुतालाआ ज़रूरी है ।

(23 रबीउल आख़िर 1436, 12 फ़रवरी 2015)

«11» दीनी ता'लीम हासिल करने वाले का मुस्तक़बल (या'नी क़ब्रो आख़िरत) रोशन व ताबनाक है ।

(10 मुहर्रम शरीफ़ 1436)

हुफ़्फ़ाज़े किराम के बारे में 4 नसीहतें

«1» तमाम हाफ़िज़े कुरआन रोज़ाना एक मन्ज़िल कुरआने पाक पढ़ने की कोशिश फ़रमाएं ।

(19 रबीउल आख़िर 1436, 8 फ़रवरी 2015)

«2» हाफ़िज़ को सारा साल कुरआने मज़ीद की तिलावत करते रहना चाहिये, ताकि मन्ज़िल पक्की रहे ।

«3» अस्ल हाफ़िज़े कुरआन वोह है जो कुरआन के अहक़ाम माने और अमल करे ।

(6 रबीउल अव्वल 1436, 28 दिसम्बर 2014)

«4» तज्वीद व क़िराअत के साथ कुरआने करीम पढ़ने वाला “क़ाबिले रशक” है ।

(2 मुहर्रम शरीफ़ 1444, 2 अगस्त 2022)

माहे रमज़ान के बारे में 6 नसीहतें

«1» माहे रमज़ान के आने पर खुश और जाने पर ग़मज़दा होना खुश नसीबों का हिस्सा है ।

(28 रमज़ान शरीफ़ 1443, 30 एप्रिल 2022)

«2» बा'ज लोग येह समझते हैं कि खज़ूर, पानी या नमक से रोज़ा इफ़्तार करना ज़रूरी है, ऐसा नहीं है बल्कि किसी भी खाने या पीने की चीज़ से रोज़ा इफ़्तार कर सकते हैं ।

(18 रमज़ान शरीफ़ 1437)

﴿3﴾ माहे रमज़ान में मुकम्मल कुरआने करीम की तिलावत कीजिये ।
रोज़ाना तिलावते कुरआन के लिये कम अज़ कम एक घन्टा मख़सूस कर
लें । (1 रमज़ान शरीफ़ 1437, 7 जून 2016 बा'दे अ़स्)

﴿4﴾ रमज़ानुल करीम में नोट कमाने की बजाए “नेकियां कमाने” पर
तवज्जोह देनी चाहिये । (22 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿5﴾ मुसलमानों को सस्ता माल बेच कर रमज़ानुल मुबारक में नेकियां
कमाइये कि रमज़ानुल मुबारक माल नहीं बल्कि नेकियां कमाने का महीना
है । (1 रमज़ान शरीफ़ 1443, 2 एप्रिल 2022)

﴿6﴾ रमज़ानुल मुबारक, नेकियां करने वालों और जन्नत में जाने वालों का
सीज़न (Season) है । (16 रमज़ान शरीफ़ 1436, 4 जूलाई 2015 बा'दे अ़स्)

अच्छी सोहबत और दोस्तों के बारे में 12 नसीहतें

﴿1﴾ अच्छे दोस्त को पहचानने के लिये उस के साथ सफ़र करें या कोई
मुआमला मसलन ख़रीदो फ़रोख़्त वग़ैरा करें ।

(1 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 26 सितम्बर 2014)

﴿2﴾ ऐसे लोगों की सोहबत में बैठना चाहिये जिन के आ'माल के साथ साथ
अक़्ाइदो नज़रिय्यात भी सो फ़ीसद कुरआनो हदीस के मुताबिक़ हों ।

(7 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 28 जूलाई 2020)

﴿3﴾ ग़फ़लत से बचने के लिये ग़ाफ़िलों की सोहबत से बचना होगा ।

(29 मुह्रम शरीफ़ 1444, 27 अगस्त 2022)

﴿4﴾ महबबते औलिया बढ़ाने का एक तरीक़ा येह है कि औलियाए किराम से
महबबत रखने वालों की सोहबत इख़्तियार की जाए । (8 रबीज़ल अब्वल 1438)

﴿5﴾ रंग बातों से कम और सोहबत से ज़ियादा चढ़ता है ।

(25 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 20 अक्टूबर 2014)

﴿6﴾ बुरी सोहबत, ईमान के लिये ज़हरे कातिल है ।

(27 रमज़ान शरीफ़ 1436, 12 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿7﴾ मैं पौने दो माह सय्यिदी कुल्बे मदीना رَضِيَ اللهُ عَنْهُ کی सोहबत में रहा मगर कभी आप को कहकहा लगाते नहीं देखा ।

(25 रमज़ान शरीफ़ 1437, 30 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿8﴾ 100 किताबें एक तरफ़, एक लम्हे की अच्छी सोहबत एक तरफ़ ।

(1 रबीउल अब्वल 1437, 13 दिसम्बर 2015)

﴿9﴾ बा'ज अवकात किसी नेक शख्स के पास बैठने से तक्दीर बदल जाती है ।

(17 रबीउल अब्वल 1436, 8 जनवरी 2015)

﴿10﴾ दिल जिक्रे इलाही से गाफ़िल न हो, इस के लिये सोहबते सालेह (नेकों की सोहबत) ज़रूरी है ।

(10 शव्वाल शरीफ़ 1436, 26 जूलाई 2015)

﴿11﴾ अच्छी सोहबत नायाब नहीं तो कमयाब ज़रूर है ।

(28 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿12﴾ अच्छा दोस्त वोह है जिस को देख कर खुदा याद आए ।

(1 रमज़ान शरीफ़ 1443, 2 एप्रिल 2022)

मियां बीवी के लिये 5 नसीहतें

﴿1﴾ मियां बीवी येह मुआहदा (Pact) कर लें की आपस में होने वाली नाराज़ी का अपने अपने वालिदैन वगैरा को नहीं बताएंगे ।

(13 ज़ी का'द शरीफ़ 1441, 4 जूलाई 2020)

﴿2﴾ बहू अगर सास सुसर की खिदमत करेगी तो उसे शौहर की रिज़ा नसीब होगी ।

(22 रमज़ान शरीफ़ 1437, 27 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿3﴾ शौहर को खुश करना अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये हो तो इबादत है ।

(15 रजब शरीफ़ 1437, 23 एप्रिल 2016)

﴿4﴾ अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये शरीअत के दाएरे में रहते हुए शौहर को खुश करना बहुत बड़े सवाब का काम है । (15 रजब शरीफ़ 1437, 23 एप्रिल 2016)

﴿5﴾ घरेलू मसाइल का एक हल यह है कि फ़रीक़ैन (मियां, बीवी) में से एक सब्र करे ।
(15 रजब शरीफ़ 1437, 23 एप्रिल 2016)

वालिदैन के लिये 42 नसीहतें

﴿1﴾ वालिदैन को चाहिये कि सब से पहले अपने बच्चों को दीन की ज़रूरत ता'लीम दें ।
(13 ज़ी का'द शरीफ़ 1441, 4 जूलाई 2020)

﴿2﴾ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ अपने बच्चों को बहादुरी की तरबियत दिया करते थे । हमारे बच्चे शेर की तरह बहादुर होने चाहिए ।

(4 ज़िल हज शरीफ़ 1435, 29 सितम्बर 2014)

﴿3﴾ अपने बच्चों को शेर बनाओ, दा'वते इस्लामी के रिसाले पढ़ाओ, भूतों परियों की कहानियों से बचाओ । (2 रबीउल अब्वल 1436, 24 दिसम्बर 2014)

﴿4﴾ बच्चों को डराना कि “बाउ आ गया, जिन्न खा जाएगा, फ़कीर उठा कर ले जाएगा, बोरी वाला पकड़ लेगा” वगैरा जुम्ले बोलने से वोह बुज़दिल हो जाएंगे । बच्चों को बुज़दिल (या'नी बकरी के दिल वाला) नहीं बल्कि शेरदिल (बहादुर) बनाना है ।
(13 रजब शरीफ़ 1436, 2 मई 2015)

﴿5﴾ बच्चों में येह फ़ितरी (या'नी कुदरती Natural) बात होती है कि वोह बड़ों की नक्क़ाली (या'नी उन्हें Copy) करते हैं, अगर घर में नमाज़ों का माहोल होगा तो बच्चे भी नमाज़ों की नक्क़ाली करेंगे और अगर (مَعَادَ اللَّهِ) गाने बाजे या डान्स का माहोल होगा तो बच्चे भी डान्स करेंगे । (19 सफ़र शरीफ़ 1441)

﴿6﴾ बच्चों को “मोबाइल” से दूर रखने में ही अफ़ियत है ।

(13 रजब शरीफ़ 1442, 25 फ़रवरी 2021)

﴿7﴾ बचपन ही से अपनी बच्ची को हया का दर्स दीजिये । मां को चाहिये कि (छोटी) बच्ची को चुस्त पाजामा न पहनाए ।

(13 ज़ी का'द शरीफ़ 1441, 4 जूलाई 2020)

﴿8﴾ अशिकाने रसूल अपनी बच्चियों को पूरी आस्तीन वाले और ज़नाना कपड़े पहनाया करें। (17 रमज़ान शरीफ़ 1437, 23 जून 2016 बा'दे अस्)

﴿9﴾ अपने बच्चों और बच्चियों को इस्लामी मा'लूमात पर मुश्तमिल सुवालात और उन के जवाबात याद करवाएं।

(20 जुमादल ऊला 1438, 18 फ़रवरी 2017)

﴿10﴾ मां बाप को चाहिये कि वोह बच्चों को प्यार व महब्बत और हिक्मते अमली से समझाएं, बात बात पर झाड़ना, मारना और चीख़ चीख़ कर समझाना बच्चों को बागी (ना फ़रमान) बना सकता है। (13 रजब शरीफ़ 1436)

﴿11﴾ वालिदैन को चाहिये कि बच्चों की शादी तै करने से पहले उन की रिज़ामन्दी ज़रूर हासिल कर लें वरना शादी के बा'द घर ख़राब होने का अन्देशा रहता है।

(9 रबीउल अब्वल 1439)

﴿12﴾ बा'ज़ बातें मसलन ना बालिग़ का गुनाह लिखा नहीं जाता वग़ैरा बच्चों को नहीं बतानी चाहिएं कि इस से बच्चे बेबाक (बे ख़ौफ़) हो जाते हैं और शैतान उन्हें खिलोना बना लेता है। बच्चों के दिल में ख़ौफ़े खुदा होगा तो वोह इबादत करेंगे। (20 रमज़ान शरीफ़ 1437, 25 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿13﴾ वालिदैन अपनी औलाद पर येह ज़ाहिर न करें कि हम अपने फुलां बेटे या बेटी से ज़ियादा महब्बत करते हैं वरना दीगर एहसासे कमतरी का शिकार होंगे और येह उन के लिये बाइसे हलाकत (बाइसे नुक़सान) होगा।

(18 ज़ी का'द शरीफ़ 1435, 13 सितम्बर 2014)

﴿14﴾ वालिदैन अपनी हाफ़िज़ औलाद को रोज़ाना कुरआने पाक पढ़ने की तरगीब दिलाते रहें ताकि उन का हिफ़ज़े कुरआन बाकी रहे।

(19 रबीउल आख़िर 1436, 8 फ़रवरी 2015)

﴿15﴾ हर मुसल्मान को चाहिये कि कम अज़ कम अपने एक बेटे और बेटी को अ़ालिम व अ़ालिमा ज़रूर बनाए।

(10 मुह्रम शरीफ़ 1436)

﴿16﴾ बेटा पैदा हो तो येह निय्यत करें कि मैं अपने बच्चे को हाफिजे कुरआन और जामिअतुल मदीना में दाखिल करवा कर आलिम बनाऊंगा ।

إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمِ

(18 जुमादल ऊला 1437, 27 फ़रवरी 2016)

﴿17﴾ बच्चों को आसान आसान अहादीस और नेक लोगों के वाकिआत सुना कर नेकी का जज्बा दिया जाए ।

(9 रमज़ान शरीफ़ 1437, 15 जून 2016 बा'दे अस्)

﴿18﴾ घर में (ख़दा न ख़्वास्ता) गुनाहों भरे चैनल चलाएंगे तो बच्चे भी गाने गुनगुनाएंगे और फ़िल्मी डायलोग बोलेंगे जब कि दा'वते इस्लामी का चैनल चलाएंगे तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ इस की बरकत से बच्चों के ईमान की हिफ़ाज़त, किरदार में निखार और ज़बान पर ज़िक्रो दुरूद रहेगा । (19 सफ़र शरीफ़ 1441)

﴿19﴾ जिस का बेटा बे अमल हो उस को उस के बेटे की बे अमली का ता'ना देना दिल आज़ारी है । (16 रबीज़ल आख़िर 1436, 5 फ़रवरी 2015)

﴿20﴾ घर में दा'वते इस्लामी का चैनल चलता रहेगा तो आप के बच्चों की इस्लाह का सामान होता रहेगा । إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمِ

(6 जी का'द शरीफ़ 1441, 27 जून 2020)

﴿21﴾ बच्चों को चोकलेट, टॉफ़ियां, चिप्स वगैरा खिलाने की बजाए दूध, फल और सब्जियां वगैरा खिलाइये, إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمِ बच्चों की सिहहत अच्छी रहेगी ।

(2 मुहर्रम शरीफ़ 1444, 2 अगस्त 2022)

﴿22﴾ शुरूअ से ही बच्चों को ज़ियादा खाने पीने और अच्छे अच्छे लिबास से बे रज़त किया जाए । (5 रबीज़ल आख़िर 1436, 25 जनवरी 2015)

﴿23﴾ बच्चों की जितनी फ़रमाइशें पूरी करेंगे उतनी बढ़ती जाएंगी, शुरूअ ही से कन्ट्रोल करना चाहिये । (24 रबीज़ल आख़िर 1436, 13 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿24﴾ बच्चों को “टाटा” न सिखाइये बल्कि फ़ी अमानिल्लाह, खुदा हाफिज़ या سَلَامٌ عَلَيْكُمْ याद करवाइये । (1 जुमादल ऊला 1436, 20 फ़रवरी 2015)

﴿25﴾ अपने बच्चों के सामने इस निय्यत से “अल्लाह अल्लाह” किया करें कि वोह भी “अल्लाह अल्लाह” करने वाले बन जाएं ।

(14 जुमादल ऊला 1438, 11 फ़रवरी 2017)

﴿26﴾ बच्चों को बचपन से जेब ख़र्ची देना शुरू न करें, घर में ही खाने की चीज़ें बना कर दिया करें । (9 जुमादल ऊला 1436, 28 फ़रवरी 2015)

﴿27﴾ बच्चों को जानवरों के साथ हुस्ने सुलूक का ज़ेहन देना चाहिये ।

(30 ज़ी का'द शरीफ़ 1435, 25 सितम्बर 2014)

﴿28﴾ बच्चों से झूट बोलने वालों में सितारए हमाक़त (या'नी बे वुकूफ़ी का इन्आम) तक्सीम करना चाहिये कि वोह अपने हाथों से बच्चों के अख़लाक़ तबाह करते हैं ।

(13 रजब शरीफ़ 1436, 2 मई 2015)

﴿29﴾ बच्चों को अच्छे काम करने पर हौसला अफ़ज़ाई करते हुए इन्आम देना चाहिये ।

(15 रबीउल अव्वल 1437, 26 दिसम्बर 2015)

﴿30﴾ बच्चे जो कपड़े पसन्द करें उस में कोई मस्अला या शर्ई ख़राबी मसलन जानदारों की तसावीर या मज़बूती के ए'तिबार से क्वोलिटी दुरुस्त न हो तो बच्चों की दिलजूई करते हुए उन की पसन्द को तरजीह दिया करें । إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمُ इस से उन की दिलजूई का सवाब मिलेगा और वोह लिबास पहनने में बच्चों को भी रज़बत होगी ।

(20 रमज़ान शरीफ़ 1437, 25 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿31﴾ बच्चों के दिल में भी ख़ौफ़े खुदा पैदा करना चाहिये ।

(20 रमज़ान शरीफ़ 1437, 25 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿32﴾ जब कोई तबीअत पूछे तो जवाब में أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ कहा जाए, बच्चों को भी येही सिखाया जाए । (7 सफ़र शरीफ़ 1436, 29 नवम्बर 2014)

«33» हराम के खिलाफ ए'लाने जंग है "न हराम खाएंगे न अपने बच्चों को खिलाएंगे ।"

(26 शा'बान शरीफ 1436, 13 जून 2015)

«34» औलाद को नेक बनाने का ज़ब्बा अच्छा है मगर इस के लिये बे जा ज़ब्बाती होना दुरुस्त नहीं । (17 रमज़ान शरीफ 1436, 5 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

«35» बच्चे को कुन्द ज़ेहन या पढ़ाई में कमज़ोर वगैरा कहना, उसे मज़ीद कुन्द ज़ेहन बना सकता है । इस लिये ऐसा कहने से इज्तिनाब कीजिये ।

(22 रमज़ान शरीफ 1436, 10 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

«36» अपनी औलाद को भी बिना ज़रूरत झाड़ने और दिल आज़ारी की इजाज़त नहीं । नर्म लहजे से समझा कर औलाद से काम लेना चाहिये ।

(17 रमज़ान शरीफ 1436, 5 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

«37» औलाद की इस्लामी उसूलों के मुताबिक़ तरबियत करना और कुरआनी हुक्म पर अमल करना ज़रूरी है ।

(6 रमज़ान शरीफ 1437, 11 जून 2016 बा'दे तरावीह)

«38» जो ना बालिग़ बच्चे बरदाश्त कर सकते हों तो उन्हें रोज़े रखवाए जाएं ।

(13 रमज़ान शरीफ 1436, 1 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

«39» मैं येह चाहता हूं कि हमारे बच्चे बच्चे के ज़ेहन में येह बैठ जाए कि "صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ" अल्लाह पाक के आखिरी नबी हैं ।

(2 ज़िल हज शरीफ 1441, 23 जूलाई 2020)

«40» बच्चे की सालगिरह (Birth Day) पर कुरआन ख़्वानी या महफ़िले ना'त की तरकीब बनाई जाए । म्यूज़िकल प्रोग्राम, मर्दों औरतों के इख़्तिलात (Mix) होने और तालियां बजाने से मुकम्मल बचा जाए । सिर्फ़ वोही काम किया जाए जो अल्लाह पाक की रिज़ा का बाइस हो ।

(26 रमज़ान शरीफ 1437, 1 जूलाई 2016 बा'दे तरावीह)

«41» बच्चियों को भी कभी कभी मदनी बुरक़अ पहनाना चाहिये ताकि

बड़ी होने से पहले ही पर्दे का जेहन बने ।

(19 रबीउल अव्वल 1436, 10 जनवरी 2015)

﴿42﴾ बच्चों की भी दिलजूई की जाए । (28 शा'बान शरीफ 1436, 15 जून 2015)

औलाद के लिये 11 नसीहतें

﴿1﴾ सलीका मन्द औलाद अपने वालिदैन के सामने बुलन्द आवाज़ से बात नहीं करती बल्कि उन का अदब करती और उन के हाथ पाउं चूमती है ।

(6 रमज़ान शरीफ 1436)

﴿2﴾ वालिदैन से खिदमत लेने की बजाए इन की खिदमत करें ।

(16 ज़िल हज शरीफ 1435, 11 अक्टूबर 2014)

﴿3﴾ औलाद को चाहिये कि मां बाप का इलाज अपना पेट काट कर (या'नी रूखी सूखी खा कर और तंगी से गुज़ारा कर के) भी करवाना पड़े तो करवाए ।

(21 मुहर्रम शरीफ 1436)

﴿4﴾ मां बाप की क़द्र कीजिये कि इन का ने'मल बदल (Alternate) कोई नहीं है ।

(7 जुमादल ऊला 1436)

﴿5﴾ तंगदस्ती के अस्बाब में से येह भी है कि मां बाप को नाम ले कर पुकारा जाए ।

(16 सफ़र शरीफ 1436, 6 दिसम्बर 2014)

﴿6﴾ येह तमन्ना करना दुरुस्त नहीं कि मेरे मां बाप मुझे सब बहन भाइयों से ज़ियादा प्यार करें, अलबत्ता येह तमन्ना कर सकते हैं कि मुझे बहुत प्यार करें और इस के लिये उन का हर जाइज़ काम फ़ौरन करे और उन की ख़ूब खिदमत करे ।

(4 रमज़ान शरीफ 1437, 10 जून 2016 बा'दे अस्)

﴿7﴾ मां बाप को सताना आखिरत के साथ साथ दुन्या में भी नुक़सान का बाइस है ।

(15 रमज़ान शरीफ 1437, 20 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿8﴾ मां बाप की फ़रमां बरदारी करना भी उन के एहसानात का शुक्रिय्या अदा करने की एक सूरत है । (16 रमज़ान शरीफ 1437, 22 जून 2016 बा'दे अस्)

﴿9﴾ बेटा आलिम हो और बाप ग़ैरे आलिम, फिर भी बेटे पर अपने बाप का एहतिराम लाज़िम है, एहतिराम करेगा तो दोनों जहां में सईद (या'नी खुश नसीब) होगा। **اِنْ شَاءَ اللهُ** (11 मुहर्रम शरीफ़ 1436)

﴿10﴾ अगर घर में किसी की हक़ तलफ़ी होती हो, मसलन वालिदा बीमार है और हमारी ख़िदमत की हाज़त मन्द है तो ऐसी सूरत में मदनी काफ़िले में सफ़र की इजाज़त नहीं। (15 सफ़र शरीफ़ 1437, 28 नवम्बर 2015)

﴿11﴾ अगर घर वाले दाढ़ी रखने से मन्अ करें तो अपने अच्छे किरदार और आंसूओं के ज़रीए मनाइये। (10 मुहर्रम शरीफ़ 1441)

सास बहू के लिये 3 नसीहतें

﴿1﴾ मैं ने अपनी बेटी को मुबालग़तन 100 मरतबा कहा होगा कि अपने सास सुसर की ख़िदमत वालिदैन समझ कर करो। इसी तरह अपनी नवासियों को भी कहता रहता हूँ कि अपने दादा दादी की ख़ूब ख़िदमत किया करो। (22 रमज़ान शरीफ़ 1437, 27 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿2﴾ सास अपनी बहू को बेटी से ज़ियादा अहम्मियत दे तो घर अम्न का गहवारा बन जाए। (9 रबीउल आख़िर 1437, 19 जनवरी 2016)

﴿3﴾ इस्लामी बहनें जब मयके जाएं तो सिलए रेहूमी (रिश्तेदारों के साथ अच्छे बरताव) की निय्यत कर लें और मयके जा कर सुसराल की ख़ामियां या सुसराल आ कर मयके की ख़ूबियां बयान न करें, **اِنْ شَاءَ اللهُ** घर अम्न का गहवारा बना रहेगा। (22 रबीउल अब्वल 1437, 02 जनवरी 2016)

क़ब्रों आख़िरत के बारे में 20 नसीहतें

﴿1﴾ अक़्लमन्द आख़िरत को तरजीह देता है और इस की बरकात दुन्या में भी पाता है। (24 रबीउल आख़िर 1436, 13 फ़रवरी 2015)

﴿2﴾ क़ब्रिस्तान जाते रहिये कि इस से इब्रत हासिल होती है।

(8 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 1 नवम्बर 2014)

﴿3﴾ क़ब्रिस्तान “इब्रत” का मक़ाम है। (15 रजब शरीफ़ 1442, 27 फ़रवरी 2021)

﴿4﴾ आखिरत के ए’तिबार से क़ब्र पहली मन्ज़िल है।

(10 रबीउल आख़िर 1436, 30 जनवरी 2015)

﴿5﴾ टूटी फूटी क़ब्रें देखने से इब्रत हासिल होती है।

(1 मुहर्रम शरीफ़ 1437, 15 अक्टूबर 2015)

﴿6﴾ दौराने अज़ान कई बार मेरा येह तसव्वुर बंध जाता है कि गोया मैं क़ब्र में हूँ और मेरी क़ब्र पर अज़ान हो रही है।

(4 रमज़ान शरीफ़ 1436, 21 जून 2015 बा’दे इशा)

﴿7﴾ याद रखिये ! दुन्या न किसी के काम आई है, न आएगी और न ही क़ब्र में साथ जाएगी।

(1 मुहर्रम शरीफ़ 1436)

﴿8﴾ हमें घर की रोशनी के साथ साथ क़ब्र की रोशनी की भी फ़िक्र करनी चाहिये।

(3 रबीउल अव्वल 1437, 15 दिसम्बर 2015)

﴿9﴾ नए घर में शिफ़्ट होते वक़्त क़ब्र में होने वाली शिफ़्टिंग को याद कीजिये।

(30 ज़ी क़ा’द शरीफ़ 1441, 21 जूलाई 2020)

﴿10﴾ अफ़सोस ! आज कल ग़फ़लत का दौर दौरा है, ख़ौफ़ की चीज़ें मसलन बादल का गरजना और बिजली का कड़कना वगैरा में लोग तौबा इस्तिफ़ार के बजाए उछल कूद करते और लुत्फ़ उठाते हैं।

(5 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 29 अक्टूबर 2014 खुसूसी)

﴿11﴾ तेज़ आंधी या शदीद बारिश वगैरा के मनाज़िर से लुत्फ़ अन्दोज़ होने की बजाए इन से इब्रत हासिल करनी चाहिये।

(18 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 8 अगस्त 2020)

﴿12﴾ हर बच्चे की पैदाइश (Birth) के साथ रुख़सत (या’नी मौत भी) खड़ी होती है।

(4 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 25 जूलाई 2020)

«13» मौत को याद करने के लिये किसी ऐसी जगह “अल मौत” लिखिये जिस पर आप की नज़र पड़ती रहे । (7 मुहर्म्म शरीफ़ 1436)

«14» सोने के लिये वोह चटाई इस्ति'माल की जाए जो उमूमन मुर्दे के नीचे चारपाई पर रखते हैं ताकि मौत की याद आती रहे ।

(3 रबीउल अब्वल 1437, 15 दिसम्बर 2015)

«15» मरने वाले के लिये सब से बड़ा तोहफ़ा दुआए मग़िफ़रत है ।

(3 रबीउल अब्वल 1437, 15 दिसम्बर 2015)

«16» मरने के बा'द हर एक तमन्ना करेगा कि काश ! एक पैसा भी बचा कर न रखता बल्कि ख़ैरात कर देता ।

(23 रमज़ान शरीफ़ 1436, 11 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

«17» “अस्ल इज़्ज़त” आख़िरत की है, दुन्या की इज़्ज़त का कोई मे'यार नहीं । (3 रबीउल आख़िर 1444, 30 अक्टूबर 2022)

«18» दूसरों का अन्जाम देख कर अपने लिये इब्रत के मदनी फूल चुन लेना अक्लमन्दी है । (23 रबीउल आख़िर 1438)

«19» एम्बयूलेन्स की आवाज़ अपने अन्दर इब्रत रखती है ।

(29 जुमादल उख़ा 1436, 18 एप्रिल 2015)

«20» दुन्या की तकलीफ़ों में जहन्नम की तकलीफ़ों की याद है ।

(24 रमज़ान शरीफ़ 1436, 11 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

जानवरों के बारे में 4 नसीहतें

«1» च्यूंटी को बिला ज़रूरत न मारें, बल्कि इसे अपने क़बीले से भी जुदा न करें, क्यूं कि येह क़बीले के साथ रहती है ।

(8 सफ़र शरीफ़ 1437, 21 नवम्बर 2015)

«2» बिला इजाज़ते शर्ई मख़्खी को भी तकलीफ़ देने की इजाज़त नहीं ।

(3 रबीउल अब्वल 1437, 15 दिसम्बर 2015)

﴿3﴾ जानवर को ज़ब्द के वक्त होने वाली तकलीफ़ के मुक़ाबले में इन्सान को रूह निकलते वक्त (की तकलीफ़) कई गुना ज़ियादा होती है ।

(5 ज़िल हज शरीफ़ 1441, 26 जूलाई 2020)

﴿4﴾ अगर जानवर किसी तकलीफ़ में हो तो उस की तकलीफ़ दूर करना सवाब का काम है । (10 रमज़ान शरीफ़ 1437, 15 जून 2016 बा'दे अ़स्)

ईद और कुरबानी के बारे में 11 नसीहतें

﴿1﴾ ईद सिर्फ़ रंग बरंगे कपड़े पहनने, सैरो तफ़रीह करने और अच्छे अच्छे खाने खाने का नाम नहीं, ईद तो **अल्लाह** करीम का शुक्र अदा करने, ख़ैर ख़ैरात करने और रिज़ाए इलाही के काम करने का दिन है ।

(29 रमज़ान शरीफ़ 1443, 1 मई 2022)

﴿2﴾ ईदुल फ़ित्र रोज़ाख़ोरों (या'नी रोज़ा न रखने वालों) की नहीं बल्कि रोज़ादारों की होती है । (29 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿3﴾ पुर वक़ार तरीक़े से गले मिलना चाहिये । भींच लेना, गले मिलते हुए दूसरे को उठा लेना ग़ैर मुनासिब और ईजा का बाइस हो सकता है ।

(11 ज़िल हज शरीफ़ 1436, 26 सितम्बर 2015)

﴿4﴾ ईद पर नए कपड़े पहनना ज़रूर नहीं, सुन्नत के मुताबिक़ सिले हुए पुराने धुले हुए कपड़े भी पहने जा सकते हैं ।

(3 रमज़ान शरीफ़ 1437, 9 जून 2016 बा'दे अ़स्)

﴿5﴾ ईदुल फ़ित्र यौमे तशक्कुर है । हमें इस में गुनाहों से बचते हुए **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा करना चाहिये ।

(21 रमज़ान शरीफ़ 1436, 8 जूलाई 2015 बा'दे इ़शा)

﴿6﴾ जानवर के ज़ब्द होते वक्त तमाशा बनाने की बजाए जानवर पर रहूम खाते हुए अपनी मौत को याद करना चाहिये । (19 शव्वाल शरीफ़ 1440)

﴿7﴾ कुरबानी का जानवर ऐसी जगह ज़ब्द कीजिये जहां किसी पैदल या सुवार को तक्लीफ न हो। (1 ज़िल हज शरीफ 1441, 22 जूलाई 2020)

﴿8﴾ जो जानवर राहे खुदा में कुरबान किया जाता है वोह बड़ा “खुश नसीब” है। (11 ज़िल हज शरीफ 1441, 1 अगस्त 2020)

﴿9﴾ अगर इस्तिताअत हो तो शहर का सब से बेहतरीन जानवर ख़रीद कर कुरबानी करने के लिये बारगाहे रिसालत में पेश करें और अर्ज़ करें :

क्या पेश करें जानां क्या चीज़ हमारी है येह दिल भी तुम्हारा है येह जां भी तुम्हारी है

(3 ज़िल हज शरीफ 1443, 2 जून 2022)

﴿10﴾ जिस के हां कुरबानी नहीं होती, हो सके तो उस को (सब से) पहले “कुरबानी का गोश्त” दीजिये।

(11 ज़िल हज शरीफ 1441, 1 अगस्त 2020)

﴿11﴾ अगर किसी मांगने वाले को गोश्त नहीं देना तो झिड़के बिगैर उस से अच्छे अन्दाज़ से मा'ज़िरत कर लीजिये।

(11 ज़िल हज शरीफ 1441, 1 अगस्त 2020)

मुल्को मिल्लत और मुआशरे की बेहतरी के बारे में 4 नसीहतें

﴿1﴾ मर्द वोह नहीं जो मुआशरे के पीछे चले बल्कि मर्द वोह है जो मुआशरे को अपने पीछे चलाए।

(24 रमज़ान शरीफ 1436, 12 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿2﴾ जो मुल्की क़वानीन (National Rules) शरीअत से न टकराते हों उन पर अमल करना चाहिये। (25 रमज़ान शरीफ 1436)

﴿3﴾ अगर तमाम लोग किफ़ायत शिअरी से बिजली इस्ति'माल करें तो मुल्क भर में लोड शेडिंग में कमी आ सकती है।

(17 रबीउल आख़िर 1436, 6 फ़रवरी 2015)

﴿4﴾ मोटर साइकिल पर ट्रिपल सुवारी (तीन का बैठना) क़ानूनी व अख़लाक़ी जुर्म और जान के लिये ख़तरा है। (21 मुह्रम शरीफ़ 1436, 15 नवम्बर 2014 खुसूसी)

रूहानी इलाज के बारे में 8 नसीहतें

﴿1﴾ रूह की ग़िज़ा “अल्लाह पाक का ज़िक्र” है।

(16 रमज़ान शरीफ़ 1442 बा'दे अ़स्)

﴿2﴾ अवरादो वज़ाइफ़ में हर मरज़ का इलाज है।

(8 रजब शरीफ़ 1437, 16 एप्रिल 2016)

﴿3﴾ “يا الله” 49 बार पढ़ कर जानवर पर दम कर दीजिये, اِنْ شَاءَ اللهُ नज़र लगने और मुख़्तलिफ़ बीमारियों से हिफ़ाज़त होगी।

(1 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 22 जूलाई 2020)

﴿4﴾ “يا مَهَيِّبِن” 29 बार रोज़ाना पढ़ने वाला اِنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيم हर आफ़तो बला से महफूज़ रहेगा।

(20 रमज़ान शरीफ़ 1443, 22 एप्रिल 2022)

﴿5﴾ “يا الله” 100 बार सोते वक़्त पढ़ने से اِنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيم शरीर जिन्नात की शरारत और फ़ालिज व लक्वे की आफ़त से हिफ़ाज़त होगी।

(26 रमज़ान शरीफ़ 1443, 28 एप्रिल 2022)

﴿6﴾ दवा से पहले “بِسْمِ اللهِ الشّافِي بِسْمِ اللهِ الْكَافِي” पढ़ने की आदत बनाइये, اِنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيم शिफ़ा होगी।

(7 रमज़ान शरीफ़ 1436, 25 जून 2015 बा'दे अ़स्)

﴿7﴾ नींद न आए तो “يَا كَرِيمُ يَا كَرِيمُ” का विर्द करें।

(25 जुमादल ऊला 1437, 5 मार्च 2016)

﴿8﴾ रूहानी इलाज में “ताक़त” है। (27 ज़ी का'द शरीफ़ 1441, 18 जूलाई 2020)

इलाज व मुआलजे के बारे में 23 नसीहतें

﴿1﴾ किसी शहर में कोई वबा फैल जाए तो आबादी के बाहर अज़ानें दी जाएं और सदक़ा व ख़ैरात की कसरत की जाए। (23 जुमादल ऊला 1436, 14 मार्च 2015)

﴿2﴾ डॉक्टर एक ही होना चाहिये क्यूं कि इस तरह वोह हमारी बदनी कैफ़िय्यात जान लेता है। (कि कौन सी दवा मुवाफ़िक़ होती है और कौन सी नहीं।) (10 मुहर्म्म शरीफ़ 1441)

﴿3﴾ अपनी मरज़ी से इलाज करने की बजाए हमेशा डॉक्टर के मश्वरे से इलाज करना चाहिये। (6 जी का'द शरीफ़ 1441, 27 जून 2020)

﴿4﴾ तबीअतें मुख़्तलिफ़ होती हैं लिहाज़ा अहादीसे मुबारका में तज्वीज़ कर्दा इलाज बिगैर तबीब का मश्वरा लिये करने की मुमानअत है।

(6 जी का'द शरीफ़ 1441, 27 जून 2020)

﴿5﴾ उस डॉक्टर से इलाज करवाइये जो अमानत दार और ख़ौफ़े खुदा वाला हो। (11 रबीउल अब्वल 1436, 2 जनवरी 2015)

﴿6﴾ ख़ौफ़े खुदा रखने वाले माहिर डॉक्टर या हकीम को फ़ेमिली तबीब बनाया जाए। (10 रमज़ान शरीफ़ 1436, 27 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿7﴾ हत्तल इम्कान एक ही डॉक्टर से इलाज करवाना मुनासिब है कि वोह आप की तबीअत से वाक़िफ़ रहेगा, डॉक्टर बदलते रहेंगे तो हर डॉक्टर नए सिरे से इलाज शुरूअ करेगा और हो सकता है आप आज्माइश में पड़ते रहें। (15 जुमादल ऊला 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿8﴾ डॉक्टर से “दवा” मिल सकती है “शिफ़ा” नहीं, अल्लाह पाक चाहेगा तो ही दवा शिफ़ा का ज़रीआ बनेगी।

(15 जुमादल ऊला 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿9﴾ “बीमार” रब्बुल इज़्ज़त (अल्लाह पाक) की रहमत के साए में होता है। (15 जुमादल ऊला 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿10﴾ इलाज के लिये दवा के साथ साथ दुआ भी करते रहिये।

(15 जुमादल ऊला 1444, 7 जनवरी 2023)

«11» इलाज अपनी मरजी से करने के बजाए डॉक्टर के मश्वरे से करना चाहिये । (15 जुमादल ऊला 1444, 7 जनवरी 2023)

«12» किसी हकीम, बाबा जी, डॉक्टर या अस्पताल के इलाज से फ़ाएदा न हो या तक्लीफ़ बढ़ जाए तो सब्र कीजिये, बिगैर सहीह ज़रूरत के किसी का नाम ले कर दूसरों को बताना कारे सवाब नहीं बल्कि इस में ग़ीबतों और दिल आज़ारियों वगैरा गुनाहों में जा पड़ने का ख़तरा है ।

(15 जुमादल ऊला 1444, 7 जनवरी 2023)

«13» कोई बीमारी “ला इलाज” नहीं, हां बहुत सारे अमराज की दवा डॉक्टर अब तक दरयाफ़्त नहीं कर सके ।

(15 जुमादल ऊला 1444, 7 जनवरी 2023)

«14» नज़र “डॉक्टर” पर नहीं “अल्लाह करीम की रहमत” पर रखिये, डॉक्टर लाख अच्छा इलाज करे मगर अल्लाह पाक चाहेगा तो ही सिहहत हासिल होगी ।

(15 जुमादल ऊला 1444, 7 जनवरी 2023)

«15» जिस (मुआलिज) के इलाज से फ़ाएदा न हो तो उसे बुरा भला न कहें, शिफ़ा देने वाला तो अल्लाह करीम है । (9 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 2 नवम्बर 2014)

«16» जहां तक हो सके दवा (Medicine) से बचिये और इलाज बिल ग़िज़ा की कोशिश कीजिये । (10 रमज़ान शरीफ़ 1436, 27 जून 2015 बा'दे इशा)

«17» ओपरेशन करवाना हो तो कम अज़ कम दो सर्जनों से मश्वरा कर लेना चाहिये । (20 ज़ी का'द शरीफ़ 1441, 11 जूलाई 2020)

«18» सिहहत मन्द को 92 दिन में एक मरतबा खून का टेस्ट (LIPID PROFILE) करवाना चाहिये । (18 जुमादल ऊला 1437, 27 फ़रवरी 2016)

«19» अगर डॉक्टर सिद्के निय्यत और इख़्लास के साथ मरीज़ का इलाज करे और उस के साथ हमदर्दी करे तो रोज़ी में बरकत भी होगी और

आखिरत में इस का सवाब भी मिलेगा ।

(19 रबीउल आखिर 1436, 8 फ़रवरी 2015)

﴿20﴾ डॉक्टरों को मरीजों के शर्ई मसाइल में बिल्कुल दख़ल अन्दाज़ी नहीं करनी चाहिये बल्कि मुफ़्तियाने किराम की तरफ़ भेज दिया करें या दारुल इफ़ता अहले सुन्नत का नम्बर +91 83929 22526 दे दें ।

(19 रबीउल आखिर 1436, 8 फ़रवरी 2015)

﴿21﴾ अगर किसी मरीज़ का इलाज डॉक्टर को न आता हो तो बिला शर्मों झिजक कह दें कि आप का इलाज मुझे मा'लूम नहीं, इस तरह लोगों की नज़र में आप की क़द्र बढ़ेगी ।

(2 जुमादल ऊला 1436, 21 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿22﴾ मरीजों की ता'दाद में इज़ाफ़े पर डॉक्टर अपने दिल की कैफ़ियत पर गौर करे कि अपने मुसलमान भाई की बीमारी पर मुझे खुशी तो नहीं हो रही ? अगर ऐसा हो तो इस्तिग़फ़ार करे ।

(10 रमज़ान शरीफ़ 1436, 27 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿23﴾ डॉक्टर व हकीम को खुदा तर्स (रहूम दिल) और मरीजों का हमदर्द होना चाहिये ।

(8 रजब शरीफ़ 1437, 16 एप्रिल 2016)

तिब्बी नुस्खे और टोटके के बारे में 10 नसीहतें

﴿1﴾ थकन का एक इलाज येह भी है कि नीम गर्म पानी से गुस्ल कर लिया जाए और सोने से पहले तस्बीहे फ़ातिमा (या'नी 33 बार **سُبْحَانَ اللَّهِ** 33 बार **اللَّهُ أَكْبَرُ**) का विर्द किया जाए । (1 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436)

﴿2﴾ रोज़ाना (Daily) 12 गिलास, या'नी कमो बेश 3 लीटर पानी पियें, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** गुर्दों के अमराज़ से महफूज़ रहेंगे और क़ब्ज़ से भी बचेंगे ।

(9 मुह्रम शरीफ़ 1436)

﴿3﴾ हींग (एक दरख्त का गोंद *Asafoetida*) घर में रखने से च्यूंटियां भाग जाती हैं ।
(2 ज़ी का'द शरीफ़ 1437)

﴿4﴾ पाउं के तल्वों में किसी भी तेल से मालिश करने से उसकी जिल्द नर्म रहेगी, फटने से महफूज़ रहेगी और दिमागी सलाहिय्यत में भी इज़ाफ़ा होगा, क्यूं कि तल्वों का तअल्लुक दिमाग़ से है ।

(8 सफ़र शरीफ़ 1437, 21 नवम्बर 2015)

﴿5﴾ रोज़ाना 12 गिलास पानी पीना अपना मा'मूल बना लीजिये, क़ब्ज़ नहीं होगी और जिल्द भी नर्म रहेगी । सर्दियों में पानी कम पिया जाता है, जिस से येह दोनों तकालीफ़ बढ़ जाती हैं ।

(8 सफ़र शरीफ़ 1437, 21 नवम्बर 2015)

﴿6﴾ जोड़ों के दर्द का इलाज : एक अ़दद भिन्डी सर से ले कर दुम तक बीच में से चीरा लगा लें और उस को कम अज़ कम 12 घन्टे पानी में भिगो कर रखें फिर उसी पानी में उस को निचोड़ कर उस का पानी पी ले, जोड़ों के दर्द से नजात मिलेगी ।
إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمُ

(21 रमज़ान शरीफ़ 1437, 26 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿7﴾ गाजर के मौसिम में रोज़ाना एक गाजर खाने से बीनाई तेज़ होती है ।

(1 मुहर्रम शरीफ़ 1437, 3 अक्टूबर 2016)

﴿8﴾ नहार मुंह लहसन की पोथी (गांठ) की एक दो फांक (जवा) खाने से कोलेस्ट्रॉल कम होता और दांत का दर्द दूर होता है ।

(2 मुहर्रम शरीफ़ 1438, 4 अक्टूबर 2016)

﴿9﴾ कच्चा लहसन खाने से मुंह में बदबू हो जाए तो अज्वाइन चबाने से मुंह की बदबू दूर हो जाती है ।

(2 मुहर्रम शरीफ़ 1438, 4 अक्टूबर 2016)

﴿10﴾ रोज़ाना 7 इन्जीर खाने से कमर का दर्द दूर होता है ।

(6 रबीउल अब्वल 1438, 5 दिसम्बर 2016)

खाने पीने और अच्छी सिद्दहत रखने के बारे में 41 नसीहतें

﴿1﴾ अल्लाह पाक हमें ऐसी सिद्दहत दे जिस से इबादत पर कुव्वत हासिल हो ।
(1 रमज़ान शरीफ़ 1437, 6 जून 2016 रात)

﴿2﴾ अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये कम खाना इबादत है ।

(3 रमज़ान शरीफ़ 1436, 20 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿3﴾ जिस का वज़्न कम करने का पक्का ज़ेहन बन गया हो वोह पहले लिपिड प्रोफ़ाइल, कोलेस्ट्रॉल और शूगर टेस्ट करवाए फिर ब तदरीज आहिस्ता आहिस्ता हर माह वज़्न कम करे ।

(16 रमज़ान शरीफ़ 1436, 3 जूलाई 2015 बा'दे तरावीह)

﴿4﴾ जवानी में मिठास, चिक्नाहट वगैरा से परहेज़ करें, बुढ़ापा अच्छा गुज़रेगा और बुढ़ापे में इन चीज़ों से बचना बहुत ज़रूरी है ।

(4 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 18 सितम्बर 2015)

﴿5﴾ जवानी से ही खाने पीने में परहेज़ शुरू कर दें ताकि बुढ़ापे में कम तकलीफ़ हो ।

(29 रजब शरीफ़ 1437, 7 मई 2016)

﴿6﴾ जब गोश्त पकाएं तो उस में कद्दू शरीफ़, शल्जम, आलू या कोई और सब्ज़ी शामिल कर लीजिये, इस से गोश्त के मुज़िर (नुक़सान देह) असरात दूर होंगे ।

(4 रबीउल अब्वल 1438)

﴿7﴾ गन्दुम में जव का आटा मिला कर पकाएं तो रोटी मो'तदिल असर वाली हो जाएगी क्यूं कि जव की तासीर ठन्डी और गन्दुम की तासीर गर्म होती है ।

(4 रबीउल अब्वल 1438)

﴿8﴾ खट्टी चीज़ें (ज़ियादा) खाने से बचना चाहिये कि इन से बल्ग़म पैदा होता है और बल्ग़म हाफ़िज़ा कमज़ोर करता है ।

(2 मुह्रम शरीफ़ 1438)

﴿9﴾ गिज़ा कितनी ही उम्दा हो उस का हृद से ज़ियादा इस्ति'माल नुक़सान देह है ।

(18 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 8 अगस्त 2020)

«10» दुन्यावी लज़ीज़ खानों की हिर्स की बजाए जन्नत के लज़ीज़ खानों की हिर्स कीजिये ।
(11 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 1 अगस्त 2020)

«11» खाने में नमक मुनासिब मिक्दार में इस्ति'माल करना चाहिये क्यूं कि इस का ज़ियादा इस्ति'माल गुर्दों को नाकारा कर सकता है ।

(21 ज़िल हज़ शरीफ़ 1437)

«12» दूध अल्लाह पाक की ऐसी ने'मत है कि जिस में पानी और ग़िज़ा दोनों हैं, अलबत्ता सब से अच्छा दूध बकरी का है और येह जल्द हज़्म (Digest) भी हो जाता है ।
(5 रबीउल आख़िर 1436)

«13» मिल कर खाना खाते हुए ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार न करें कि दूसरों को घिन आए, मुहज़्ज़ब से मुहज़्ज़ब तरीन अन्दाज़ होना चाहिये ।

(24 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 19 अक्टूबर 2014)

«14» चीनी (Sugar) मीठा ज़हर है । (18 जुमादल ऊला 1437, 27 फ़रवरी 2016)

«15» गुड़ की चाय अच्छी होती है । मैं गुड़ की चाय इस्ति'माल करता हूँ ।
(18 जुमादल ऊला 1437, 27 फ़रवरी 2016)

«16» कबाब समोसे खाने से बचने में ही आफ़ियत है ।

(29 रजब शरीफ़ 1437, 7 मई 2016)

«17» 80 फ़ीसद अमराज़ डट कर खाने से होते हैं ।

(3 रमज़ान शरीफ़ 1437, 9 जून 2016 बा'दे अ़स्)

«18» खाना खाने के फ़ौरन बा'द पानी पीना तिब्बन (Medically) नुक़सान देह है, बिल खुसूस खाना खाने के बा'द जो कोल्ड ड्रिंक (Cold Drink) का रवाज है, येह इन्तिहाई नुक़सान देह है ।

(6 रमज़ान शरीफ़ 1437, 11 जून 2016 बा'दे तरावीह)

«19» गर्मियों में दो मशरूब कच्ची लस्सी और लीमूं की सिकन्जबीन फ़ाएदे मन्द हैं ।
(6 रमज़ान शरीफ़ 1437, 11 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿20﴾ वर्जिश बहुत सारी बीमारियों से बचने का ज़रीआ है ।

(17 रमज़ान शरीफ़ 1437, 23 जून 2016 बा'दे अ़स्)

﴿21﴾ दरख़्त इन्सान की सिद्दहत के लिये मुफ़ीद हैं, दरख़्त इन्सान के खादिम हैं । घर के इर्द गिर्द दरख़्त होना फ़ाएदे का बाइस है ।

(30 ज़ी का'द शरीफ़ 1437, 2 सितम्बर 2016)

﴿22﴾ जब सूरज तुलूअ़ या गुरूब हो तो 20/25 मिनट की धूप छोटे बड़े सब के लिये फ़ाएदे मन्द है । (29 ज़िल हज़ शरीफ़ 1437, 2 अक्टूबर 2016)

﴿23﴾ कहा जाता है फलों में सब से ज़ियादा तुवानाई बख़्श सेब है ।

(1 मुहर्रम शरीफ़ 1438, 3 अक्टूबर 2016)

﴿24﴾ अदरक को छीलने की ज़रूरत नहीं, छिल्के समेत इस्ति'माल किया करें ।

(1 रबीउ़ल अब्वल 1438, 30 नवम्बर 2016)

﴿25﴾ प्लास्टिक की थेलियों और बरतन में गर्म खाने की चीज़ न डाला करें, इस तरह खाने में केमीकल मिल जाते होंगे और सिद्दहत को नुक़सान पहुंचता है ।

(1 जुमादल ऊला 1438, 29 जनवरी 2017)

﴿26﴾ मछली कोयले पर पकाना मुफ़ीद है, इस का सालन भी सिद्दहत के लिये अच्छा है, तलने से इस के फ़वाइद में कमी हो जाती है ।

(1 जुमादल ऊला 1438, 29 जनवरी 2017)

﴿27﴾ खीरा छिल्के समेत खाया जाए, इस का छिल्का भी सिद्दहत के लिये मुफ़ीद है ।

(2 ज़िल हज़ शरीफ़ 1437, 4 सितम्बर 2016)

﴿28﴾ सढ़री में हलकी ग़िज़ा और वोह भी कम खाएं, सकील (भारी) ग़िज़ाएं न खाएं, सिद्दहत बेहतर रहेगी ।

(3 रमज़ान शरीफ़ 1436, 20 जून 2015 बा'दे इ़शा)

﴿29﴾ मोटापे का बेहतरीन इलाज, वर्जिश और ज़ियादा खाने से परहेज़ करना है। (5 मुहर्रम शरीफ़ 1437, 19 अक्टूबर 2015)

﴿30﴾ इस्लामी बहनों को दो ज़ानू (अत्तहिय्यात में बैठने की तरह) बैठ कर खाना खाना बेहतर है। (25 मुहर्रम शरीफ़ 1437, 7 नवम्बर 2015)

﴿31﴾ बकर ईद हो या मीठी ईद, हमें एहतियात के साथ और कम खाना चाहिये। (1 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 25 अक्टूबर 2014)

﴿32﴾ यह कहना दुरुस्त नहीं कि मैं “फुल परहेज़ी” करता हूँ, क्यूं कि कुछ न कुछ बद परहेज़ी तो हो ही जाती है।

(16 रमज़ान शरीफ़ 1436, 3 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿33﴾ तिब्बी तहकीक़ है कि कम खाने वाले लम्बी उम्र पाते हैं।

(1 रमज़ान शरीफ़ 1437, 6 जून 2016 रात)

﴿34﴾ खा कर पछताने से न खा कर पछताना अच्छा है।

(3 रबीउल अव्वल 1438, 2 दिसम्बर 2016)

﴿35﴾ पेट भर कर खाना खाना गुनाह नहीं है, अलबत्ता ज़ियादा खाने वाले का नफ़्स गुनाहों की तरफ़ ज़ियादा माइल हो सकता है।

(16 रमज़ान शरीफ़ 1437)

﴿36﴾ जो सिद्धत मन्द रहना चाहता है वोह जवानी से ही इबादत पर कुव्वत हासिल करने की निय्यत से ज़ियादा खाने पीने से परहेज़ करे।

(9 रमज़ान शरीफ़ 1436, 26 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿37﴾ ग़ालिब अक्सरिय्यत डट कर खाती है, डट कर खाने से दिल सख़्त होता है। (4 रबीउल आख़िर 1437, 14 जनवरी 2016)

﴿38﴾ तसव्वुफ़ की कोई किताब ऐसी नहीं जिस में भूक के फ़ज़ाइल न हों। (1 रमज़ान शरीफ़ 1437, 6 जून 2016 रात)

﴿39﴾ पान गुटके खाने की आदत गोया रक़म खर्च कर के बीमारी त़लब करना है । (7 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 21 सितम्बर 2015)

﴿40﴾ छालिया का कसरत से इस्ति'माल नुक़सान देह है ।

(7 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 21 सितम्बर 2015)

﴿41﴾ सिगरेट नोशी बहुत नुक़सान देह है । इस से टीबी हो सकती है, सिगरेट पीने वालों को बुढ़ापे में बहुत परेशानी का सामना होता है । सिगरेट के क़रीब भी नहीं जाना चाहिये । (4 रमज़ान शरीफ़ 1437, 9 जून 2016 बा'दे तरावीह)

मेहमान नवाज़ी और दा'वत के बारे में 7 नसीहतें

﴿1﴾ मेहमान का शौक़ से खाना खाना, मेज़बान को खुश करता है कि मेरा खाना मेहमान को पसन्द आया है । (17 शा'बान शरीफ़ 1436, 4 जून 2015)

﴿2﴾ बिन बुलाए किसी की दा'वत में हरगिज़ नहीं जाना चाहिये, अगर कभी ऐसा हुवा हो तो तौबा के साथ साथ साहिबे ख़ाना से मुआफ़ भी करा लें । (19 शा'बान शरीफ़ 1436, 6 जून 2015)

﴿3﴾ आज कल लोगों की हिर्स देख कर लगता है कि खुददारी फ़ौत हो चुकी है । (19 शा'बान शरीफ़ 1436, 6 जून 2015)

﴿4﴾ किफ़ायत शिआरी अपनाना सीख लें और अगर एक दिन का खाना बच जाए तो फेंकने की बजाए दूसरे दिन खा लें ।

(16 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 11 अक्टूबर 2014)

﴿5﴾ शादी में इतना खाना पकवाएं कि जो मुकम्मल खाया जा सके और जाएअ न हो, क़ियामत को ज़रें ज़रें का हि़साब होगा ।

(12 रमज़ान शरीफ़ 1436, 29 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿6﴾ खुशी के मौक़ए जैसे शादी या सालगिरह वगैरा पर तोहफ़े में शोपीस या कोई और चीज़ देने के बजाए नक़द पैसे देना ज़ियादा मुफ़ीद है कि इस से वोह अपनी ज़रूरिय्यात पूरी कर सकते हैं । (6 रबीउल अब्वल 1439)

﴿7﴾ कोई तक़ीब हो तो उस में मज़हबी रंग होना चाहिये, सालगिरह करनी हो तो फ़ातिहा पढ़ कर ईसाले सवाब की तरकीब बनाएं, तालियां और मर्दों औरत का इख़ितालात् (मेलजोल और कोई भी ग़ैर शर्ई काम) न हो।

(2 रबीउल आख़िर 1437, 12 जनवरी 2016)

दा'वते इस्लामी के चैनल के बारे में 3 नसीहतें

﴿1﴾ दा'वते इस्लामी के चैनल की ने'मत से भरपूर फ़ाएदा उठाएं और इस को देखने की दा'वत देते रहें। (4 रबीउल आख़िर 1436, 24 जनवरी 2015)

﴿2﴾ दा'वते इस्लामी का चैनल अच्छी अच्छी निर्यतों से देखना इबादत है, क्यूं कि येह ख़ालिस दीनी चैनल है। (7 सफ़र शरीफ़, 1436, 29 नवम्बर 2014)

﴿3﴾ दा'वते इस्लामी का चैनल बोलती किताब है, इसे देखें और देखने की दा'वत भी दें, येह कारे सवाब (सवाब का काम) है।

(9 रबीउल अव्वल 1437, 21 दिसम्बर 2015)

मुबल्लिगीन और ना'त ख़्वानों के लिये 12 नसीहतें

﴿1﴾ सिर्फ़ मुस्तनद आलिमे दीन या उन का मुसद्दका कलाम पढ़ना चाहिये। (25 सफ़र शरीफ़ 1437, 7 दिसम्बर 2015)

﴿2﴾ लोग उमूमन कह देते हैं कि अल्लाह ने यूं फ़रमाया है, कुरआन में यूं है जो कि बहुत ग़लत अन्दाज़ है, जब तक सो फ़ीसद यकीन न हो या किसी मुफ़्ती या मुस्तनद आलिम से तस्दीक़ न कर लें तो अपनी तरफ़ से यूं न कहा करें। (2 रबीउल अव्वल 1436, 24 दिसम्बर 2014)

﴿3﴾ मुह्रर्मुल हराम में अहले बैते अत्हार (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के मुस्तनद फ़ज़ाइल बयान करने चाहिए ताकि लोगों के दिलों में इन मुक़द्दस हस्तियों की अज़मत बैठे। (9 मुह्रर्म शरीफ़ 1444, 8 अगस्त 2022)

﴿4﴾ ख़ामोशी, तक्वा और नेकी अपना लीजिये और मुनाज़राना अन्दाज़ की बजाए मुबल्लिग़ बन जाइये, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ कौम आप के पीछे आ जाएगी ।

(5 मुहर्म्म शरीफ़ 1441)

﴿5﴾ जो मुबल्लिग़ बनने की सआदत हासिल करना चाहता है वोह इल्मे दीन हासिल करे और बयान करने की कोशिश भी करता रहे ।

(25 मुहर्म्म शरीफ़ 1437, 7 नवम्बर 2015)

﴿6﴾ दौराने बयान अच्छे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करना और वाह वा चाहना एक ऐसी दीमक है जो बयान के अज़्रो सवाब को चाटती रहती है ।

(19 मुहर्म्म शरीफ़ 1441, 19 सितम्बर 2019)

﴿7﴾ लोगों की नफ़िसय्यात के मुताबिक़ बयान के मवाद में तब्दीली होनी चाहिये ताकि रग़बत रहे ।

(9 जुमादल उख़्रा 1437, 19 मार्च 2016)

﴿8﴾ मुबल्लिग़िन को चाहिये कि मुशिकल अल्फ़ाज़ के बजाए आसान अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करें ।

(1 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 15 सितम्बर 2015)

﴿9﴾ रजबुल मुरज्जब में जब भी कोई मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी बयान करे या दा'वते इस्लामी के चैनल के मुबल्लिग़िन सिल्लिसला करें तो सुन्नत की निय्यत से रजबुल मुरज्जब की दुआ : اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي رَجَبٍ وَشَعْبَانَ وَبَيْعُنَا رَمَضَانَ : (या'नी ऐ अल्लाह पाक ! तू हमारे लिये रजब और शा'बान में बरकतें अता फ़रमा और हमें रमज़ान तक पहुंचा ।) (3939: حدیث: 85/3, اوسط, معجم) पढ़ाया करें । मसाजिद के अइम्माए किराम इस दुआ को याद कर लें और नमाज़ों के बा'द पढ़ा करें ।

(1 रजब शरीफ़ 1437, 19 एप्रिल 2016)

﴿10﴾ मुबल्लिग़ के लिये इल्म, तहम्मूल व बरदाश्त, नरमी और हिक़मते अमली ज़रूरी है ।

(20 रजब शरीफ़ 1436, 9 मई 2015)

﴿11﴾ जब भी कोई हृदीसे पाक बयान करें तो उस में अपनी तरफ़ से कोई लफ़्ज़ न मिलाएं। (17 रबीउल आख़िर 1436, 6 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿12﴾ ना'त शरीफ़ पढ़ना इबादत है।

(5 रबीउल अब्वल 1437, 17 दिसम्बर 2015)

इन्टरनेट, मोबाइल और सोशल मीडिया के बारे में 12 नसीहतें

﴿1﴾ कोई भी शर्इ मस्अला या तहरीर उस वक़्त तक अ़ाम न करें जब तक किसी मुस्तनद मो'तबर अ़ालिम से चेक न करवा लें।

(12 रमज़ान शरीफ़ 1436, 29 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿2﴾ अपनी कोई भी तहरीर मुस्तनद अ़ालिम से तस्दीक़ करवाए बिगैर आगे न भेजें।

(10 मुह्र्रम शरीफ़ 1437, 21 अक्तूबर 2015)

﴿3﴾ दौराने फ़ोन, लाउड स्पीकर खोलना हो तो मुख़ातब से इजाज़त ले लें, शायद वोह ऐसी बात करना चाहता हो जो आप के इलावा किसी और को पता न चले।

(5 रमज़ान शरीफ़ 1436, 22 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿4﴾ फ़ोन में कोल रीकोर्डिंग सिस्टम में इब्रत है कि हम रीकोर्डिंग में संभल संभल कर बात करते हैं, मगर किरामन कातिबीन जो कि हर वक़्त हमारे साथ हैं, उन से नहीं डरते। (5 रमज़ान शरीफ़ 1436, 22 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿5﴾ टेक्स्ट मेसेज, वोइस मेसेज, वीडियो क्लिप और यादगार मनाज़िर वगैरा के साथ तारीख़ मअ़ माह व सिन लिखना निहायत मुफ़ीद रहता है और इस से यादगार बाक़ी रहती है। (29 शबवाल शरीफ़ 1441, 20 जून 2020)

﴿6﴾ समझदारी का तकाज़ा येह है कि मोबाइल फ़ोन में बच्चों की अम्मी या दीगर महारिम ख़वातीन की तसावीर हरगिज़ न रखी जाएं क्यूं कि मोबाइल गुम या चोरी हो सकता है और इस तरह घर वालों की तसावीर ग़ैर मर्दों के पास जाने का अन्देशा है।

(26 सफ़र शरीफ़ 1438)

﴿7﴾ उमूमन लोग अपना मोबाइल फ़ोन किसी को देना पसन्द नहीं करते, उन में राज़ की बातें भी होती हैं इस लिये किसी से मोबाइल नहीं मांगना चाहिये ।
(10 मुहर्रम शरीफ़ 1437, 21 अक्तूबर 2015)

﴿8﴾ मोबाइल फ़ोन के नुक़सानात इस के फ़वाइद से ज़ियादा हैं ।
(8 रबीउल अब्वल 1436, 30 दिसम्बर 2014)

﴿9﴾ सोशल मीडिया पर किसी को समझाना, समझाना नहीं बल्कि उसे “ज़लील” करना है ।
(15 रजब शरीफ़ 1442, 27 फ़रवरी 2021)

﴿10﴾ (अफ़सोस !) आज मुसल्मान सोशल मीडिया और प्रिन्ट मीडिया के ज़रीए एक दूसरे को रुस्वा कर रहे हैं जब कि इस्लाम ने मुसल्मानों को एक दूसरे की इज़ज़त का मुहाफ़िज़ बनाया है ।
(5 मुहर्रम शरीफ़ 1441)

﴿11﴾ सोशल मीडिया पर अपने बने हुए एकाउन्ट्स पर अपनी फ़ोटो लगाना मुझे अच्छा नहीं लगता, अपनी तसावीर ख़त्म कर के हुब्बे जाह का ख़ातिमा करने की कोशिश करें । (18 ज़ी का'द शरीफ़ 1435, 13 सितम्बर 2014)

﴿12﴾ सोशल मीडिया (Social Media) से कनारा कश (दूर) रहें, इस से बहुत वक़्त ज़ाएअ़ होता है । गुनाहों में पड़ने का क़वी अन्देशा (ख़तरा) है ।
(16 रबीउल आख़िर 1437, 26 मार्च 2016)

अवामी ग़लत फ़हमियों के बारे में 2 नसीहतें

﴿1﴾ मुझे “या सय्यिदी” न कहा जाए, बा'ज़ लोगों को ग़लत फ़हमी हो सकती है कि येह “सय्यिद” बन गया है, जब कि मैं “मेमन” हूँ, इस तरह वोह गुनहगार होंगे, मैं ऐसों को गुनाह से बचाना चाहता हूँ ।

(22 सफ़र शरीफ़ 1437, 5 दिसम्बर 2015)

﴿2﴾ दस बीबियों की कहानी, जनाबे सय्यिदह की कहानी वग़ैरा मन घड़त कहानियों का पढ़ना और इन की मन्नत मानना जाइज़ नहीं । अगर किसी ने इन के पढ़ने की मन्नत मानी है तो उस मन्नत का पूरा करना भी जाइज़ नहीं है ।
(5 मुहर्रम शरीफ़ 1441)

सफ़र के बारे में 3 नसीहतें

«1» मैं जब गाड़ी में बैठता हूं तो उमूमन सुवारी पर बैठने की दुआ पढ़ता या पढ़ाता, तौबा व तज्दीदे ईमान करता और सूरए कुरैश की तिलावत करता हूं।
(25 जुमादल ऊला 1437, 5 मार्च 2016)

«2» मालिकान अपनी गाड़ियों में लिख कर लगा दें : इस गाड़ी में गाने बाजे और फ़िल्में वगैरा नहीं दिखाई जातीं, मुसाफ़िर (Passengers) इसरार न करें।
(3 मुहर्रम शरीफ़ 1436, 27 अक्तूबर 2014)

«3» ड्राइवर हज़रात बा वुजू गाड़ी चलाया करें।
(22 रमज़ान शरीफ़ 1437, 27 जून 2016 बा'दे तरावीह)

हर एक के लिये 52 नसीहतें

«1» अल्लाह पाक की राह में माल खर्च करना नफ़्स पर बहुत गिरां (या'नी भारी) होता है, इस लिये जैसे ही राहे खुदा में खर्च करने की निय्यत करें, फ़ौरन दे दें क्यूं कि क़ल्ब (या'नी दिल) मुन्क़लिब होता (या'नी बदलता) रहता है।
(29 रबीउल अब्वल 1437)

«2» किसी को अपना राज़ बताना गोया उस का गुलाम बनना है।
(9 ज़िल हज शरीफ़ 1441, 30 जूलाई 2020)

«3» Quantity नहीं Quality पर नज़र रखिये। (ता'दाद नहीं मे'यार पर नज़र रखिये।)

«4» “सुख के साथी” बहुत मगर “दुख का साथी” कोई कोई होता है।
(9 मुहर्रम शरीफ़ 1444, 8 अगस्त 2022)

«5» काम सिर्फ़ “चाहने” से नहीं “करने” से होता है कि “हरकत में बरकत” है।
(4 रबीउल आख़िर 1444, 30 अक्तूबर 2022)

«6» दुखों पर “मिर्चे” रखने के बजाए “मरहम” रखिये।
(1 सफ़र शरीफ़ 1444, 29 अगस्त 2022)

﴿7﴾ “एहसास” महब्बत की असास (या’नी बुन्याद) है ।

(3 सफ़र शरीफ़ 1444, 31 अगस्त 2022)

﴿8﴾ टूटे दिल जोड़ने चाहिएं न कि जुड़े दिलों को तोड़ा जाए ।

(9 रबीउल आख़िर 1444, 4 नवम्बर 2022)

﴿9﴾ जज़्बा सच्चा हो तो काम्याबी क़दम चूम लेती है ।

(4 रबीउल आख़िर 1436, 24 जनवरी 2015)

﴿10﴾ हुब्बे जाह (इज़्ज़तो शोहरत की महब्बत) बुरी बला है, इस में दुन्या व आख़िरत की तबाही है । (8 रबीउल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿11﴾ हमें अल्लाह पाक के लिये जीना और उसी के लिये ही मरना है ।

(8 रबीउल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿12﴾ सब से बड़ी मुसीबत कुफ़्रो शिर्क है ।

(16 रबीउल आख़िर 1436, 5 फ़रवरी 2015)

﴿13﴾ जज़्बाती आदमी अच्छा काम बहुत अच्छा करता है और मन्फ़ी काम बहुत बुरा करता है । (17 रबीउल आख़िर 1436, 6 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿14﴾ घर का कोई नाम रखना अच्छी बात है, मैं जिस घर में रहता हूं उस का नाम “बैतुल फ़ना” रखा है कि हर चीज़ के लिये फ़ना है ।

(14 रमज़ान शरीफ़ 1436, 2 जूलाई 2015 बा’दे अस्)

﴿15﴾ बकरी मैं मैं करती है तो उस पर छुरी चलती है और जब बन्दा मैं मैं करता है तो वोह लोगों में “रुस्वा” होता है ।

(10 ज़िल हज़ शरीफ़ 1441, 31 जूलाई 2020)

﴿16﴾ “अल्लाह ने क़सम खाई” येह कहना बे अदबी है, यूं कहना चाहिये कि अल्लाह पाक ने क़सम याद फ़रमाई । (11 मुहर्म्म शरीफ़ 1441)

﴿17﴾ लुत्फ़ अन्दोज़ होने के लिये सूरज गहन (या चांद गहन) की तसावीर बनाना अच्छी बात नहीं । (8 रबीउल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

- ﴿18﴾ जो अल्लाह पाक की बारगाह में झुकता है वोह बुलन्दी पाता है ।
(6 ज़िल हज शरीफ़ 1441, 27 जूलाई 2020)
- ﴿19﴾ किसी को शोहरत हासिल हो जाना इस बात की दलील नहीं कि उसे रिज़ाए इलाही की मन्ज़िल भी हासिल हो गई । (22 रबीज़ल आख़िर 1438)
- ﴿20﴾ दुन्यावी खुशी आरिज़ी (Temporary) है और इस में भी कई ग़म छुपे हुए हैं ।
(28 रबीज़ल आख़िर 1443, 5 दिसम्बर 2021)
- ﴿21﴾ शर्ई मस्लहतों के बिगैर ख़तरों से खेलने वाले बहादुर नहीं, अहमक़ (या'नी बे वुकूफ़) होते हैं ।
(1 रमज़ान शरीफ़ 1443, 2 एप्रिल 2022)
- ﴿22﴾ जज़्बा हो तो राहें हज़ार, जज़्बा न हो तो बहाने हज़ार ।
(27 ज़ी क़ा'द शरीफ़ 1434, 28 जून 2022)
- ﴿23﴾ तारीख़े दुन्या के मुतालए से येह बात मा'लूम होती है : “इन्क़िलाब” हमेशा एक ही लाता है, बक़िय्या लोग उस एक के मुअ़ाविन होते हैं ।
(10 रबीज़ल अब्वल 1436, 1 जनवरी 2015)
- ﴿24﴾ किसी मुसलमान के बारे में न कहा जाए कि “हलाक हो गया” बल्कि “इन्तिक़ाल कर गया” कहना बेहतर है ।
(19 रबीज़ल अब्वल 1436, 10 जनवरी 2015)
- ﴿25﴾ उमूमन झाड़ने वाले सेठ से नोकर वफ़ा नहीं करता ।
(4 रबीज़ल आख़िर 1436, 24 जनवरी 2015)
- ﴿26﴾ जब किसी काम की पूछगछ न हो तो वोह पहले ठन्डा (सुस्त) और फिर ख़त्म हो जाता है । (4 रबीज़ल आख़िर 1436, 24 जनवरी 2015 खुसूसी)
- ﴿27﴾ अमलिय्यात का शो'बा बहुत नाजुक है, इस में हुब्बे जाह (शोहरत व मर्तबे की महब्बत) से बचना बहुत मुशिकल है ।
(7 जुमादल ऊला 1436, 26 फ़रवरी 2015 खुसूसी)
- ﴿28﴾ बिगाड़ आसान है, मगर सुधार मुशिकल है, इमारते बनाने में बा'ज़

अवकात सालों लग जाते हैं मगर गिराने में बहुत कम वक्त लगता है ।

(13 जी का'द शरीफ 1436, 29 अगस्त 2015)

﴿29﴾ थकन और भूक में ग़म की ख़बर पर सदमा ज़ियादा होता है, इस हालत में किसी की वफ़ात की ख़बर देने से इज्तिनाब किया जाए ।

(13 रजब शरीफ 1436, 2 मई 2015)

﴿30﴾ अख़बारात में मुक़द्दस अल्फ़ाज़ लिखे होते हैं, लिहाज़ा इन को न फेंकिये ।

(12 रमज़ान शरीफ 1436, 29 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿31﴾ अपनी राहत के साथ दूसरों की राहत का भी ख़याल रखना चाहिये ।

(13 रमज़ान शरीफ 1436, 30 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿32﴾ वस्वसों की तरफ़ तवज्जोह न देना भी वस्वसों का इलाज है ।

(18 रमज़ान शरीफ 1436, 5 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿33﴾ अपने फ़ौत शुद्गान को ख़्वाब में देखने की जिदो जहद न की जाए, अगर किसी ना पसन्दीदा हाल में देख लिया तो तवील सदमा होगा, अगर्चे ख़्वाब शर्अन हुज्जत नहीं । (19 रमज़ान शरीफ 1436, 7 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿34﴾ जब मज़दूर उजरत का हक़दार हो जाए तो बिला उज़्र (बिग़ैर किसी वज्ह के) उस की उजरत न रोकी जाए, फ़ौरन दे दी जाए, उसे धक्के न खिलाए जाएं ।

(2 रमज़ान शरीफ 1437, 8 जून 2016 बा'दे अस्)

﴿35﴾ जब कोई कुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ बयान कर रहा हो तो कोई ऐसी हरकत न करें जो अपने या दूसरों के लिये बे तवज्जोही (तवज्जोह में रुकावट) का बाइस बने ।

(3 मुहर्रम शरीफ 1437, 17 अक्तूबर 2015)

﴿36﴾ जीना है तो ऐसे जियो कि ज़माना मिसाल दे ।

(20 रमज़ान शरीफ 1437, 25 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿37﴾ अख़बारात में मुक़द्दस तहरीरें भी होती हैं, इस लिये उस से हाथ साफ़ न किये जाएं ।

(3 रमज़ान शरीफ 1437, 8 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿38﴾ जो दुआ याद करनी हो उसे लिख कर घर में उस मक़ाम पर आवेज़ां कर दें जिस पर नज़र पड़ती रहे, **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ الْكَرِيْمُ** जल्द याद हो जाएगी ।

(8 रबीउल आख़िर 1437, 18 जनवरी 2016)

﴿39﴾ अपने आप को शख़्सियत (Personality) तस्लीम नहीं करना चाहिये, जिस का ईमान पर ख़ातिमा हुवा और **अल्लाह** पाक उस से राज़ी हुवा और वोह जन्नत में चला गया तो हकीकत में वोह “बड़ा आदमी” है ।

(12 रबीउल आख़िर 1437, 22 जनवरी 2016)

﴿40﴾ बा'ज अवक़ात सुवालात मा'लूमात का ज़रीआ होते हैं ।

(12 रबीउल आख़िर 1437, 22 जनवरी 2016)

﴿41﴾ किसी के घर के सामने कचरा डालने से घर वालों को तकलीफ़ होती है, घर वालों से मुआफ़ी मांगें और **अल्लाह** पाक की बारगाह में भी तौबा करें ।

(13 रबीउल आख़िर 1437, 23 जनवरी 2016)

﴿42﴾ छींक आने पर हम्द करनी चाहिये और आवाज़ पस्त (आहिस्ता) करने के लिये मुंह पर रूमाल या टिशू वग़ैरा रखने में हज़र नहीं बल्कि अच्छा है ।

(7 रमज़ान शरीफ़ 1437, 13 जून 2016 बा'दे अ़स्र)

﴿43﴾ नाम होने (या'नी शोहरत) में भी इम्तिहान है ।

(21 सफ़र शरीफ़ 1436, 13 दिसम्बर 2014)

﴿44﴾ किसी को “मनवाना” हमारा काम नहीं “समझाना” काम है ।

(23 ज़िल हज़ शरीफ़ 1435, 18 अक्टूबर 2014)

﴿45﴾ जिस से बन पड़े वोह अपने सफ़ेद पोश रिश्तेदार या यतीम बच्चों की कफ़ालत का जिम्मा ले और उन की मदद इस तरह करे कि उन्हें भी मा'लूम न हो कि हमारी मदद करने वाला कौन है । (9 रबीउल आख़िर 1436)

﴿46﴾ रिश्तेदारों में निकाह करने में हम आहंगी के ज़ियादा इम्कानात (Chances) हैं, मगर ताकीद येह है कि हमेशा अच्छी सीरत को पेशे नज़र रखा जाए । पहले सीरत फिर सूरत देखें । (29 रबीउल अब्वल 1437, 9 जनवरी 2016)

﴿47﴾ नेकोकार के लिये यह ज़रूरी है कि वोह अपने आप को नेकोकार (नेक) न समझे, येही बुजुर्गों का दस्तूर (तरीका) रहा है ।

(10 जुमादल ऊला 1437, 19 फ़रवरी 2016)

﴿48﴾ अपनी मस्जिदे महल्ला की नमाजे इशा की जमाअत के वक़्त से 2 घन्टे के अन्दर अन्दर घर जा कर सो जाया करें ।

(9 जुमादल उख़ा 1437, 19 मार्च 2016)

﴿49﴾ मरज़ हो या क़र्ज़ बस अपने मूड में हरज (या'नी सख़्ती) नहीं आना चाहिये । (या'नी मिज़ाज बद अख़्लाक नहीं होना चाहिये ।)

(5 शव्वाल शरीफ़ 1443 खुसूसी)

﴿50﴾ गुस्से की वजह से इन्सान कई गुनाहों में जा पड़ता है, गुस्से का इलाज ज़रूरी है । इस के लिये मक्तबतुल मदीना के रिसाले “गुस्से का इलाज” का मुतालअ़ा कीजिये ।

(13 शा'बान शरीफ़ 1437, 21 मई 2016)

﴿51﴾ बैरूने मुल्क का वीज़ा 100 फ़ीसद सच बोल कर ही हासिल किया जाए ।

(17 रमज़ान शरीफ़ 1437, 22 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿52﴾ नए घर में सब से पहले कुरआने करीम रखना अच्छी बात है ।

(20 ज़ी का'द शरीफ़ 1441, 11 जूलाई 2022)

दा'वते इस्लामी का दीनी काम करने वालों के बारे में 20 नसीहतें

﴿1﴾ तमाम इस्लामी भाई 12 दीनी काम में मुतहर्रिक (Active) रहें ।

(4 जुमादल ऊला 1437, 13 फ़रवरी 2016)

﴿2﴾ मेरी दा'वते इस्लामी का दीनी काम करें और मेरे दिल की दुआएं लें ।

(9 जुमादल उख़ा 1437, 19 मार्च 2016)

﴿3﴾ येह ज़ेहन बना लीजिये कि मुझे कोई मारे या धक्के दे, मैं ने दा'वते इस्लामी का दीनी माहोल नहीं छोड़ना, बल्कि दा'वते इस्लामी से ऐसे चिपक जाएं, कोई टुकड़े टुकड़े कर के भी जुदा न कर सके ।

(7 रबीउल आख़िर 1436, 7 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿4﴾ “12 दीनी काम कोर्स” निगराने जैली मुशावरत ता अराकीने शूरा हर एक को करना है। (7 जुमादल ऊला 1438, 4 फ़रवरी 2017)

﴿5﴾ इस्लामी बहनों को घर की तरफ़ से दीनी कामों की इजाज़त न मिले तो वोह दीगर दीनी काम जो घर में रह कर कर सकती हैं वोह करें।

(5 जुमादल उख़्रा 1438, 5 मार्च 2017)

﴿6﴾ जब मुझे पता चलता है कि फुलां दा'वते इस्लामी का दीनी काम करता है तो मेरा दिल खुश होता है। (7 रबीउल आख़िर 1444, 3 नवम्बर 2022 खुसूसी)

﴿7﴾ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जा जा कर दीने इस्लाम को आम किया, दा'वते इस्लामी का दीनी काम बुला बुला कर नहीं जा जा कर होता है। 11 चाहिएं तो बुलाओ और कम अज़ कम 111 चाहिएं तो जाओ। (या'नी अपने पास बुला कर मदनी मश्वरा करेंगे तो ता'दाद कम आएगी और उन के पास जाएंगे तो ज़ियादा जम्अ हो जाएंगे) (27 रबीउल आख़िर 1437, 6 फ़रवरी 2016)

﴿8﴾ जिस का दिल दीनी माहोल में घबराता है, उस की मिसाल ऐसी ही है जैसे मरीज़ को दवा अच्छी नहीं लगती। (1 रबीउल अब्वल 1437, 13 दिसम्बर 2015)

﴿9﴾ बिगैर मिटे काम नहीं होगा कि दाना ख़ाक में मिल कर गुले गुलज़ार होता है। (10 जुमादल ऊला 1436, 1 मार्च 2015)

﴿10﴾ पहले जान हथेली पर रखनी पड़ती है फिर जान कुरबान करने वाले बनते हैं।⁽¹⁾ (5 शव्वाल शरीफ़ 1443 खुसूसी)

﴿11﴾ दिल समुन्दर की तरह वसीअ होना चाहिये, जिस का दिल बार बार दुख जाता हो वोह दीन तो क्या दुन्या का काम भी नहीं कर सकता, उस के दोस्त भी बहुत थोड़े होते हैं। (11 रबीउल अब्वल 1436, 2 जनवरी 2015)

﴿12﴾ मैं चाहता हूं कि दा'वते इस्लामी का हर ज़िम्मेदार ख़ौफ़े खुदा, इश्के मुस्तफ़ा, हुस्ने अख़्लाक का पैकर और सुन्नतों का पाबन्द हो।

(9 जुमादल उख़्रा 1437, 19 मार्च 2016)

1 ... इस से मुराद दीनी कामों में वक़्त देना पढ़ता है।

﴿13﴾ मदनी मुजाकरा मा'लूमात का खज़ाना है ।

(17 रबीउल अव्वल 1436, 8 जनवरी 2015)

﴿14﴾ मदनी मुजाकरे में शिर्कत करते रहेंगे तो ऐसे ऐसे मसाइल मा'लूम होंगे जो पहले मा'लूम न थे । (9 ज़िल हज शरीफ़ 1436, 23 सितम्बर 2015)

﴿15﴾ दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से अमलन वाबस्ता रहें, दोनों जहां की भलाइयां हासिल होंगी । اِنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيمُ (9 रबीउल अव्वल 1437, 21 दिसम्बर 2015)

﴿16﴾ तन्जीमी जिम्मेदार को चाहिये कि अपनी मजलिस के मश्वरे से ही तमाम मुआमलात तै किया करें । (2 जुमादल उख़ा 1437, 12 मार्च 2016)

﴿17﴾ जो जिम्मेदारी निभाने की सलाहियत रखते हैं, उन्हें दीनी कामों की जिम्मेदारी लेनी चाहिये, अगर सारे दा'वते इस्लामी वाले दीनी कामों के लिये कमर बस्ता हो जाएं तो हमारा मुआशारा मदनी मुआशारा बन जाएगा । اِنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيمُ (6 रबीउल अव्वल 1438, 5 दिसम्बर 2016)

﴿18﴾ मजलिसे शूरा (के अराकीन) दा'वते इस्लामी के माई बाप हैं, इन पर बेजा तन्कीद करने के बजाए इन के साथ मिल कर दीन का ख़ूब काम करना चाहिये । (6 रबीउल आख़िर 1437)

﴿19﴾ कोई भी तन्जीमी जिम्मेदारी लेने से एहसास रहता है और उस एहसासे जिम्मेदारी से दीनी काम हो जाता है । (20 रबीउल आख़िर 1437, 30 जनवरी 2016)

﴿20﴾ हर इस्लामी भाई येह ज़ेहन बनाए कि जिम्मेदारी मिले तब भी दीनी काम करना है और जिम्मेदारी ले ली गई तब भी दीनी कामों में लगे रहना है, मक़सूद सिर्फ़ अल्लाह पाक की रिज़ा होनी चाहिये ।

(4 जुमादल ऊला 1437, 13 फ़रवरी 2016)

72 नेक आ 'माल के बारे में 6 नसीहतें

﴿1﴾ "72" नेक आ'माल अल्लाह पाक की याद का ज़रीआ हैं और अल्लाह पाक की याद में ही सुकून है । (27 जी क़ा'द शरीफ़ 1434, 28 जून 2022)

﴿2﴾ नेक आ'माल का हकीकी आमिल हज़ारों लाखों में पहचाना जाता है ।
(12 रबीउल अब्वल 1436, 3 जनवरी 2015)

﴿3﴾ अगर कोई सहीह मा'नों में मदनी इन्आमात (नेक आ'माल) पर अमल करे तो वोह नेक व परहेज गार बन जाएगा ।

(8 रबीउल आख़िर 1436, 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿4﴾ वोह दा'वते इस्लामी वाले जो नेक आ'माल पर अमल का ज़ेहन रखते हैं वोह कहकहा नहीं लगाते । क्यूं कि कहकहा लगाना सुन्नत नहीं, अलबत्ता कहकहा लगाना गुनाह भी नहीं । (1 रमज़ान शरीफ़ 1437, 7 जून 2016 रात)

﴿5﴾ नेक आ'माल का जिम्मेदार उस को बनाया जाए जो बा अमल, बा सलाहियत और इस शो'बे में रग़बत रखता हो ।

(30 रबीउल अब्वल 1438, 29 दिसम्बर 2016)

﴿6﴾ नेक आ'माल की जिम्मेदारी क़बूल करने से अमल में इज़ाफ़ा हो जाता है ।
(30 रबीउल अब्वल 1438, 29 दिसम्बर 2016)

मदनी काफिले के बारे में 4 नसीहतें

﴿1﴾ बड़े जिम्मेदारान मदनी काफिलों में सफ़र करें तो दीगर इस्लामी भाई जल्द तय्यार हो जाते हैं । तमाम जिम्मेदारान को पाबन्दी से मदनी काफिलों में सफ़र करना है ।
(7 जुमादल उला 1438, 4 फ़रवरी 2017)

﴿2﴾ हर माह 3 दिन के मदनी काफिले में ज़रूर सफ़र करना चाहिये कि इस से बैटरी चार्ज रहती है ।
(1 मुहर्रम शरीफ़ 1437, 15 अक्टूबर 2015)

﴿3﴾ किसी को मदनी काफिले या किसी कोर्स की निय्यत करवाएं तो तारीख़ ज़रूर लें, इस से भी इस्तिक़ामत हासिल होती है ।

(23 ज़ी का'द शरीफ़ 1437, 27 अगस्त 2016 बा'दे इशा)

﴿4﴾ 12 माह सफ़र करने वाले पर इस के असरात भी ज़ाहिर होने चाहिएं,

मसलन वोह सुन्नतों का पाबन्द बन जाए, नमाज़ दुरुस्त हो जाए, कुरआने करीम दुरुस्त पढ़ना आ जाए। (23 ज़ी का'द शरीफ़ 1437, 27 अगस्त 2016 बा'दे इशा)

हफ़तावार इज्तिमाअ के बारे में 8 नसीहतें

﴿1﴾ हफ़तावार इज्तिमाअ के बा'द मदनी हल्कों में शिर्कत और खाने वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर जल्द सो जाइये, ताकि नमाज़े तहज्जुद के लिये उठने में सहूलत हो। (23 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 10 अक्टूबर 2015)

﴿2﴾ हफ़तावार इज्तिमाअ (का पहला हिस्सा) गुरुबे आफ़ताब से 2 घन्टे तक ख़त्म हो जाना चाहिये ताकि इस्लामी भाई हल्कों और खाने से फ़ारिग़ हो कर जल्द सो जाएं और तहज्जुद में बेदार हों फिर मुनाजात और इश्राको चाशत के बा'द सलातो सलाम तक शिर्कत हो सके। (9 जुमादल उख़ा 1437, 19 मार्च 2016)

﴿3﴾ हफ़तावार इज्तिमाअ में जैली मुशावरत से अराकीने शूरा तक इश्राको चाशत पहली सफ़ में पढ़ने की कोशिश करें और फ़ैज़ाने मदीना के किसी ऑफ़िस में सोने के बजाए मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में सोने की तरकीब करें। (9 जुमादल उख़ा 1437, 19 मार्च 2016)

﴿4﴾ हफ़तावार इज्तिमाअ के शुरका कम हों तो माईक पर बयान न किया जाए। (9 जुमादल उख़ा 1437, 19 मार्च 2016)

﴿5﴾ हफ़तावार इज्तिमाअ दा'वते इस्लामी का पहला दीनी काम है।

(22 रबीउल आख़िर 1438, 20 जनवरी 2017)

﴿6﴾ हफ़तावार इज्तिमाअ में दीगर बरकतों के साथ साथ सोज़ो गुदाज़ (या'नी दिल का नर्म होना, ख़ौफ़े खुदा और इशके मुस्तफ़ा में रोना) भी नसीब होता है। (23 ज़िल हज़ शरीफ़ 1436, 10 अक्टूबर 2015)

﴿7﴾ हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ के बा'द इस्लामी भाइयों से मिला करें, यूंही न चले जाया करें, पुर तपाक तरीके (अच्छे अन्दाज़) से मिलने से वोह दीनी माहौल से वाबस्ता हो जाएंगे। (7 रबीउल आख़िर 1437, 17 जनवरी 2016)

﴿8﴾ हफ़्तावार इज्तिमाअ की पाबन्दी करें, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمُ** बा जमाअत नमाज़ के भी पाबन्द हो जाएंगे । (24 ज़ी का'द शरीफ़ 1443, 24 जून 2022)

कारकर्दगी के बारे में 3 नसीहतें

﴿1﴾ आपस में येह न कहा जाए कि “दो इस्लामी भाइयों की कारकर्दगी में “फुलां एक की कारकर्दगी अच्छी है ।” हां ! सिर्फ़ एक का तज़्किरा कर के कह सकते हैं कि फुलां की कारकर्दगी अच्छी है ।

(9 शव्वाल शरीफ़ 1436, 25 जूलाई 2015)

﴿2﴾ अक्ल भी तक्ज़ा करती है कि कारकर्दगी ली जाए । जिस काम की पूछगछ न हो तो वोह अव्वलन कमज़ोर और फिर आहिस्ता आहिस्ता ख़त्म हो जाता है ।

(9 शव्वाल शरीफ़ 1436, 25 जूलाई 2015)

﴿3﴾ जिस काम में पूछगछ न हो वोह पहले ठन्डा होता फिर ख़त्म हो जाता है । जहां पूछगछ का निज़ाम मज़बूत होता है वहां दीनी काम भी मज़बूत हो जाता है ।

(2 जुमादल उख़्रा 1437, 12 मार्च 2016)

मदनी मश्वरे के बारे में 5 नसीहतें

﴿1﴾ मदनी मश्वरे में शिर्कत करना तन्ज़ीमी और अख़्लाकी जिम्मेदारी है ।

(2 जुमादल उख़्रा 1437, 12 मार्च 2016)

﴿2﴾ “मश्वरा” उस से लें जो ख़ौफ़े खुदा वाला और अमीन (या'नी अमानत दार) हो ।

(16 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)

﴿3﴾ मश्वरा शरीअत और इख़लास पर मब्नी हो, किसी की दिल आज़ारी और तज़्लील न हो तो येह जन्नत में ले जाने वाला अमल है ।

(2 जुमादल उख़्रा 1437, 12 मार्च 2016)

﴿4﴾ मदनी मश्वरा करने से मा तहूत इस्लामी भाइयों की मदनी तरबियत भी होती है ।

(2 जुमादल उख़्रा 1437, 12 मार्च 2016)

﴿5﴾ मश्वरा, मश्वरा ही होता है, आर्डर नहीं। इस लिये कबूल न किया जाए तो नाराज नहीं होना चाहिये। (27 रजब शरीफ 1436, 16 मई 2015)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

मुरीदे गौसे आ 'जम के लिये ख़ुश ख़बरी

फ़रमाने गौसे पाक हज़रते शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ :
अल्लाह पाक ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि मेरे मुरीदों को जन्त
में दाख़िल फ़रमाएगा। (تجويد الاسرار، ص 193 لخصاً)

सुना "ला तख़फ़" तेरा फ़रमाने आली गुलामों की ढारस बंधी गौसे आ 'जम
मेरा मश्वरा है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मौलाना
मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ इस दौर की बहुत बड़ी
इल्मी व रूहानी शख़िसियत हैं, जिन की बरकत से हज़ारों गुमराह राहे रास्त पर
आ गए, लाखों मुसलमानों की ज़िन्दगियां बदल गईं और वोह राहे सुन्नत पर चल
पडे, ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के जज़्बे के तहत मेरा मदनी मश्वरा है कि आप भी
अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के ज़रीए सथियदी हुज़ूर गौसे पाक शैख़
अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के मुरीद हो जाइये और अगर आप पहले से
किसी पीर साहिब के मुरीद हैं तो बैअते बरकत हासिल करने के लिये तालिब हो
जाइये, اِنْ شَاءَ اللَّهُ दुन्या व आख़िरत में इस की ख़ूब बरकतें नसीब होंगी।

ब ज़रीअए WhatsApp मुरीद बनिये :

मुरीद होने या किसी और को मुरीद करवाने वाले के लिये उन का
नाम मअ़ वलदियत और उम्र लिख कर +91 9702626112 पर वोट्सअप
कीजिये। ❀ इस नम्बर पर कोल रीसीव नहीं होती, सिर्फ़ टेक्स्ट की सूरत में
येह तफ़सीलात भेजिये।

फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत

- (1) जो काम नरमी से होता है वोह गरमी से नहीं होता ।
(24 रबीउल आखिर 1436, 13 फ़रवरी 2015 ख़ूसूसी)
- (2) जीना है तो ऐसे जियो कि ज़माना मिसाल दे ।
(20 रमज़ान रीफ़ 1437, 25 जून 2016 बा'दे तरावीह)
- (3) माल के बजाए मौला की महब्बत मिल जाए तो क्या बात है ।
(13 रबीउल अब्वल 1437, 25 दिसम्बर 2015)
- (4) मां बाप की क़द्र कीजिये कि इन का ने'मल बदल (Alternate) कोई नहीं है ।
(7 जुमादल ऊला 1436)
- (5) त़लबा मुल्क का अहम "सरमाया" होते हैं और येह मुल्क की "तक्दीर" बदल सकते हैं ।
(10 रमज़ान शरीफ़ 1442 रात)
- (6) "सुख के साथी" बहुत मगर "दुख का साथी" कोई कोई होता है ।
(9 मुहर्रम शरीफ़ 1444, 8 अगस्त 2022)
- (7) दुखों पर "मिर्चे" रखने के बजाए "मरहम" रखिये ।
(1 सफ़र शरीफ़ 1444, 29 अगस्त 2022)
- (8) किसी को उसूल का पाबन्द बनाने का बेहतरीन तरीका येह है कि खुद उसूल के पाबन्द बन जाएं ।
(18 सफ़र शरीफ़ 1443, 26 सितम्बर 2021)
- (9) ज़ब्बा हो तो राहें हज़ार, ज़ब्बा न हो तो बहाने हज़ार ।
(27 ज़ी का'द शरीफ़ 1434, 28 जून 2022)